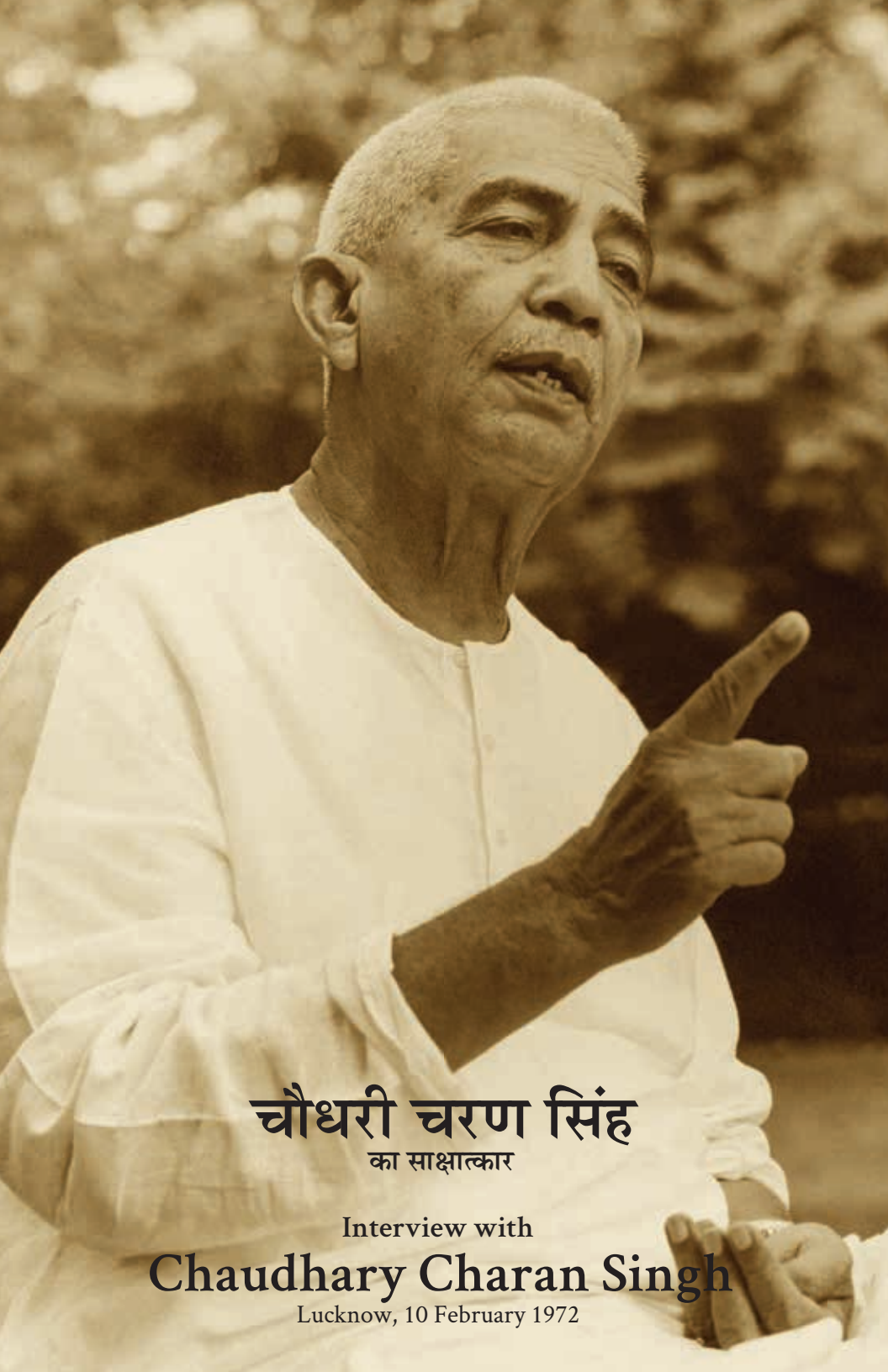

चौधरी चरण सिंह
का साक्षात्कार

Interview with
Chaudhary Charan Singh
Lucknow, 10 February 1972

चौधरी चरण सिंह
का साक्षात्कार १९७२

Interview in 1972 with
Chaudhary Charan Singh

By

Shyamlal Manchanda

Nehru Memorial Museum and Library, Delhi.

Copyright © Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi

Published 31 March 2023 by
Charan Singh Archives
www.charansingh.org
info@charansingh.org

Price ₹199

All rights reserved.
This publication may not be reproduced, distributed, or transmitted
without the prior permission of the publisher.
For permission, please write to info@charansingh.org

Translation by Sarbjeet Kaur
Published and edited by Harsh Singh Lohit
Typeset by Ram Das Lal
Printed at Saurabh Printers Pvt. Ltd., Greater NOIDA, India.

परिचय

यह ऐतिहासिक साक्षात्कार नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी, दिल्ली के दूरदर्शी मौखिक इतिहास कार्यक्रम की बदौलत उपलब्ध है। चौधरी चरण सिंह अपने प्रारंभिक जीवन और स्वामी दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी के चरित्र और कार्यक्रमों के स्थायी प्रभावों की यादें साझा करते हैं; १९३० से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ उनका लंबा और गहरा जुड़ाव रहा जब उन्होंने पहली बार मेरठ जिला कांग्रेस कमेटी का नेतृत्व किया; औपनिवेशिक ब्रिटेन से आजादी के लिए लंबे अहिंसक संघर्ष में उनकी भागीदारी, जिसमें उनकी कई अवधियों की कैद भी शामिल हैं; १९३० के दशक में गाजियाबाद में एक युवा वकील के रूप में उनका कार्यकाल; १९४७ में आजादी के तुरंत बाद कांग्रेसियों के चरित्र और नैतिकता के पतन पर उनके विचार; उत्तर प्रदेश में प्रशासन की बुरी स्थिति; सरकार में उनका अनुभव और जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल और गोविंद बल्लभ पंत सहित राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक नेताओं के बारे में उनकी यादें।

चरण सिंह अभिलेखागार इस साक्षात्कार का अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए सरबजीत कौर का आभारी है।

Introduction

This historical interview is available to us thanks to the far-sighted Oral History program of the Nehru Memorial Museum and Library (NMML), Delhi. Chaudhary Charan Singh shares memories of his early life and the abiding influences of the character and programs of Swami Dayanand Saraswati and Mahatma Gandhi; his long and deep association with the Indian National Congress since 1930 when he first headed the Meerut District Congress Committee; his participation in the long non-violent struggle for freedom from colonial Britain including his multiple periods of incarceration; his career as a young lawyer in Ghaziabad in the 1930s; his views on the downfall of the character and morality of Congressmen soon after Independence in 1947; the poor state of the administration in Uttar Pradesh; his experience in government and his recollections of national and regional political leaders including Jawaharlal Nehru, Vallabhbhai Patel and Govind Ballabh Pant.

The Charan Singh Archives is thankful to Sarabjeet Kaur for translating this interview from the original Hindi to English.

Harsh Singh Lohit
www.charansingh.org
info@charansingh.org

मीर सिंह और नेतर कौर, चरण सिंह के माता–पिता, १९५०
Mir Singh and Netar Kaur, parents of Charan Singh, 1950

Contents

चौधरी चरण सिंह का साक्षात्कार। लखनऊ १० फरवरी १९७२ 1

Photographs / चौधरी चरण सिंह के कुछ फोटोग्राफ १९६० से १९७२ 51

Interview with Chaudhary Charan Singh, Lucknow 10 February 1972 67

१
जीवन परिचय

चौधरी चरण सिंहः जन्म – गांव नूरपुर, जिला – गाजियाबाद, 23 दिसम्बर, 1902, शिक्षा – मेरठ और आगरा; कांग्रेस से सम्बद्ध 1929–67; वाइस चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट बोर्ड 1930–1935; सदस्य उत्तर प्रदेश विधान सभा 1937 – 1939 और 1946 – 77; संसदीय सचिव उत्तर प्रदेश 1946–51; विपक्ष के नेता उत्तर प्रदेश विधान सभा 1971–77; संस्थापक नेता भारतीय क्रांतिदल 1967, भारतीय लोकदल 1974, जनता पार्टी 1977, और लोकदल सितम्बर 1979; मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार 1951–67, सत्रह महीने की अवधि को छोड़कर मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश अप्रैल 1967, फरवरी 1968 और फरवरी 1970 से अक्टूबर 1970; केन्द्रीय गृह मंत्री मार्च 1977 से जून 1978; उप–प्रधान मंत्री और केन्द्रीय वित्त मंत्री जनवरी 1979 से जुलाई 1979; प्रधान मंत्री जुलाई 1979 से जनवरी 1980 तक। प्रकाशनः एबोलिशन ऑफ जमींदारी, कोआपरेटिव फार्मिंग एक्सरेड जिसका इंडियाज पावर्टी एंड इट्स सोल्यूशन के नाम से संशोधित रूप में प्रकाशन किया गया है, एग्रेरियन रेवोल्यूशन इन उत्तर प्रदेश, इकोनॉमिक नाइटमेअर ऑफ इंडियाः इट्स कॉज एण्ड क्योर, इंडिया'ज इकोनॉमिक पालिसीः दि गांधियन ब्ल्यूप्रिंट, इत्यादि; मृत्यु 29 मई 1987।

पतिलेख के मुख्य विषय

प्रारम्भिक जीवन तथा आर्य समाज का प्रभाव; गाजियाबाद प्रवास के दौरान गतिविधियां; त्यागी जाति का राजनीति में प्रभाव; सन् 1937 और 1946 के चुनाव; भारत छोड़ो आन्दोलन; स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस की स्थिति; सन् 1937 की कांग्रेस सरकार की नीति पर एक टिप्पणी; "लैण्ड सिलिंग" यू०पी० शासन तंत्र तथा मंत्री; आचार्य नरेन्द्र देव, रफी अहमद किदवई, सरदार पटेल, गोविन्द बल्लभ पन्त तथा अन्य नेताओं से सम्बंधित संस्मरण।

नेहरू संग्रहालय तथा पुस्तकालय
मौखिक इतिहास साक्षात्कार

चौधरी चरण सिंह

लखनऊ १० फरवरी १९७२

श्री श्यामलाल मनचंदा द्वारा

श्यामलाल मनचन्दाः चौधरी साहब, क्या आप यह बतायेंगे कि आपकी शुरू की जिन्दगी में आप पर कौन–कौन से राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक प्रभाव पड़े?

चरण सिंहः जहां तक सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र की बात है, उस समय के सामाजिक जीवन आर आर्यसमाज की शिक्षाओं का मेरे ऊपर बहत प्रभाव पड़ा। जहां तक राजनीतिक क्षेत्र की बात है तो सबसे पहले देश की दुर्दशा या दासता की तरफ मेरा ध्यान गया। उस जमाने में, यानी 1918–19 में, मैंने मैथिलीशरण गुप्त की लिखी हुई पुस्तक "भारत भारती" पढ़ी। उससे मेरी पीढ़ी के बहुत से लोगों में देशभक्ति की भावना पैदा हुई। जब हम दसवीं कक्षा में पढ़ते थे तब गांधी जी का आन्दोलन शुरू हो गया। 30 मार्च 1919 को दिल्ली में गोली चली। 13 अप्रैल को जलियांवाला बाग की घटना भी हुई, बस इन्हीं राजनीतिक घटनाओं के असरात[1] मेरे जीवन पर हुए।

मनचन्दाः स्वदेशी कपड़ा पहनने का स्वामी दयानन्द के जमाने से ही प्रचार किया जा रहा था, गांधी जी तो बाद में आये और उन्होंने स्वदेशी का प्रचार किया, क्या इसका असर गांधी जी के आने के पहले से था?

चरण सिंहः अपने देश की बनी चीजें इस्तमाल होनी चाहिए, यह तो स्वामी जी की शिक्षाओं में था ही लेकिन बाकायदा एक 'मास प्रोग्राम' के रूप में इसे गांधी जी ने शुरू किया। स्वामी जी को तो उसका अवसर नहीं मिला। जहां तक इस मामले का ताल्लुक है, मेरे ऊपर तो दोनों का असर साथ–साथ ही हुआ। उस समय मेरी उम्र पन्द्रह – सोलह साल की थी।

मनचन्दाः जैसा कि आप जानते हैं कि पश्चिमी यू. पी., पंजाब और हरियाणा में आर्यसमाज का काफी प्रभाव था, तो क्या आर्यसमाज के धार्मिक प्रभाव के अलावा उसके राष्ट्रवादी रूप का भी आप पर प्रभाव पड़ा?

चरण सिंहः आर्यसमाजी तो राष्ट्रवादी होते ही थे, क्योंकि आर्यसमाज हमें पुराने जमाने की 'अचीवमैन्ट्स' पर अभिमान करना सिखाता है। राष्ट्रवाद का आधार तो आर्यसमाज ने दिया, इसमें कोई शक नहीं। वैसे मेरे माता–पिता तो अशिक्षित किसान थे और आर्यसमाजी भी नहीं थे, लेकिन आर्यसमाज का प्रभाव तो सारे माहौल में था। मसलन मुझे याद है कि उस वक्त एक छोटी सी भजनों की पुस्तक थी, जिसमें शराब और मांस के खिलाफ प्रचार था, तो उसका भी मुझ पर असर पड़ा। हमारे एक 'अंकल' फौज में थे, वह रिटायर हो गये थे, मैंने बचपन में उनके पास 'सत्यार्थ

प्रकाश' देखी। उसको मैं बहुत तो नहीं समझता था, लेकिन इस तरह से आर्यसमाज का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष असर तो पड़ता ही रहा।

मनचन्दा: आर्यसमाज का आपके जीवन में क्या योगदान रहा?

चरण सिंह: मैं जब गाजियाबाद में वकालत करता था, तो कांग्रेस के साथ आर्यसमाज का भी कार्यकर्ता था। मैं 1930 से लेकर 1939 तक आर्यसमाज का आफिस–बेअरर रहा।

मनचन्दा: इस दौरान आपने क्या–क्या कार्य किये?

चरण सिंह: आर्यसमाज के और स्वामीजी के जो विचार थे, वे ही मेरे विचार हो गये। गाजियाबाद में मैंने वकालत की। गाजियाबाद के आर्यसमाज में मैं बराबर जनरल सेक्रेटरी और अध्यक्ष रहा। वहां जलसे वगैरह कराता रहा। मैं आर्यसमाज का सक्रिय कार्यकर्ता नहीं था, मैं तो वकालत करता था और साथ–साथ कांग्रेस का भी काम करता था। जब गांधी जी ने 1932 में कम्युनल अवार्ड, जो हरिजनों को हिन्दुओं से अलहदा कर रहा था, के खिलाफ अनशन किया तो हमने वहाँ सब हरिजनों का सहभोज कराया और उन्हें दूसरे लोगों के साथ कुओं पर चढ़ाया। यह एक ऐसी चीज थी जिसे आर्यसमाज का काम कह लीजिए या कांग्रेस का। तो इन दोनों के सामाजिक कार्यक्रम में कोई अन्तर नहीं था।

मनचन्दा: चौधरी साहब, उस वक्त दो प्रोग्राम चल रहे थे, आर्यसमाज की तरफ से शुद्धि प्रोग्राम था, जो कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली में शुरू किया था और एक मुलसमानों का कार्यक्रम था, जिसे तबलीग कहते हैं, तो क्या उसका भी असर हुआ?

चरण सिंह: यह तो बहुत पहले की बात है। उन दिनों मैं आगरा कालेज में पढ़ता था। सन् 1919 से लेकर 1925 तक यह सब हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी का तो 23 दिसम्बर 1926 में कत्ल हो गया था। उन्होंने जो आन्दोलन चलाया था, वह 1922 में चलाया था और आगरा से शुरू किया था। वहाँ मलकाना राजपूत थे। सबसे पहले स्वामीजी ने वहां शुद्धि की। हमारा इन चीजों से कोई वास्ता नहीं था।

मनचन्दा: आपने बताया कि 30 मार्च 1919 को दिल्ली में गोली चली। जब गांधी जी पहुंचने वाले थे, तो 9 अप्रैल को उन्हें पलवल में पकड़ लिया। उस वक्त आप विद्यार्थी थे, उस जमाने में क्योंकि आप नौजवान थे, तो आप पर इसका क्या असर हुआ?

चरण सिंहः हम समझते थे कि महात्मा जी बहुत अच्छा कर रहे हैं और हमें भी कांग्रेस का सदस्य हो जाना चाहिए लेकिन हम सदस्य के रूप में कोई सक्रिय काम नहीं कर सकते थे।

मनचन्दाः आपने किस साल से कांग्रेस में सक्रिय काम करना शुरू किया?

चरण सिंहः मैं 1928 से 1939 तक गाजियाबाद में रहा। मैंने सिविल साइड में वकालत की। उसके एक साल बाद ही 1929 में हमने गाजियाबाद में कांग्रेस कमेटी कायम की।

मनचन्दाः जलियांवाला बाग की घटना 13 अप्रैल 1919 को हुई, लेकिन यह कहा जाता है कि उस खबर को हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में पहुंचने से रोका गया था, आपको यह खबर किस समय मिली?

चरण सिंहः अब इतना मुझे याद नहीं, दो–चार दिन बाद ही मिली होगी।

मनचन्दाः पर यह कहा जाता है कि चार–पांच महीने लग गये थे, लोगों को वह खबर नहीं मिली थी

चरण सिंहः नहीं–नहीं ऐसा नहीं था। यह गलत है, यह खबर क्या छिप सकती थी? मैं उस वक्त **दसवीं का इम्तहान** दे रहा था, जब जलियांवाला बाग में गोली चली थी। उसके बाद मैं आगरा कॉलेज में पढ़ने चला गया। आन्दोलन चलता रहा। आगरा कॉलेज से हमने पढ़ाई नहीं छोड़ी।

मनचन्दाः सन् 1930 के सत्याग्रह में आपने भाग लिया, तो क्या उसके बारे में आप कुछ बतायेंगे?

चरण सिंहः महात्मा जी ने जब दांडी यात्रा की तो हमारे मेरठ के जो प्रमुख कांग्रेसी कार्यकर्ता थे, वह नमक बनाने के लिए गाजियाबाद आये थे। गाजियाबाद के पास एक इलाका है, लोनी। कहा यह जाता है कि पहले वहां लवण बनता था, इस वजह से उसका नाम लोनी हो गया। वहां की जमीन ही ऐसी है। उन दिनों मैं गाजियाबाद में वकालत करता था, साथ ही गाजियाबाद की शहर कांग्रेस कमेटी का एक आफिस–बेअरर था। उस वक्त हम लोग भी वहां गये, इसलिए गिरफ्तार हो गये और हमें मेरठ जेल में डाल दिया गया।

मनचन्दाः पहली दफा आप 1937 में चुनाव में खड़े हुए, तो आप यह बतायेंगे कि उस वक्त कौन सी ऐसी "पॉलिटीकल फोर्सेस" थीं, जो यू.पी. की राजनीति में प्रवेश कर चुकी थीं और उनका क्या असर था; खासतौर से आप अपने चुनाव के बारे में कुछ बतायेंगे?

चरण सिंहः जमींदारों की एक पार्टी थी नेशनल एग्रीकल्चरिस्ट पार्टी, उसने ही कांग्रेस से मुकाबला किया था, बाकी कोई पार्टी नहीं थी। और मै ठीक तरह से नहीं कह सकता। मेरे खिलाफ जो उम्मीदवार खड़े हुए थे, वह उसी पार्टी की तरफ से खड़े हुए थे। वह भी एकदम जल्दबाजी में संगठित की गई थी, बाकी उनका कोई संगठन मेरठ में था या नहीं था, मुझे नहीं मालूम। लेकिन इसका कोई खास विरोध नहीं हो पाया। मुसलिम लीग का जो कुछ रहा होगा, पूर्वी जिलों में रहा होगा। मेरे ख्याल से मुसलिम लीग इस चुनाव में "प्रोमिनेंट" नहीं थी, उसके बाद ही हुई।

मनचन्दाः मैं आपको फिर पीछे ले जाता हूँ। जिला राजनीति में जाति और धर्म वगैरह की बड़ी प्रमुख भूमिका होती है। आप मेरठ के रहने वाले मेरठ के रहने वाले हैं, कहा जाता है कि वहां एक जाति है, त्यागी। वहां से जो नेता थे, रघुवीर सिंह त्यागी, उनके बारे में आपके क्या विचार हैं?

चरण सिंहः त्यागी जाति के लोग हमारे यहां बहुत थोड़े हैं। "एग्रीकल्चरल कम्युनिटीज" मे करीब–करीब सबसे छोटी है यह कम्युनिटी। यह कहना कि लीडरशिप पहले त्यागियों की थी और मेरी वजह से जाटा की हो गई, ऐसी बात नहीं थी। रघुवीर सिंह त्यागी बुजुर्ग थे और हमारे यहां के सबसे बड़े जमींदार वही थे। बल्कि यहां तो उनकी जमींदारी कम थी, बिजनौर में उनके बहुत गांव थे। वह कांग्रेस में थे पर क्योंकि त्यागी थे, तो यह कहा जाने लगा कि त्यागी लोगों की लीडरशिप खत्म हो गई, लेकिन ऐसी कोई बात नहीं थी। वह जो कुछ थे अपने हक से थे, त्यागी होने की वजह से नहीं थे। हिन्दू आमतौर से संकीर्ण विचारों के होते हैं, वह भी उससे ऊपर नहीं थे, लेकिन यहां के सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक जीवन में त्यागियों का एक त्यागी के रूप में "प्रिडामिनेन्स" कभी रहा हो, ऐसा कुछ नहीं था। मैंने किसी को नहीं हटाया।

मैं एक मामूली किसान के घर पैदा हुआ था। मैंने "लॉ" किया और फिर "प्रैक्टिस" की, उससे आदमी को काफी अनुभव हो जाता है, दिमाग की ट्रेनिंग भी हो जाती है क्योंकि मैं कांग्रस का काम करने वाला था, अतः जेल भी गया। तो जब "मास पॉलिटिक्स" शुरू हुई तो लीडरशिप "मास वर्कर" के पास ही जानी थी। त्यागी साहब "मास वर्कर" तो नहीं थे, वह तो जमींदार थे। जमींदार होने की वजह से "एरीस्टोक्रेटिक सर्कल" में उनकी इज्जत थी।

मनचन्दाः इसका मतलब यह हुआ कि जब गांधी जी राष्ट्रीय आन्दोलन में आये और राष्ट्रीय आन्दोलन जनता तक पहुंचा, तब त्यागी जी की लीडरशिप अपने आप खत्म हो गई?

चरण सिंहः बस यही हुआ।

मनचन्दाः क्योंकि पहले जो सिलसिला बना हुआ था कि नेता एक अमीर हो, जमींदार हो, उसके पीछे रैयत हो, वह सिलसिला खत्म हो गया?

चरण सिंहः हॉ, इसमें कोई बिरादरी की बात नहीं थी। महात्मा जी के राष्ट्रवाद की अपील तो हर तबके को थी। रियासतों और जमींदारों को भी थी। लेकिन जैसे ही धीरे–धीरे जन राजनीति होती चली गई तो वे धीरे–धीरे अपने आप हटते चले गये। मैं आपको सच्चाई बता दूं कि मेरे खिलाफ हमेशा यह इल्जाम रहता है और सब लोग बात करते वक्त कहते हैं कि चरण सिंह अच्छे आदमी हैं, लोकप्रिय भी हैं, लेकिन जाटों से पक्षपात करते हैं, "दिस इज ऍब्सर्ड"। यह हिन्दू समाज की बदकिस्मती हैं कि अगर आप किसी के खिलाफ कुछ नहीं कह सकते हो, तो सम्प्रदायवादी होने का इल्जाम लगा दो और हर कोई उस पर विश्वास भी कर लेगा।

मनचन्दाः सन् 1946 में भी आपने चुनाव लड़ा था, उस वक्त तक आप काफी पुराने कांग्रेसी हो चुके थे, तो क्या उस वक्त के कुछ वाकियात आप बतायेंगे?

चरण सिंहः उस वक्त के वाकियात क्या बताऊं! मैं अपने चुनाव क्षेत्र में तो गया नहीं। हमारे यहां उस वक्त खुदाई खिदमतगार आये हुए थे। हमने कांग्रेस की तरफ से एक मुसलमान, चौधरी लुत्फ अली खां को खड़ा किया था। वह अच्छे कांग्रेसी थे और मुसलिम लीग से उनकी लड़ाई थी। प्रथम चुनाव प्रणाली थी, मुसलिम चुनाव क्षेत्र में लोगों को समझाने के लिए खुदाई खिदमतगारों का एक जत्था आया हुआ था। मैं तो उनको मुसलिम हलकों में घुमाता रहा। जहां तक हिन्दू उम्मीदवारों का सवाल था, तो कहीं आने जाने की जरूरत ही नहीं थी। मैं पुराना हो ही चुका था और 1942 में मैंने काफी "रिस्क" लिया था। वैसे कांग्रेस की तरफ से जो भी खड़ा होता था, उसके हारने का सवाल ही नहीं था। फिर मैं तो कुछ सक्रिय काम कर चुका था, वकालत करता था। मेरे जानने वालों की भी और आम लोगों की भी राय मेरे बारे में हर तरीके से अच्छी थी। मेरठ में कांग्रेस की बागडोर मेरे ही हाथ में थी, जिसको हमने खड़ा कर दिया, वही जीतकर आ गया।

मनचन्दाः चौधरी साहब, क्या यह कहना ठीक है कि कांग्रेस और लीग में 1937 में कुछ "अंडरस्टेंडिंग" थी, आपको उसके बारे में कुछ ज्ञान है?

चरण सिंहः मुझे "वेग इंप्रेशन" है कि जिन्ना साहब की और जवाहरलाल जी की बात व्यक्तिगत स्तर पर हो गई थी, इसलिए मुसलिम लीग बढ़ती चली गई। जिन्ना से उस वक्त फैसला हो सकता था लेकिन वह टूट गया। धीरे–धीरे बात बढ़ती चली गई। जिन्ना 1920 से पहले एक प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ता थे, लेकिन जब गांधीजी ने खिलाफत आन्दोलन को एक राजनीतिक रूप दिया और कांग्रेस का एक प्रोग्राम माना, तो जिन्ना ने इसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि इससे मुसलिम सम्प्रदाय के लोगों में साम्प्रदायिकता की भावना बढ़ेगी। इसी बात पर उन्होंने 1920 में कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था[1]। लेकिन जैसा विधि को मन्जूर था, पाकिस्तान बना और वह पाकिस्तान के जन्मदाता कहलाये। तो नेहरू जी आदमी को "हैण्डिल" करना नहीं जानते थे, जैसे सरदार पटेल और गांधी जी जानते थे। बस धीरे–धीरे दरार बढ़ती चली गई। ये हमारा एक "जनरल इम्प्रेशन" था। परन्तु अन्दर की बातों का कुछ मालूम नहीं।

मनचन्दाः "भारत छोड़ो आन्दोलन" के बारे में आप कुछ बताइये; क्या आपने उसमें हिस्सा लिया?

चरण सिंहः हाँ, मैंने उसमें हिस्सा लिया। 9 अगस्त को आन्दोलन शुरू हुआ। गालिबन 2 अगस्त को हमने नेहरू जी को अपने यहां बुलाया हुआ था। मैं डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमेटी का प्रेसीडेंट था।

मनचन्दाः मेरठ में?

चरण सिंहः हॉ, मेरठ में शहर में उनकी मीटिंग हुई, देहात में भी एक–दो मीटिंगें हुई। मैंने उनसे पूछा कि बतलाइए कि क्या होने वाला है और यह आन्दोलन कैसे चलेगा। वह हमें कुछ नही बता सके, उन्होंने कोई सलाह नहीं दी। 8 अगस्त 1942 के दिन बम्बई में मीटिंग हुई। हमें लग रहा था कि आन्दोलन चलने वाला है, तो हमने कुछ साथियों से कह दिया था कि भई, फलां–फलां जगह आप लोग जाओ और फलां–फलां को यह जिम्मेदारी होगी। मैं भी गाजियाबाद चला गया। वहीं हमें मालूम हो गया कि नेता गिरफ्तार हो गये हैं। फिर तो मैं खुलेआम सात–आठ दिन तक मीटिंग "एड्रेस" करता रहा। फिर हम चोरी–छिपे मीटिंगें करते रहे, क्योंकि पुलिस हमारे पीछे थी और कम से कम दो तीन बार ऐसा हुआ कि पुलिस मौजूद तो थी लेकिन लोगों की प्रतिक्रिया की वजह से मुझे गिरफ्तार करने

---

[1] जिन्ना नागपुर कांग्रेस 1920 में थे। उसके बाद उन्होंने कांग्रेस छोड़ी, पर खिलाफत के मुद्दे पर नहीं।

की हिम्मत नहीं कर सकी। यह जरूर था कि मैं जहां जाता रहा, जिनके यहां खाना खाता रहा, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जिसके यहां अहाते में मीटिंग हो गई, भाषण हुआ, तो चाहे वह मुखिया हो या नम्बरदार, उसका लाइसेंस जब्त हा जाता था। बाद में तो सुनते हैं, मुझे ठीक मालूम नहीं है, कि "शूट एट साइट" का ऑर्डर हो गया था। फिर हमें बहुत लोगों ने सलाह दी कि आप स्वयं गिरफ्तार हो जाएं। करीब ढाई महीने बाद मैं अपने मकान पर पहुंच गया और पुलिस ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। उन दिनो मैंने एक प्रोग्राम अपने लोगों में अपनी तरफ से तकसीम करा दिया था। ऊपर से तो कुछ आया ही नहीं था, मेरे सब साथियों को जिले भर में यह लगा कि ये ए.आई.सी.सी. का प्रोग्राम है, क्योंकि इत्तिफाक से इसमें और उसमें बड़ी समानता थी, और तो कोई खास बात नहीं है। जिले में काफी काम हुआ।

मनचन्दाः आपने कहा कि आपने अपनी तरफ से एक प्रोग्राम पेश किया; वह प्रोग्राम क्या था, उसके बारे में कुछ विस्तार से बतायेंगे?

चरण सिंहः अब तो याद नहीं रहा।

मनचन्दाः नहीं, खासतौर से हिंसा या अहिंसा के बारे में....?

चरण सिंहः हमारे कार्यक्रम में हिंसा नहीं थी, लेकिन परिस्थितियां ऐसी हुई जो हिंसा की तरफ ले गई। वह हिंसा सरकार की तरफ से ही शुरू हुई। मैंने उस समय लोगों को अपनी तरफ से एक प्रोग्राम दिया, अब मुझे वह याद तो नहीं है, लेकिन उसे मेरे साथियों ने और आम लोगों ने बहुत पसंद किया। जब हम जेल पहुंचे तो जेल में हमारे साथी कहने लगे कि आखिर ए.आई.सी.सी. ने एक बड़ा अच्छा प्रोग्राम भेजा। तब मैंने उन्हें बताया कि वह मेरा काम था, न कि ए.आई.सी.सी. का।

मनचन्दाः यह कहा जाता है कि महात्मा जी ने 1922 में जब चौरी–चोरा की घटना हुई, तो असहयोग आन्दोलन हिंसा की वजह से स्थगित कर दिया था लेकिन 1942 के आन्दोलन में ऐसी बहुत सी वारदातें हुई, जिनमें हिंसात्मक तरीके अपनाये गये, तो इनके बारे में आपका क्या ख्याल है?

चरण सिंहः मैं तो यह समझता हूँ कि गांधी जी से पूछा जाता तो वे यही कहते कि यह ठीक नहीं हुआ लेकिन साथ ही मेरा यह भी विचार है कि महात्मा जी यह चाहते थे कि कोई उनसे कुछ न पूछे, जो कोई जैसा चाहे– वैसा करे। उनके दृष्टिकोण में एक तरह से यह बदलाव मुझे लगता था। व्यक्तिगत सत्याग्रह तक तो सब ठीक था लेकिन बाद में तो

एक तरीके से उनके बहुत से साथियों से उनका मतभेद हो गया। महात्मा जी तो उस वक्त भी पूर्णतः अहिंसात्मक आन्दोलन चाहते रहे होंगे, उसी को पसंद करते रहे होंगे लेकिन जब गिरफ्तार हो गये, तो उनके लिए मार्गदर्शन का सवाल ही नहीं रह गया। अगर गांधी जी बाहर होते तो शायद इसका विरोध करते। उनके पास इत्तिला पहुंचती ही होगी, उन्होंने आँखें मूंद लीं। उन्होंने सोचा कि मुझ पर ता कोई "मॉरल आब्लीगेशन" नहीं है। "आई एम नॉट ए फ्री मैन"। ऐसा मेरा विचार है श्बट दैट इज ए मिअर रीडिंग, ए फीलिंग...।

मनचन्दाः चौधरी साहब, यह कहा जाता है कि बलिया डिस्ट्रिक्ट में काफी हद तक 'भारत छोड़ो आन्दोलन' सफल रहा। वहां पर एक तरह से कांग्रेस ने हुकूमत कायम कर ली थी, उसके बारे में कुछ बताइए।

चरण सिंहः उसमें तो जगदीश्वर निगम, आई.सी.एस. थे, वह वहां डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट थे। वह बड़े देशभक्त आदमी थे। उन दिनों डिग्री का ही जरा सा फर्क था। हमारे यहां एन.बी. बनर्जी, जो चीफ सेक्रेटरी हुए, 1942 में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट थे। वह उमेश चन्द्र बनर्जी, जो कांग्रेस अध्यक्ष रह चुके थे, के पौत्र थे।

मनचन्दाः कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष?

चरण सिंहः हॉ, लोग उनको बहुत "डाईहार्ड" आदमी समझते थे, लेकिन वह भी एक देशभक्त आदमी थे। मैं कांग्रेस का प्रतिनिधि था और वह ब्रिटिश राज के प्रतिनिधि थे। निगम भी देशभक्त अफसर थे। यह नहीं कहा जा सकता कि कांग्रेस ने वहां एक तरह से अपनी हुकूमत कायम कर ली थी– "सिंपली फोर्सेस ऑफ लॉ एण्ड ऑर्डर ओवरव्हेल्म्ड फॉर समटाईम"।

मनचन्दाः सन् 1942 के आन्दोलन में एक वर्ग ऐसा निकला, जिसे हम "ऑगस्टर्स" के नाम से याद करते हैं, उसमें बहुत से नेताओं ने काम किया, उनसे आपका कभी कोई सम्बंध रहा हो?

चरण सिंहः नहीं, उस वक्त किसी से मेरा सम्बंध नहीं था, हम तो अकेले स्वतंत्र रूप से अपने जिले में काम कर रहे थे।

मनचन्दाः वहां कोई "अण्डर ग्राउण्ड" व्यक्ति पनाह लेने आया था?

चरण सिंहः मेरे पास एक ही व्यक्ति पनाह लेने आया था, अभी वह व्यक्ति जिन्दा है। जगन्नाथ सिंह नाम का जौनपुर का एक कांग्रेसी कार्यकर्ता हमारे यहां आ पहुंचा। हमारे एक दोस्त वीरभद्र सिंह थे। वे बुलंदशहर

डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे, अब वे नहीं रहे, किसी ने उसे उनके पास भेज दिया और उन्होंने उसको मेरे पास भेज दिया। वह मेरे घर पर रहा। उसने अपना नाम प्रताप सिंह रख लिया। हमने ही कहा कि आपका नाम प्रताप सिंह रहेगा। मेरे परिवार के सदस्य के तौर पर वह मेरे पास रहा। मेरे यहां पुलिस वाले भी आ जाते थे। ठाकुर लखन सिहसी. आई.डी. में डी. एस. पी. थे, वह बहुत ही देशभक्त एवं भले आदमी थे। वह मिलने के लिए आ जाते थे। वह एक अफसर थे और मैं एक कांग्रेसी कार्यकर्ता था। लेकिन फिर भी हमने उस व्यक्ति को पनाह दी, फिर उसको नौकरी दिलवाई। उसके खिलाफ हत्या का और डकैती का चार्ज भी था और उसके वारंट भी थे

मनचन्दाः चौधरी साहब, जब आप जेल में थे, तब जेल में आपके साथ कैसा व्यवहार किया गया?

चरण सिंहः अच्छा व्यवहार हुआ। मुझे तो "ए" या "बी" क्लास मिलती थी। "ए" या "बी" क्लास हो तो फिर दुर्व्यवहार का सवाल नहीं रहता है लेकिन हमारे "सी" क्लास के कैदियों के साथ व्यवहार जेलर के दृष्टिकोण पर बहुत कुछ निर्भर करता था। जैसे हमारे यहां मेरठ में 1942 में जो जेलर था, वह बिल्कुल मुस्लिम लीगी दृष्टिकोण का था। वह कैदियों के साथ सख्त व्यवहार करता था। मैं उनकी पैरवी भी करता था। लेकिन मैं अलग बैरक में आर वे अलग बैरक में होते थे। कभी–कभी हमारे "सी" क्लास कैदी भी कुछ चीजें बाहर से "स्मगल" कर लेते थे। यह नियम के खिलाफ था, तो इस पर जेलर जरा सख्त व्यवहार करता था। कुल मिलाकर मैं समझता हूँ कि हमारी जेल में कोई अन्याय नहीं हुआ। बाद में मैं बरेली सेन्ट्रल जेल में रहा। वहां भी मुझे कोई खास शिकायत नहीं थी।

मनचन्दाः अभी आपने दो बार मिसालें दीं कि जो हिन्दुस्तानी ब्रिटिश हुकूमत के साथ काम करते थे जैसे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, सी.आई.डी. इंस्पेक्टर आदि, ये लोग भी अंदरूनी तौर पर काफी हद तक देशभक्त थे, लेकिन उनको बाहर नौकरी के लिए दिखावा करना पड़ता था। आपका "जनरल इंप्रेशन" क्या है कि बहुत से लोग ऐसे थे या कुछ चुनिंदा लोग ऐसे थे?

चरण सिंहः मैं समझता हूँ कि बहुसंख्या ऐसे लोगों की थी, जो हमदर्दी रखते थे।

मनचन्दाः यह हमदर्दी 1942 में थी या 1931 में भी थी, क्योंकि जैसे–जैसे वक्त गुजरता गया, तो उन्होंने यह समझना शुरू कर दिया हो कि हो सकता है आजादी मिल जाए?

चरण सिंहः नहीं, शुरू से थी। बात यह है कि हमसे तो बहुत से अफसर इस तरह की बातों में खुल जाते थे, लेकिन मामूली आदमी से नहीं खुलते थे। जैसे मैं 1930 में गाजियाबाद से गिरफ्तार हुआ और मेरठ में मुझ पर केस चला। मुझे याद है कि गाजियाबाद में जानकी प्रसाद नाम के कोई तहसीलदार थे। वह हमारे बड़े हमदर्द थे। श्याम सिंह पाठक जिन्होंने हमें सजा दी, वह मेरठ में एस. डी. एम. थे। वह पो.सी.एस. अफसर थे। मेरे पिता थे तो एक अनपढ़ किसान, लेकिन अपने क्षेत्र के मुख्य लोगों में माने जाते थे। मेरे केस की पैरवी में पिताजी भी गये, तो उनको बुलाकर श्याम सिंह जी ने समझाया कि अपने लड़के को समझाओ। शायद वह समझते होंगे कि मेरा यह सब करना ठीक नहीं है, उन्हें लगा कि यह अपना कॅरिअर बिगाड़ रहा है, एल.एल.बी. है, इसे "प्रैक्टिस" करनी चाहिए। लेकिन उनकी इस सलाह के पीछे देशभक्ति की भावना थी।

मनचन्दाः सन् 1947 में जब हिन्दुस्तान को आजादी मिली तो मुस्लिम लीग कुदरती तौर पर यू.पी. से खत्म हो गई। सन् 1948 में आचार्य नरेन्द्र देव अपने समाजवादी दल को लेकर कांग्रेस से अलहदा हो गये, तो ऐसी कौन सी चुनौतियां रह गईं थीं, जिनका यू.पी. में कांग्रेस को सामना करना पड़ा?

चरण सिंहः हमारी अपनी संस्था की कमजोरी के सिवाए कोई संगठित चुनौतियां नहीं रह गई थीं। जो कुछ भी विरोध था, चुनौतियां थीं, वे हमारी गलतियों की वजह से थीं। हम अपनी जनता की आशाओ की कसौटी पर पूरी तरह खरे नहीं उतरे, इसलिए उन्होंने चुनाव में हमारा विरोध किया।

मनचन्दाः चुनौतियों से मेरा मतलब यह है कि कांग्रेस ने जो प्रस्ताव आजादी से पहले पास किये थे, उनका मुद्दा यह था कि कांग्रेस एक "वैलफेयर स्टेट" के लिए काम करेगी, तो क्या आप लोग उसको कार्यान्वित करने के लिए एकजुट होकर लग गये या कांग्रेस में आपसी विरोध शुरू हो गया?

चरण सिंहः आप ठीक कह रहे हैं कि आपसी विरोध शुरू हो गया। अफसोस की बात यह थी कि समस्याओं का अध्ययन कोई नहीं करता था, न कोई करता है। जब अंग्रेजों के जमाने में राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा था तो उसका ज्यादा सम्बंध भावनाओं से था, दिल से था, दिमाग से नहीं था — "नेशनलिज्म मेकस अपील टू दी हार्ट"। उस समय तो यह भावना थी कि अंग्रेजों के खिलाफ विरोध फैलाओ। लोगों को समझाओ कि अग्रेजों का मुकाबला करना है, उन्हें बलिदान देने के लिए तैयार करो, जेल जाओ लेकिन वास्तव में समस्याएं क्या हैं, उनका "डायग्नोसिस" क्या

है, उनके समाधान क्या हैं, कांग्रेस के बहुत कम लोग इस पर ध्यान देते थ। उस समय तो कांग्रेस का काम करना, जेल वगैरह जाना, फिर अपनी गृहस्थी को चलाना – ये सब काम साथ साथ होते थे। जो कुछ भी हमारे आर्थिक या सामाजिक प्रोग्राम थे, उसमें हमारी खुशकिस्मती थी कि गांधी जो के "नवजीवन" और "यंग इंडिया" के जरिए हमें "मैंटल फूड" मिलता रहता था। एक कारण और भी था कि लोगों ने कोई खास स्वतंत्र अध्ययन करने की जरूरत नहीं समझी। वही जिले के नेता हो गये, जो थोड़ी सी अक्ल रखते थे, जिनका गांव में या शहर में थोड़ा असर था और जिनके ऊपर अपनी गृहस्थी की जिम्मेदारियां कम थीं। इस तरह से ऐसे लोग आगे बढ़ गये। लेकिन जब स्वराज आया, तब तो फिर सारी समस्याओं को हल करने की जिम्मेदारी हमारी हो गई और तब महसूस हुआ कि "वी आर नॉट वैल इक्विप्ड"।

मनचन्दाः उस वक्त शायद प्रशासनिक अनुभव भी नही था?

चरण सिंहः हाँ, प्रशासनिक अनुभव भी नहीं था, उससे ज्यादा समस्याओं का अध्ययन ही नहीं था कि कैसे हल हों। प्रशासनिक अनुभव की कोई बहुत ज्यादा जरूरत नहीं होती है। मान लो आप एक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन हो गये और अगर आप सफल चेयरमैन साबित हुए, तो यह समझ लो कि आप एक अच्छे प्रधानमंत्री भी हो सकते हैं, क्योंकि यह तो एक "एप्रोच" होती है ...। उसमें कोई अधिक अनुभव की जरूरत नहीं होती है। बहुत से लोग दस–दस साल मंत्री रह लेते हैं और उन्हें यह नहीं मालूम होता कि विभाग को कैसे सम्भालना है। किसी को मंत्री बना दीजिए और वह सफल प्रशासक हो जाता है। मैं अनुभव की कमी को कोई बहुत बड़ी अयोग्यता नहीं मानता। व्यक्तिगत विरोध, स्वार्थी होना, एकता की कमी, जातिवाद, कुछ लोगों के साथ रियायत करना कुछ को दबाना ये मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरियां हैं। हमारे दोस्त बस इसी काम में पड़ गये। यहां कांग्रेस कमेटी बहुत मजबूत थी, लेकिन कांग्रेस के लोगों ने इसे खुद चौपट किया, बाहर के लोगों की वजह से नहीं हुई।

मनचन्दाः जरा आप खुलकर बतायेंगे?

चरण सिंहः अब तो रहने दो, क्या बताना।

मनचन्दाः आप 1947 तक ही बताइये?

चरण सिंहः खैर, 1947 में तो मेरी यहां की राजनीति में कोई मुख्य भूमिका नहीं थी। एक और वजह थी कि मेरठ, दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी में

जाता था, लखनऊ में नहीं था। हमारे यहां के कांग्रेसियों का लखनऊ से कोई सम्बंध था ही नहीं, लेकिन मेरा सम्बंध तो दिल्ली में ज्यादा लोगों से नहीं था। मैं वकालत करता था और कांग्रेस का काम करता था। उस जमाने में दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द के पुत्र पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति और लाला देशबन्धु गुप्ता दोनों मुख्य आदमी थे। आसफ अली और कुछ दूसरे लोग भी थे। मैं तो इनके सम्पर्क में भी ज्यादा नहीं आया। पंडित इन्द्र और देशबन्धु गुप्ता के सम्पर्क में थोड़ा आया। आसफ अली के सम्पर्क में मैं बिल्कुल नहीं आया। उन दिनों दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी अलग थी और यू.पी. कांग्रेस कमेटी अलग थी, तो यहां की राजनीति का मुझे पता नहीं। सन् 1937 में चुनाव के लिए दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने मुझे टिकट दिया। उस वक्त मेरठ, मुजफ्फरनगर, मथुरा ये तीनों जिले दिल्ली में थे, बाद में ये यू.पी. में आये।

मनचन्दाः लेकिन 1946 तक तो यहां पर आपको काफी साल हो गये थे, तो यू.पी. की राजनीति को आप समझने लगे होंगे?

चरण सिंहः हाँ, मैं थोड़ा–बहुत समझता था। लेकिन 1936 में यहां कांग्रेस में मोहनलाल सक्सेना और सी०बी० गुप्ता जी में जो झगड़े होते रहे, उससे हमारा कोई वास्ता नहीं था। मैं 1937 में एम.एल.ए. हो गया था, यहां रहता था तो बहुत बातें समझता था।

मनचन्दाः क्या आप उस विषय में कुछ बतायेंगे?

चरण सिंहः नहीं, अब जरूरत नहीं है, "वाइड सब्जेक्ट" है, क्या बतलाऊँ? उस वक्त मैंने दख लिया था कि नेहरू एक अच्छे नेता साबित नहीं होंगे। सन् 1937 में यहां कुछ समय बाद ही लोगों को यह लगने लगा कि कांग्रेस प्रशासन से जो उम्मीद थी, वह पूरी नहीं हुई। पुलिस के और दूसरे अफसरों के वही पुराने रवैये चल रहे थे। बल्कि उस वक्त पंजाब में जो यूनियनिस्ट सरकार थी, उसका रिकॉर्ड अच्छा था। यहां इन लोगों ने कुछ किया ही नहीं। फिर हमने पार्टी में सवाल उठाया। पार्टी में बहुमत मेरे साथ था। गोविन्द बल्लभ पंत जी को लगा कि पार्टी में विद्रोह हो गया है, तो उन्होंने नेहरू जी को बुलाया। नेहरू जी उस वक्त अपनी बहन विजय लक्ष्मी पंडित, जो उस वक्त लोकल सेल्फ मिनिस्टर थीं, के पास ठहरे। हमसे तीन दिन तक उनकी बातचोत होती रही। यह बात 1938 या 1939 की है। साल – डेढ़ साल में यहां कुछ खास काम नहीं हुआ। पार्टी मीटिंग बुलाने की जरूरत थी, लेकिन वे बुला नहीं रहे थे, तो फिर मैंने "रिक्वीजिशन" किया। मैंने बारह विधायकों के दस्तखत कराकर पंत जी,

जो पार्टी के नेता थे, के पास भेज दिये। उसमें लिखा "दी मीटिंग ऑफ दी पार्टी फॉर डिसकसिंग दी वर्क डन एण्ड पालिसी व्हैदर टू फालोड बाई यू– दी गवर्नमेंट"। इसमें मैंने मुख्य भाग लिया तो पत जी "फैल्ट ए बिट"। मीटिंग में पंत जी ने कहा कि आप बहुत बोल चुके हैं, तो लोगों ने कहा कि इन्हें आगे बोलने दीजिए "ही इज वाइसिंग दी फीलिंग्स ऑफ ऑल ऑफ अस"। रणजीत सीताराम पंडित भी उस वक्त सदस्य थे, तो उन्होंने भी कहा कि चरण सिंह को पूरी बात कहने दीजिए, उनकी राय हम सबकी राय है। उस समय सिर्फ बहस होनी थी, कोई वोट की बात तो थी नहीं। पंत जी ने घबरा कर नेहरू जी को बुला लिया था। उस वक्त हम तीन–चार दोस्त थे, हमारे पास कुछ नोट्स थे। हमने कहा कि पुलिस में यह नहीं हो रहा है, वह नहीं हो रहा है, कुछ काम होता ही नहीं। मुझ पर तो तभी यह "इम्प्रेशन" पड़ा कि नेहरू जी का "माइंड क्लीयर" नहीं है। उनको हमें यह बताना चाहिए था कि आप जो एतराज कर रहे हो और जो चाहते हो कि सरकार को करना चाहिए और उसने नहीं किया, तो उसका कारण बताना चाहिए था कि क्यों नहीं किया। बताते कि हमारी "कॉंस्टीट्यूशनल पॉवर्स" नहीं हैं या यह कहते कि "पावर्स" हैं लेकिन जो तुम्हारे प्वाइंट्स हैं, वह ठीक नहीं हैं। जा पंत जी की सरकार ने किया वह ठीक है या यह कहते कि "पावर्स" हैं और गवर्नमेंट ने गलत किया है, मैं उनसे कहूँगा। परन्तु उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा।

हमारे मित्र विष्णु शरण दुबलिश उन दिनों अंडमान से साढ़े बारह साल जेल काट कर आये थे। तब मेरी उनसे पहली मुलाकात हुई। "इट वॉज ए केस ऑफ लव एट फर्स्ट साइट", तो मैंने महसूस किया कि उनमें भावना थी। वह तभी अंडमान जेल से लौटकर आये थे। यह 1939 की बात होगी। तभी मैंने जाकर उनसे कहा कि नेहरू जी "**मे बी ए गुड ड्रम बीटर, बट नॉट ए गुड लीडर**"। तो मेरा यह ख्याल है कि जनता को तभी यह अनुभव हो गया था कि वह जो उम्मीद करती है वह पूरी नहीं होगी।

एक घटना उस दौरान और हुई। रुड़की इंजीनियरिंग कालेज उस समय हिन्दुस्तान में अपनी किस्म का अकेला कॉलेज था। यह 1850 में कायम हुआ था। उसके प्रिंसिपल हमेशा अग्रेज ही रहे। सन् 1930 में अंग्रेज प्रिंसिपल रिटायर हो रहा था। राजाराम, जिन्हें मैंने भी देखा नहीं, वह वहां के "वाइस प्रिंसिपल" थे और बड़े योग्य और राष्ट्रवादी थे। उनको प्रिंसिपल न बनाकर दूसरे अंग्रेज अफसर को बुला लिया गया। बाबू सम्पूर्णानन्द जी के पास उस वक्त शिक्षा मंत्रालय था। जब अंग्रेज प्रिंसिपल आया तो उसने "नेशनलिस्ट – माइंडेड" विद्यार्थियों का "कॅरियर" बिगाड़ दिया। उन दिनों सौ नम्बर "गुड कंडेक्ट" के होते थे, तो जो लड़के अब तक लिखित

परीक्षा में प्रथम आते रहे थे, उनको सौ में से जीरो या दस नम्बर दिये गये। उस वक्त ऐसा था कि प्रथम आठ लड़कों को "ऑल इंडिया सर्विस" में भेजा जाता था — कुल तीस लड़के ही हाते थे, तो बाकी बाइस लड़के पी०सी०एस० में जाते थे। जो लड़का बराबर प्रथम आता रहा था और जिसे प्रथम आना चाहिए था, उसे पी.सी.एस. में डाल दिया गया। वह अंग्रेज प्रिंसिपल गांधी जी की तस्वीर दीवार पर लगाने पर भी एतराज करता था। उन दिनों यू.पी. में कांग्रेस का राज था, तब भी एक अंग्रेज को प्रिंसिपल के पद के लिए बुलाया गया।

मनचन्दाः लेकिन उनको ग्रांट तो यू.पी. सरकार ही देती थी?

चरण सिंहः हाँ, अब देखिए किस तरह सरकार चल रही थी। कुछ मुसलमान लड़कों ने जिन्ना का फोटो लगा दिया या हो सकता है उसने (प्रिंसिपल ने) खुद लगवा दिया। वह एतराज कर रहा था गांधी जी को फोटो पर जब जिन्ना की फोटो भी लग गई, तो उसने कहा, अब ठीक है, दो नेताओं की फोटो हो गई...

लड़के अपने निजी जीवन में हॉस्टल में धोती भी नहीं पहन सकते थे। जब कालेज आएं तो पतलून वगैरह पहनना ठीक था, लेकिन वह तो हॉस्टल में भी धोती–कुर्ता पहनने पर एतराज करता रहा। लड़के हमसे शिकायत करते रहे। उन्हीं दिनों, यह अप्रैल 1938 या 1939 की बात है, क्या हुआ कि सम्पूर्णानन्द जी, जो हमेशा धोती पहनते थे, पाजामा पहनते ही नहीं थे, जाड़ों में भी धोती पहनते थे, कॉलेज में पाजामा पहन कर चले गये। वह प्रिंसिपल धोती पर एतराज कर रहा था, जिस वक्त मीटिंग में इन्हें देखा तो कहा "लुक हेयर ब्वाएज, दिस इज दी प्रॉपर ड्रेस, व्हिच दी ऑनरेबल मिनिस्टर इज पुटिंग ऑन"। अब लड़के बेचारे "लैट डाउन" हो गये, तो मैंने यह मामला पार्टी में उठा दिया।

मनचन्दाः यह अचानक हुआ या जान–बूझ कर किया गया?

चरण सिंहः अब मैं क्या कहूँ, मैं कुछ नहीं कह सकता, लेकिन जब हमने यह मामला उठाया तो पंतजी[2] अपनी धोती पकड़ कर बोले कि भई, मैं तो पुलिस परेड में भी धोती पहन कर जाता हूँ। मैंने कहा पंडित जी बात आपकी नहीं है, यह तो सरकार की बात है या बाबू सम्पूर्णानन्द जी की बात है। वह उनकी किसी भी बात को "डिफेंड" नहीं कर पाये– लड़कों के साथ अन्याय हो रहा था। बात तो भारतीयता की करते थे, तो बुला

---

[2] पं० गोविन्दबल्लभ पंत

लिया एक अंग्रेज अफसर को, यहां नहीं मिला तो बाहर से बुला लिया। **हिन्दुस्तान टाइम्स** में मैंने उस वक्त इस पर एक खत लिखा था। पंत जी ने इस पर इस्तीफा दे दिया लेकिन पार्टी में सबने मेरा समर्थन किया। अब बाकी लोग इस बात के लिए तैयार नहीं थे कि पंतजी इस्तीफा दें। हमने अपने साथियों से सलाह मशविरा किया कि अब क्या करें। तो यह तय किया....

मनचन्दाः यह मीटिंग किस वर्ष में हुई?

चरण सिंहः यह 1939 की बात है।

मनचन्दाः जब मिनिस्ट्री चल रही थी?

चरण सिंहः हाँ, मिनिस्ट्री के वक्त की बात है, उसी वक्त हमने यह सवाल उठाया था। तो मैंने सलाह दी कि सरदार पटेल को सब बातें लिखकर भेज दी जाएं कि एक अंग्रेज की तरफदारी की गई है और अंग्रेज ने जो व्यवहार किया, उसे भी स्वीकार किया गया। राजाराम (एक भारतीय) को अपमानित किया गया ह। सम्पूर्णानन्द जी को मालूम था कि कॉलेज में धोती पर झगड़ा चल रहा है, इसके बावजूद उनका पाजामा पहन कर कॉलेज में जाना समझ में नहीं आया, जबकि हम देखते थे कि असेम्बली में वह रोजाना, जनवरी के महीने में भी, धोती पहन कर आते थे। लेकिन महावीर त्यागी, जो असेम्बली के सदस्य थे, ने **उस वक्त सब गुड़ – गोबर कर दिया**। वह खड़े हो गये और उन्होंने पंत जी की खुशामद कर ली। पंत जी ने इस्तीफा वापस ले लिया। मेरे कहने का मतलब यह है कि हम अपनी सरकार से जो आशाएं लगाये हुए थे, वह पूरी नहीं हुईं, और इसे मैं अपने लोगों की असमर्थता समझता हूँ, नाकि "कांस्टिट्यूशनल हैंडिकेप्ड"।

मनचन्दाः उसकी वजह क्या हो सकती है, ये लोग "पॉलिसी" को "टांसलेट" क्यों नहीं कर पाये, क्या उनमें "लैक ऑफ विल" थी, या कुछ अन्य कारण थे?

चरण सिंहः मैं इसे "लैक ऑफ विल" ही कहूँगा। सही काम करने के लिए बड़ी हिम्मत को जरूरत होती है। बाद का मेरा सारा अनुभव यही बताता है।

मनचन्दाः हो सकता है "जूनियर स्टाफ ओवर–पावर" कर जाए या कुछ ऐसे "आर्ग्युमेंट्स" दे कि मंत्री को मानना पड़े कि यह ठीक है?

चरण सिंहः कुछ चीजें ऐसी बेशक होती हैं जिसमें स्टाफ का दृष्टिकोण मानने लायक होता है लेकिन अगर पहले भ्रष्टाचार चल रहा हो और उसमें दो महीने तो हवा बदले लेकिन फिर वही पुरानी स्थिति हो जाए, तो इसका मतलब यह है कि "मैन एट दी हेल्म आर एग्रीड, दे आर नॉट क्लीअर – हैडिड", जो एक्शन लेना चाहिए उसे लेने से डरते थे। जनता से सम्पर्क टूट गया, फिर उनको इसका अहसास ही नहीं था कि क्या हो रहा है, उनक आने से क्या फर्क पड़ा और फिर क्यों पुरानी स्थिति हो गई। मैं तो उसे बस "लैक ऑफ विल" ही कहूँगा।

मनचन्दाः चौधरी साहब, किसान या जो दूसरे पिछड़े हुए वर्ग थे, क्या उस क्षेत्र में भी पार्टी की नीतियों को लागू नहीं कर पाये?

चरण सिंहः उस वक्त पिछड़े हुए वर्ग की ज्यादा समस्या थी भी नहीं; और कांग्रेस को कुल दो साल का तो मौका मिला – सन् 1937 से 1939 तक, लेकिन किसानों की समस्याओं के मामले में भी उनका जो रवैया था, वह सही नहीं था। उस जमाने में कर्जा माफी और "एग्रीकल्चरल मार्केटिंग" आदि के सवाल तो मैंने हो उठाये थे। यूनियनिस्ट सरकार की इस क्षेत्र में यहां से कहीं ज्यादा अच्छी उपलब्धियां थीं।

मनचन्दाः अभी आपने एक कारण बताया कि "लैक ऑफ विल" था, दूसरा कोई और कारण?

चरण सिंहः "लैक ऑफ विल" तो मैं प्रशासन के बावत कहता हूँ, अब मैं कहता हूँ कि "लैक ऑफ दी एप्रिसियेशन आफॅ दी प्रोब्लम्स" ...।

मनचन्दाः यह भी कह सकते हैं कि कुछ अन्दरूनी झगड़े भी हों, उसका कुछ असर पड़ा हो?

चरण सिंहः नहीं, पन्तजी तो "अनडिस्प्यूटेड" नेता थे, इसलिए ऐसे झगड़ों का कोई सवाल नहीं था।

मनचन्दाः रफी अहमद किदवई का और पन्तजी का कोई झगड़ा हो?

चरण सिंहः नहीं, उस वक्त कोई बात नहीं थी। रफी अहमद किदवई और पन्त जी के (मतभद) 1946 के बाद तो कुछ बढ़े लेकिन उस वक्त हों, मुझे याद नहीं पड़ता। और इस मामले में "पेस" को सैट करने वाले तो पन्त जी रहे, क्योंकि रफी अहमद साहब आमतौर पर बड़े आदमियों के हक में नहीं थे, वह गरीब किसान ओर दबे हुए लोगों के ज्यादा हक में थे। वह भ्रष्टाचार के काफी खिलाफ थे। वैसे तिकड़म तो वह अपनी करते

थे लकिन फिर भी उनकी "अप्रोच" आम आदमी के हक में थी, पन्तजी की भी थी, चाहे जो भी मतभेद रहे हों, लेकिन मतभेद कोई बाधक नहीं थे।

मनचन्दाः रफी अहमद किदवई एक तरह से नेहरू जी के समर्थकों में से थे। वैसे तो पन्त जी के भी सम्बंध नेहरू जी से बहुत अच्छे थे। रफी अहमद जी एक तरह से अच्छे संगठनकर्ता थे?

चरण सिंहः यह बात 1946 में बढी।

मनचन्दाः उसके बारे में आप अगर कुछ मुनासिब समझें, तो बताइए?

चरण सिंहः उसके बारे में अब ज्यादा क्या बतलाऊँ आपको। सन् 1937–39 में इतनी बात नहीं थी। नेहरू जी ने पंत जी को मुख्यमंत्री बनाया। अगर नेहरू जी समर्थन न देते, तो पुरुषोत्तम दास टण्डन जी मुख्यमंत्री होते। "टण्डन जी वाज मोर पॉपुलर एण्ड वाज मोर लव्ड बाई दी पीपल एण्ड दी वर्कर्स देन पंत जी"। पंत जी तो एक वकील थे; और वे 1934–36 के दौरान भारतीय लेजिस्लेटिव असेम्बली के सदस्य भी रह चुके थे। वित्तीय समस्याओं का उन्होंने अच्छा अध्ययन किया हुआ था। **अच्छा बोल लेते थे**, "ही वाज ए गुड पार्लियामेंटेरियन, बट ही हैड लिटिल मास अपील, टण्डन जी हैड अ मास अपील"। बाहर से अगर कोई प्रभाव और जोर न पड़ता तो पार्टी टण्डन जी को ही चुनती, बस इतना ही कह सकता हूँ।

मनचन्दाः चौधरी साहब, जिस वक्त टण्डन जी कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के लिए खड़े हुए थे और नेहरू जी के साथ उनके मतभेद भी थे, तो ऐसा कहा जाता है कि कांग्रेस अध्यक्ष के इस चुनाव में काफी बातें कुछ हद तक यू.पी. की राजनीति से भी बावस्ता थीं, उसके बारे में आप कुछ बतायेंगे?

चरण सिंहः अब कोई क्या कह सकता है, नेहरू जी के टण्डन जी से मतभेद तो रहते थे। टण्डन जी को नेहरू "कम्युनल" समझते थे, जबकि टण्डन जी "कम्युनल" बिल्कुल नहीं थे। वह हिन्दी के पक्षपातो तो थे, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह "कम्युनल" थे।

मनचन्दाः लेकिन रफी अहमद किदवई जी ने भी उस वक्त टण्डन जी के खिलाफ काम किया होगा, जिस वक्त सरदार पटेल टण्डन जी का समर्थन कर रहे थे, तो रफी अहमद आचार्य कृपलानी का समर्थन कर रहे थे, तीसरे उम्मीदवार शंकर देवजी थे?

चरण सिंहः हाँ, आखिर रफी अहमद किदवई तो नेहरू जो के साथ थे

ही, उसमें कोई शक नहीं। हम लोग, जिनके हाथ में सरकार थी, पन्त जी वगैरह सब टण्डन जी के साथ थे। असल में सरदार पटेल इस कैम्प के नेता थे, दूसरे राज्यों में सरदार पटेल ने ही सब वोटें दिलवाई थीं। उन दिनों में राज्यों में जो मुख्यमंत्री थे, वे अधिकतर सरदार पटेल के ही समर्थक थे। ए.आई.सी.सी. में बहुमत सरदार पटेल का था। यहां तक कि सरदार पटेल की मृत्यु के सालभर बाद तक टण्डन जी का बहुमत रहा। जब सरदार इस संसार में नहीं रहे तो 30–31 जनवरी 1951 में अहमदनगर में ए.आई.सी.सी. की मीटिंग हुई, वहां भी नेहरू जी अपनी मर्जी नहीं करा सके। रफी साहब और इन सब का हारना पड़ा। फिर जुलाई 1951 में बंगलूर में मीटिंग हुई। वहां भी वे लोग हारे और फिर अक्टूबर में नेहरू जी ने कहा कि मैं इस्तीफा देता हूँ। यह "प्रेशर टैक्टिक्स" थी। टण्डन जी ने यह देखा तो बेचारों ने खुद इस्तीफा दे दिया, क्योंकि गांधी जी सरदार पटेल से कह गये थे कि भई, "सेकेण्ड इन कमाण्ड" रहना। इसलिए वह अपने पर संयम रखते रहे, नही तो जब चाहते, प्रधानमंत्री हो जाते।

मनचन्दाः क्या आपको त्रिपुरी कांग्रेस की कुछ याददाश्त है?

चरण सिंहः मैं 1939 मे त्रिपुरी में गया था। कुछ खास बात याद नहीं है।

मनचन्दाः आपकी कुछ महान व्यक्तियों के बारे में याददाश्त हो, जैसे महात्मा गांधी के बारे में संस्मरण हो?

चरण सिंहः नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।

मनचन्दाः जवाहरलाल जी के बारे में?

चरण सिंहः जवाहरलाल जी के बारे में तो मैं आपसे कह ही चुका हूँ कि हमारी दो–तीन दिन तक बहस हुई और वह कोई सही राय नहीं दे पाये। असल में जब तक कोई आदमी "डिटेल" (गहराई) में नहीं जायेगा, वह सफल प्रशासक तो हो ही नहीं सकता। उनकी ऊपरी हवाई बातें थीं। उनके अधिकतर विचार विदेशो से मिले हुए थे। लोग उनकी मीटिंगों में आते थे, लेकिन वह उनकी समस्याओं को नहीं समझते थे। सरदार पटेल लोगों की समस्याओं को समझते थे, क्योंकि वह मामूली किसान के घर पैदा हुए थे, पंत जी भी समझते थे। भारतीय रियासतों का मामला अगर नेहरू जी के हाथ में रहता, तो सब गड़बड़ हो जाता। दो बार तो वे ही इंडियन स्टेट्स कान्फ्रेंस के अध्यक्ष थे। उन्होंने कोशिश भी की लेकिन सरदार ने उसको हल कर दिया। दो ही रियासतें उनके (नेहरू जी के)

पास थीं – एक कश्मीर और दूसरी हैदराबाद। आप जानते ही हैं कि उन्होने क्या समस्याएं पैदा कीं।

सरदार पटेल के पास हैदराबाद का मामला 20 जून 1948 को आया, जब लॉर्ड माउंटबेटन यहां से चले गये। उन्होंने 15 जुलाई को पेप्सू का उद्घाटन पटियाला में किया। वहां अपने भाषण में उन्होंने कहा कि कुछ लोगों को अंग्रेजी की नेक नीति म बड़ा विश्वास है, लेकिन मुझे नहीं है। हैदराबाद का मामला अभी तक अटका पड़ा था, अब वह मेरे पास आया है। आज से तीन महीने के अन्दर हैदराबाद हिन्दुस्तान का हिस्सा होगा; और तीन महीने से भी कम समय में उन्होंने यह करके दिखा दिया।

मनचन्दाः आप अब गोविन्द बल्लभ पंत के बारे में कुछ विस्तार से बताइये। आपको तो उनसे बात करने के बहुत अवसर मिले थे?

चरण सिंहः इसमें कोई शक नहीं है कि वह बड़े योग्य प्रशासक थे, पार्टी प्रबंधक भी अच्छे थे, "पालियामेंटेरियन" भी बहुत अच्छे थे, लेकिन **"पब्लिक स्पीकर" बहुत अच्छे नही थे।** उनकी पकड़ सारे विभागा पर और सारी समस्याओं पर थी, इसमें दो राय नहीं हैं। वह सर्वसाधारण के दृष्टिकोण से मसलों पर विचार करते थे, लेकिन इसके साथ ही साथ उनके जमाने में कुछ ऐसी बातें भी हुईं, जो बढ़ती चली गईं और फिर प्रशासन बहुत बिगड़ा।

मनचन्दाः वह क्या बातें थीं?

चरण सिंहः मैं नहीं बताना चाहता। अब तो पन्त जी संसार में रहे नहीं, वह हमारे नेता थे। बहुत सी ऐसी बातें हैं, मैं कहना नहीं चाहता।

मनचन्दाः हमारे देश में शुरू से ही काफी गरीबी थी, इसके बावजूद मार्क्सवाद वांछित रूप से यहां पैर क्यों नहीं सका? विशेषकर गांवों में।

चरण सिंहः मार्क्सवाद "लार्ज इकोनॉमिक यूनिट्स" में विश्वास करता है। मार्क्स बड़े विद्वान आदमी थे, लेकिन उन्होंने केवल उद्योगों और मजदूरों के सम्बंधों के बारे में अध्ययन किया है। उन्होने कभी किसान और कृषि की समस्याओं का अध्ययन नहीं किया। वह अपने अध्ययन से इस नतीजे पर पहुंचे कि उद्योगों में जितना बड़ा यूनिट होगा, उत्पादन उतना ही बढ़ता जायेगा। अब यह बात उद्योगों में भी सही है या नहीं, इसमें भी दो राय हैं। लेकिन मान लो कि उनकी राय सही थी, तो भी अब उन्होंने अपने उस उसूल को कृषि पर भी लागू कर दिया, जो बिल्कुल गलत है। मशीन बढ़िया से बढ़िया होती चली जायेगी, तो ठीक है वह उत्पादन बढ़ा सकती

हैं, क्योंकि वह "मैकेनिकल प्रोसेस" है। लेकिन कृषि एक "बायोलॉजिकल प्रोसेस" है।

अब आप गेहूँ के एक दाने को एक बीघा खेत में डाल दो और दूसर दाने को एक हजार एकड़ खेत में, तो दोनों बड़ा होने के लिए एक जितनी ही जगह गहरायेंगे, एक जितनी ही जगह घेरेंगे और पकने में एक सा ही समय लेंगे। तो "इकोनामी ऑफ स्केल" कृषि में नहीं होती है। उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। "थियोरिटिकली" खेत के आकार का कृषि उत्पादन पर कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए और "इन एक्चुअल प्रैक्टिस दी फार्म पर एकड़ गोज ऑन डिकलाइनिंग, विकॉज दो ऑनर ऑफ दी फार्म इज नॉट एबल टू एक्सरसाइज सुपरविजन बियॉन्ड दी सर्टेन एरियाज"। इसलिए "प्रैक्टिस" में यह है कि अगर बीज, पानी, खाद आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों, तो छोटे खेत की पैदावार "पर यूनिट ऑफ लैण्ड" ज्यादा होगी, बनिस्बत बड़े के। लेकिन कम्युनिस्ट तो मार्क्स ने जो कह दिया, उसी पर विश्वास करते थे। इसीलिए वे कृषि और कृषक की समस्या को नहीं समझते थे। कम्युनिस्ट गांव में कभी लोकप्रिय नहीं रहे, वे औद्योगिक शहरो में ही लोकप्रिय हुए। खैर धीरे–धीरे पाश्चात्य देशों में उद्योग बढ़े तो इसलिए इनकी वहां कुछ शक्ति बढ़ी लेकिन जो पूरी तरह स कृषि प्रधान देश हैं, वहां प्रजातांत्रिक तरीके से तो ये कभी शक्ति में आ ही नहीं सकते, क्योंकि कृषि में ये वही बेहूदा बात कहेगे कि "कोऑपरेटिव फार्म्स" (बना) कर लो, "क्लेक्टिव फार्म" कर लो, "लार्ज इकोनॉमी"...।

मनचन्दाः इस सिलसिले में जवाहरलाल जी के बारे में आपकी क्या राय है?

चरण सिंहः जवाहरलाल जी भी यही चाहते थे। "कोऑपरेटिव फार्मिंग" का उनका यही आधार था। वह भी उस रास्ते पर चलने की बात सोच रहे थे। राजनीतिक रूप से तो वह कम्युनिज्म के खिलाफ थे, लकिन आर्थिक कार्यक्रम उनका वही था जो कम्युनिस्टों का है।

मनचन्दाः आप यह कैसे कह सकते हैं, क्योंकि जवाहरलाल जी ने स्वतंत्रता के बाद जो कार्यक्रम दिया, वह मिली–जुली अर्थव्यवस्था का था। उसमें "पब्लिक सेक्टर" भी था और "प्राइवेट सेक्टर" भी था। "पब्लिक सेक्टर" में उन्होंने "हैवी इंडस्ट्री" ली लेकिन "प्राइवेट सेक्टर" में भी "हैवी इंडस्ट्री" भी रही और "स्मॉल इंडस्ट्री" भी रहीं। तो आप यह नहीं कह सकते कि उनका झुकाव "साइंटिफिक" सोशलिज्म या कम्युनिज्म की तरफ था?

चरण सिंहः अब मुझे "रेफरेन्स" याद नहीं है, मैं आपको बता दूंगा

लेकिन उन्होंने यह कहा कि "पब्लिक सेक्टर मस्ट ग्रेजुअली एमब्रेस ऑल इकॉनमिक एक्टिविटीज", क्योंकि कम्युनिस्टों का राजनीतिक तरीका तो यह है कि हिंसा के द्वारा क्रांति करके समाजीकरण या राष्ट्रीयकरण कर दो। नेहरू राजनीतिक तौर पर तो – "डेमोक्रेट" थे लेकिन उनका उद्देश्य आर्थिक क्षेत्र में वही था।

मनचन्दाः उन्होंने पंचवर्षीय योजना की प्रेरणा रूस से ली?

चरण सिंहः अब जहां से भी ली हो, यह तो मैं नहीं जानता। यहां जितने अर्थशास्त्री या प्रोफेसस हैं. वे सब ज्यादातर लड़कों को मार्क्सवाद की "थ्यूरी" पढ़ाते हैं। यहां चाहे प्रोफेसर हो, चाहे प्रशासक हो, चाहे राजनीतिक नेता हो, वे सब अपने विचार विदेशों से लेते रहे हैं, ज्यादातर रूस से और कम्युनिस्ट साहित्य से। वही इनका हाल था, इसलिए ज्यादा जोर उन विचारों पर दिया और कृषि की तरफ ध्यान नहीं दिया। जो आर्थिक व्यवस्था उन्हें कृषि क्षेत्र में करनी चाहिए थी, वह उन्होंने...।

मनचन्दाः जैसे कि प्रथम पंचवर्षीय योजना में हुआ...?

चरण सिंहः उसमें कुछ ठीक था, लेकिन उसके बाद तो उन्होंने उसको बिल्कुल बदल दिया। दूसरी पंचवर्षीय योजना में तो "इंडस्ट्री" में भी ज्यादा जोर "हैवी इंडस्ट्री" पर दिया। तीसरी योजना में भी यही हुआ। चौथी की तो जैसी हालत है वह है ही, तो उसका नतीजा क्या हुआ? सन् 1947 से अब तक सैंतालिस अरब रुपये का अनाज विदेश से मंगवा लिया। सोलह अरब रुपये की रूई मंगवा ली। मनुष्य की दो ही आवश्यकताए सबसे बड़ी हैं– भोजन और कपड़ाय और दोनों चीजों के लिए इतना बड़ा मुल्क दूसरों पर आश्रित हो जाए?

जिस वक्त पहली पंचवर्षीय योजना यहां तैयार हो रही थी, "ड्राफ्ट" बन गया था, उन्हीं दिनों डा० शेफ्ट भी यहां आये हुए थे, जो मशहूर जर्मन अर्थशास्त्री थे। नेहरू जी ने उन्हें अपनी योजना दिखाई। उन्होंने उसे देखने के बाद कहा कि आपने "इंडस्ट्री" पर इतना जोर क्यों दे रखा है, आपको चाहिए कि कृषि पर जोर दें, सिंचाई के साधन पैदा करें। अगर आप हर साल लाख, दो लाख दस लाख, बीस लाख खर्च करते चले जाएं और सिंचाई के साधन बढ़ाते जाएं, तब सारा विकास अपने आप हो जाएगा। अब तो दो–एक साल हुए उनकी मृत्यु हो गई लेकिन उन्होंने एक किताब लिखी है, उसमें उन्होंने लिखा कि एक हो प्रधानमंत्री ऐसा था, जिसने मुझसे सलाह तो ली लेकिन उसे माना नहींय और वह व्यक्ति नेहरू थे।

तो नेहरू बड़े जिद्दी ...ss ss ss। यहां सब लोग शुरू से यही कह रह थे कि कृषि पर ज्यादा जोर दीजिए लेकिन उनकी एक ही रट थी "इंडस्ट्री", "इंडस्ट्री", "इंडस्ट्री"; "बट इंडस्ट्री विल कम आफ्टर एग्रीकल्चरल प्रोडक्शन, प्रोडक्शन हैज बीन स्टेप्ड अप ... इट हैज इनक्रीस्ड एण्ड कल्टीवेटर्ज आर एबल टू प्रोड्यूस सरप्लस टू देअर ओन नीड्स, देन एलोन इंडस्ट्री विल कम अप, नॉट अदरवाईज।" ये जो सारी बरबादी हुई है, सिर्फ इसी वजह से हुई है।

आर्थिक विचार उनके यही थे कि कृषि से ज्यादा श्इंडस्ट्रीश को प्राथमिकता दी जाए और "इंडस्ट्री" में भी "हैवी इंडस्ट्री" को प्राथमिकता दी जाए। ये प्रोग्राम मा–ओ–त्से तुंग ने भी चीन मे कम्युनिस्ट "आर्थोडॉक्सी" के मातहत शुरू किया, लेकिन उनको बड़े तल्ख तजुरबे हुए। अप्रैल 1962 में उनकी पीपल्स कांग्रेस की मीटिंग हुई। वह तीन हफ्ते चली। सोलह अप्रैल 1962 को उन्होंने प्रस्ताव पास किया और कहा कि पहली प्राथमिकता कृषि को दी जाए, दूसरी "लाईट इंडस्ट्री" को और बाद में "हैवी इंडस्ट्री"। तब जाकर उनका विकास हुआ। इससे पहले तो ली फारवर्ड वगैरह अपनी इकोनॉमी चौपट कर ही चुके थे। कम्युनिस्ट देशों ने भी दुनिया भर में आर्थिक विकास की जो प्रक्रिया रही है, उसी को माना है। अब रूस की और बात है। उसके पास पन्द्रह गुना ज्यादा "पर कैपीटा" जमीन है। वह गल्तियां करे भी तो चल सकता है। वहां "कलेक्टिव फार्मिंग" किसानों पर लाद दी गई, नतीजा यह हुआ कि उनका उत्पादन गिरा। सन् 1930 से 1932 तक वहां बड़ा भारी अकाल पड़ा। कनाडा और अमेरिका से गेहूं मंगवाया, तब जाकर उनका काम चला। रूस का कृषि के क्षेत्र में "पर एकड़ लोएस्ट प्रोडक्शन" है। उसकी नकल यहां करना चाहते थे सब उनकी उसी गलती से हुआ। उनकी यह "अप्राच" तो ठीक थी कि "नॉन–एग्रीकल्चरल ऑक्यूपेशन" बढ़ाया जाए तो मुल्क मालदार होता है पर एक ही बात वह भूल गये कि "नॉन–एग्रीकल्चरल ऑक्यूपेशन" तब बढ़ता है जब पहले या साथ के साथ "एग्रीकल्चरल प्रोडक्शन" बढ़ता चला जाए। जनता तो सब कृषक वर्ग की है, अगर उनके पास खरीदने की सामर्थ्य नहीं होगी, तो सामान खरीदेगा कौन, आपकी फैक्टरी खड़ी रहेगी। आप मालूम करा लीजिए कि जितनी फैक्ट्रियां हैं– छोटी या बड़ी– उनकी "यूटिलाइजेशन कैपेसिटी" जितनी है, उसमें से आधी भी "यूटिलाइज" नहीं होती।

मनचन्दाः बाजार में मांग नहीं है?

चरण सिंहः दो चीजें हैं, एक तो कुछ के लिए कव्वा माल नहीं है और जिनके लिए कच्चा माल है, उनकी मांग नहीं है।

मनचन्दाः कच्चा माल भी तो जमीन से आएगा?

चरण सिंहः बिल्कुल, अधिकतर जमीन से आएगा, खानों से भी आता है, पशुओं से भी आता है, पशु तो कृषि में ही आ जाते हैं। अब ढाई अरब का "हैवी इंडस्ट्री प्लांट" रांची में लगा दिया। वहां मशीनें लगा दीं, पर जो मशीन माल बनायेंगी, वह खाली पड़ी हैं। इसी तरह से "पब्लिक सेक्टर" में भी बहुत ज्यादा जोर दिया। अब ब्रिटिश लेबर पार्टी ने अपने अनुभव के बाद राष्ट्रीयकरण का अपना कार्यक्रम छोड़ दिया, जर्मनी की सोशलिस्ट पार्टी ने छोड़ दिया, जापान की सोशलिस्ट पार्टी ने छोड़ दिया। राष्ट्रीयकरण "प्राइवेट ऑनरशिप" का अच्छा विकल्प नहीं है। पूंजीवाद की जो खराबियां थीं, वह धीरे धीरे मिटती जा रही हैं। अब ता सरकार की तरफ से मजदूरों को सुरक्षा मिलती है, उनके लिए कानून बन गये हैं, उन्हें हड़ताल करने का अधिकार है, वोट देने का अधिकार है। उस जमाने में ये सब नहीं था। शुरू–शुरू में तो मजदूरों का काफी शोषण होता था, तो उस माहौल में पूंजीवाद के खिलाफ आवाज उठी। अब आप देखिए कि टाटा स्टील फैक्ट्री में मजदूरों के साथ कोई बुरा बरताव होता है? वह कितना अच्छा प्रबंध कर रहे हैं और दुर्गापुर, राउरकेला और भिलाई में अभी कुछ दिन हुए अखबार में निकला था कि 78 प्रतिशत "कैपेसिटी यूटीलाइज" हो रही है। इनमें सबसे अच्छी शायद भिलाई है और 55 प्रतिशत के करीब राउरकेला की है। मुझे मालूम है कि दुर्गापुर की 38 प्रतिशत है। इसमें ग्यारह अरब रुपया लगा रखा है और दो अरब बोकारो में लगा दिया है, तेरह अरब हो गया। और दो अरब का स्टील बाहर से मंगा रहे हैं। यदि आप यह ग्यारह अरब बिड़ला या टाटा को दे देते, तो यह हालत थोड़े ही होती, उनको बहुत अनुभव है, ऊपर से कितना ही नियंत्रण कर लेते, जापान कहा से कहां पहुंच गया।

मनचन्दाः मतलब यह है कि "प्राइवेट इंडस्ट्री" में बड़ा प्रलोभन रहता है, जो कि "नेशनलाइज्ड इंडस्ट्री में या "पब्लिक इंडस्ट्री" में नहीं होता।

चरण सिंहः "इन्फ्रास्ट्रक्चर" बेशक राज्य के नियंत्रण में रहता जैसे बिजली, ट्रांसपोर्ट आदि। अब जो "इन्फ्रास्ट्रक्चर" की परिभाषा है उसमें स्टील भी नहीं आता। स्टील को "प्राइवेट ऑनरशिप" में देना चाहिए था, "सब्जेक्ट टू कंट्रोल बाई दी गवर्नमेंट"। गांधी जी ने यही कहा था कि सब छोटे पैमाने पर करो, लेकिन लोग गांधीजी का नाम लेते रहे, मजाक उड़ाते रहे। उन्होंने बड़े अच्छे उसूल बनाये थे कि जो चीज छोटे पैमाने पर बनाई जा सकती है, उसको बनाने के लिए बड़ी फैक्ट्रीज मत रखो। वह कहते थे कि मैं "लोकोमोटिव, शिप्स, एरोप्लेन", बिजली, स्टील आदि बनाने के कहां

खिलाफ हूँ?" यहां तक कि वह कपड़े सीने की सिंगर मशीन के बहुत हक में थे। वह कहते थे कि यह बहुत अच्छी चीज है, अगर यह छोटे स्तर पर नही बन सकती तो आप बड़ी फैक्ट्रीज बना दीजिए, लेकिन उसूल यह रखो कि जो छोटे पैमाने पर चीज बन सकती है, उसके लिए बड़ी फैक्ट्रीज मत रखो।

सन् 1953 में तो मिल के मुकाबले बीस गुना रोजगार हैण्डलूम में मिलता था। अब भी कोई बारह गुना अधिक मिलता है और क्योंकि मिल मजदूर को क्षमता, उसका काम बहुत "डिटिरिओरेट" कर गया, अब उसके जो भी कारण हों। अब आपके कुल सात लाख साठ हजार आदमी टैक्सटाइल मिल मजदूर हैं और अब जितना मिल का कपड़ा पैदा होता है, उसका दस प्रतिशत तो देश के बाहर बिकता है और नब्बे प्रतिशत यहां बिकता है। अगर नब्बे प्रतिशत हैण्डलूम कपड़ा तैयार होने लगेगा तो सात लाख साठ हजार के बजाए अस्सी या पचासी लाख आदमियों को रोजगार मिलता। इससे बेरोजगारी की समस्या बहुत कम समय में हल हो जाती।

मनचन्दाः यहां भी निजी स्वार्थ होता जा रहा है?

चरण सिंहः अब असल बात तो यही है, आप मेरे मुंह से क्यों कहलवाते हो। ये जो करोड़ों रुपया चुनाव में आता है, ये कहां से मिलेगा? मैंने इन्दिरा जी से कहा, उनका जवाब मेरे पास रखा है।

मैं इस "इश्यू" को "डील" कर रहा था कि जब आप कुछ करेंगे तो कठिनाई तो होगी ही। कठिनाई तो हर चीज में आती है। हम तो यह कहते हैं कि तुम सामान बाहर 2 बेचो, बद मत करो। "एक्सपोर्ट इट इफ यू कैन, वी विल हैल्प यू, बट इफ यू कैन नॉट कम्पीट इन दी फॉरेन मार्केट, य मे वैल क्लोज, बट दी इंटरनल मार्केट शैलरिमेन दी एक्सक्लूसिव प्रिजर्व ऑफ स्माल इंडस्ट्री"। अब सब ऐसी "इंडस्ट्रीज" का हिसाब लगा लीजिए जो छोटे स्तर में बन सकती हैंय और ऐसी अनेक होंगी। यह सबसे बड़ी "इंडस्ट्री" है। अब इतना सरदर्द हो रहा है, देश की सामाजिक, राजनैतिक स्थिरता को जो खतरा है, ये सब मामला अपने आप हल हो जायेगा और आपको कुछ भी नहीं करना पड़ेगा। हैण्डलूम तो वे अपने आप लगा लेंगे, आपको तो कुछ नहीं करना — बस सरकार यह शर्त लगा दे कि बड़े–बड़े शहरों में हैण्डलूम नहीं लगा सकते। इससे छोटे–छोटे शहर बढ़ेंगे, बजाए इसके कि कानपुर, दिल्ली, मद्रास या कलकत्ता बढ़ जाए। पावर लूम में भी "क्लाथ मिल" से पाँच गुना अधिक रोजगार मिलता है। लेकिन कोई हल करना चाहता है?

आज पायनियर[3] के छठे पृश्ठ पर एक खबर है। मैंने कटिंग रखी है, मैं उस सिलिसिले में लिख भी चुका था, अब मैं उसे "कोट" करना चाहूंगा। अब आप देखिए मजदूरों की क्या स्थिति है– एक मजदूर था, उसका किसी संवाददाता ने इंटरव्यू लिया। उस बेचारे ने बताया कि हमारे घर वालों को, बच्चों को खाने को नहीं मिलता है, यहां कोई सुधार नहीं हुआ है। जमीन तो आबादी के साथ कम होती जा रही है और जो पुराने "क्राफ्ट्स" और "हैण्डीक्राफ्ट्स" हैं, वे खत्म होते जा रहे हैं, क्योंकि वे मिल से मुकाबला नहीं कर सकते हैं। पुराने जमाने के रोजगार खत्म होते जा रहे हैं। जमीन की एक तो वैसे ही कमी है और जिनके पास है, वह भी कम होती जा रही है, तो औरों को क्या हक मिलेगा? कुछ लोग तो बिना जमीन के हा गये हैं, बेरोजगार हो गये हैं। सब लोग भाग कर शहर जा रहे हैं– लखनऊ, कानपुर, दिल्ली और वहां धक्के खा रहे हैं। आपने संविधान में संशोधन तो कर दिया कि गरीबी मिटायेंगे पर सरकार को गरीबी से क्या मतलब है? यह तो महज एक "स्लोगन" है। क्या इससे गरीबी मिटने वाली है? मेरे ख्याल से तो 157 लाइसेंस अभी उन्होंने "मोनोपलिस्ट्स" को दे दिये, कोई चिंता नहीं है। तीन करोड़ आदमी तो यहां ऐसे हैं, जिनके पास तीस पैसे से भी कम की आमदनी है। न वे हमारी मीटिंगों में आते हैं, न हम उनकी झोपड़ियों में जाते हैं।

मनचन्दाः चौधरी साहब, आजादी से पहले भी तो समाजवाद का काफी प्रचार था, खासकर यू.पी. में। तो आचार्य नरेन्द्र देव, पुरुषोत्तम दास टण्डन जी आदि के बारे में आपका क्या ख्याल है?

चरण सिंहः वैसे तो जवाहरलाल जी भी समाजवाद वगैरह की बात करते रहे। एक दफा 1936 में गांधी जी ने जवाहरलाल जी को चिट्ठी लिख दी कि तुम इधर–उधर की बातें करते हो, पता नहीं क्या लफ्ज लिखा उन्होंने...। लेकिन गांधी जी ने उनको लिखा था कि तुम कांग्रेस से इस्तीफा दे दो, क्योंकि वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव आया था, उस बारे में इनका मतभेद था। यही समाजवाद वगैरह की कोई बात थी।

मनचन्दाः सन् 1936 में कांग्रेस वर्किंग कमेटी से राजाजी और आचार्य कृपलानी वगैरह ने इस्तीफा दे दिया था?

चरण सिंहः वह मुझे मालूम नहीं। सन् 1939 में गांधी जी ने राजकुमारी अमृत कौर को एक पत्र लिखा, जिसमे उन्होंने कहा कि भई मैं क्या करूँ,

---

[3] पायनियर, 10 फरवरी 1972

ये नेहरूजी तो बड़े "यूनिट्स" में विश्वास करते हैं, बड़ी फैक्ट्रीज, "हैवी इंडस्ट्री" आदिय तो मेरे विचार से तो यह सब फजूल साबित होंगे, लेकिन क्या करें, नेहरू जी को इसम विश्वास है। और यही हुआ। संसार में हमारा "प्रेक्टिकली लोएस्ट रेट ऑफ ग्रोथ है", बातें कितनी ही बना लो।

मनचन्दा: जमींदारी उन्मूलन कमेटी में आप भी थे?

चरण सिंह: वह सारा मेरा ही किया हुआ है, मैं कमेटी में था। लेकिन कमेटी की बहुत सी "रिकमन्डेशन्स इम्प्रैक्टिकल" थीं, गलत थीं। क्योंकि मैं पार्लियामेंट्री सैक्रेटरी था, इसलिए मैंने "डिसेंटिंग नोट" तो लिखा नहीं। फिर मैंने पन्त जी को सत्रह सफे का नोट लिखा कि कमेटी की ये–ये "रिकमेन्डेशन्स" गलत हैं, ये राष्ट्रीय हित में नहीं हैं। उन्होंने मुझे कह दिया कि जो तुम्हारी तबीयत चाहे, तुम ड्राफ्ट करा दा। तो जो ड्राफ्टिंग कमेटी बनी, उसका मैं अध्यक्ष था। रेवेन्यू सेक्रेटरी, चीफ सेक्रेटरी आदि सब उसमें थे और ड्राफ्ट का "एवरी सिंगल पैरा, सैक्शन, टर्म" हमारे विचारों के मुताबिक बना। उस सारे ड्राफ्ट को हमने ही तैयार किया। असल में मैंने उसका अध्ययन 1938–39 में किया हुआ था। सन् 1948 में मैंने एक किताब भी लिखी थी जमींदारी उन्मूलन। सन् 1948 में जब पंत जी ने मुझसे कहा तो फिर हमने ड्राफ्ट कर दिया। रेवेन्यू मिनिस्टर हुकुम सिंह थे, उनको तो कोई रुचि नहीं थी। नैनीताल में कैबिनेट की मीटिंग हुई, जो ग्यारह दिन चली। उसमें रवेन्यू मिनिस्टर आये ही नहीं। मैं पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी था, मैं ही गया। यह पहली मिसाल होगी कि पार्लियामेंट्री सक्रेटरी कैबिनेट की मीटिंग में आये। वहां से बिल ड्राफ्ट होकर आया।

मनचन्दा: चौधरी साहब, क्या जमींदारी उन्मूलन का उद्देश्य बड़े जमींदारों को हटाकर जमीन सब में बराबर–बराबर बांटना था?

चरण सिंह: जमींदारी का अर्थ है "लैण्डलॉर्डिज्म"। पंजाब में तो "टेनेन्ट" को ही जमीदार कहते हैं, यह तो बिल्कुल "टेक्निकल" लफ्ज है। जमींदार – यानी जमीन को धारण करने वाला, "इवन सब–टेनेन्टस आर कॉल्ड जमींदार"। लेकिन हमारे यहां और दुनिया में जो माना गया है, वह है "लैण्डलॉर्डिज्म, नाट लैण्ड ऑनरशिप"। तो इसका मतलब यह है कि जो "टेनन्ट" थे, उनको मालिक बना दिया गया। उनके और सरकार के बीच जो "लैण्डलाई" था उसे हमने "इंटरमीडियरी" कहा है, उसे खत्म कर दिया है "एण्ड दी टेनेन्ट वाज ब्रॉट इनटू डायरेक्ट रिलेशनशिप विद दी स्टेट"। इस तरह से जो बड़े–बड़े "टेनेन्ट्स" थे, उन्होंने आगे जमीन "सब –

टेनेन्ट्स" को दे रखी थी; तो फिर हमने "टेनेन्ट–इन–चीफ" को भी हटाया, उनको भी कुछ मुआवजा दिला दिया।

"सब–टेनेन्ट" का सीधा सम्बंध राज्य से हो गया और हमने जो करोड़ों "ट्रेसपासर्स" थे, उनको भी "टेनेन्ट" ही मानकर "राइट ऑफ ऑनरशिप" दे दिया, जो किसी राज्य ने नहीं दिया। लोगों ने कहा ये तो "ट्रेसपासर्स" हैं, लेकिन हमारा विचार था कि वह "टेनेन्ट" हैं, और पटवारी तथा जमींदार दोनों ने आपस में मिलकर उस बेचारे को "ट्रेसपासर्स" बता दिया। उसे जमीन के मालिक की दया पर छोड़ दिया, वह जब चाहे, उसे बेदखल कर दे। किराया तो वह देता ही था पर वे उसे रसीद भी नहीं देते थे। हो सकता ह दो–चार प्रतिशत उसमें असली "ट्रेसपासर्स" हों लेकिन हमने फिर सभी को "सब – टेनेन्ट" मानकर उनको भी अधिकार दे दिया। अभी तक हमने जमींदार को "राइट आफ रिजम्पशन" नहीं दिया था। जमीदारों की दलील यह थी कि जब तक जमीन पर हमारा हक था, तो हमने किराये पर जमीन दी, अगर खुद खेती करना चाहते तो वापस ले सकते थे। उन्होंने उस वक्त कहा कि अब अंत में जब आप जमींदारी समाप्त करने जा रहे हैं, तो हममें से जो आदमी खुद खती करने के लिए अपनी जमीन लेना चाहें उनको जमीन वापस लेने का अधिकार होना चाहिए। इस बात को "प्लानिंग कमीशन" ने मान लिया। मैंने यह नहीं माना। दूसरे राज्यों ने "राईट आफ रिजम्पशन" दे दिया, तो उसका बड़ा नाजायज फायदा उठाया। बहुत से लोग अंग्रेजों के जमाने से "जैनूइन टेनेन्ट" थे, जिनके अधिकार पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुरक्षित थे, उनके अधिकारों को समाप्त कर दिया गया। लेकिन हमने किसी के साथ ऐसा नहीं होने दिया। हमारा जमींदारी उन्मूलन कानून हाईकोर्ट ने कभी "इनवेलिड" करार नहीं दिया। बाकी जगह तो "चैलेंज" हुआ लेकिन हमारा नहीं हुआ।

मनचन्दाः आपका उद्देश्य जमींदारी उन्मूलन का और एक तरह से जमीन "टेनेन्ट्स" को देने का था, उसमें आप कहां तक सफल हुए?

चरण सिंहः चरण सिंह रू उसमें हम पूरी तरह सफल हो गये। पहले तो उद्देश्य स्पश्ट होना चाहिए। हमने तो उस व्यक्ति को मालिक बना दिया, जो जमीन पर खेती करे। अब कोई तीसरी पार्टी हस्तक्षेप करके उसे बेदखल नहीं कर सकती, तो वह मालिक हो गया। मालिक होने से वह उसमें कुआँ बना सकता था, क्योकि जमीन उसकी हो गई। जब वह "टेनेन्ट" था तो उसमें न वह अच्छी खाद डालता था, न उसमें कुआँ बनाता था, न सिंचाई करता था, क्योंकि उसे भय रहता था कि न मालूम कब जमीन हाथ से चली जाए। दुनिया भर में जो "पेजेन्ट प्रोपराईटर" है वह किसी

भी परिस्थिति में एक "टेनेन्ट" से पर– एकड़ ज्यादा उत्पादन करता है। यह कहा जाता है कि श्ऑनरशिप टर्न्स लैण्ड इन्टू गोल्डश। एक पहला उद्देश्य तो यह था जो हमारे राज्य में ता पूरा हो गया। दूसरा यह था कि पहले श्टेनेन्टश बेचारे का कुछ "स्टेटस" नहीं था। अब उसे "स्टेटस" मिल गया। वह अपनी जमीन के टुकड़े का मालिक बन गया। तीसरा यह भी था कि .....।

मेरा तो इस मामले में समाजवादी नेताओं से बहुत मतभेद रहा। सभी जानत थे कि, "बाबू सम्पूर्णानन्द जी अपोज कन्फर्मेन्ट ऑफ राइट्स ऑन दीज पुअर पीपल सब टेनेन्ट एण्ड ट्रेसपासर्स" वह यह भी चाहते थे कि "राईट ऑफ रिजम्पशन" दे दिया जाए। काफी विरोध चला य यहां तक कि मेरे इस्तीफे की नौबत भी आ गई। उन्हें छब्बीस सफे (पन्ने) का नोट भी लिखा। तब जाकर पंत जी ने मेरी बात मानी, तब जाकर उनको (टेनेन्ट्स का) अधिकार मिला।

मेरा कहना यह कि भूमि सुधारों का एक फायदा यह होगा कि कम्युनिज्म य.पी. में कभी अपना सिर नहीं उठा सकेगा; और ऐसा ही हुआ। जहां – जहां कम्युनिज्म है, वहां भूमि सम्बंधी सुधार अच्छी तरह से किया ही नहीं गया। ये जो कांग्रेस के नेता थे, दरअसल वे ऊपर कुछ बात करते रहे, अन्दर उनकी किसी से कोई सहानुभूति नहीं थी। एक तो "लेजिस्लेशन" अच्छा नहीं बना, और जो बना भी उसको "ऑन दी स्पॉट" अच्छी तरह सेलागू नहीं किया। सिवाए यू.पी. के कहीं भी जमींदारी उन्मूलन...। वर्ल्ड बैंक के जा "कन्सलटेंट" थे, उन्होंने लिखा है कि बिहार में जमींदारी बिल्कुल वैसी ही है, जैसे पहले थी। एक और बात है, वह यह कि और एक–दो राज्यों को छोड़कर बाकी सब जगह मजदूरों की संख्या काश्तकार के मुकाबले यू.पी. से अधिक है। हमारे जो पांच राज्य हैं, इनमें मजदूरों की संख्या बहुत ज्यादा है।

मनचन्दाः औद्योगिक मजदूरों की या ...?

चरण सिंहः मैं कृषि मजदूरों की बात कर रहा हूँ। केरल, बिहार, आंध्र प्रदेश में बहुत ज्यादा हैं। बंगाल में भी सत्तर प्रतिशत होगी, इसी के आस–पास तमिलनाडु में भी होंगे, तमिलनाडु में भी अब थोड़ा–थोड़ा कम्युनिज्म ...। मुझे पहले नहीं मालूम था लेकिन जब एम. करुणानिधि के बयान निकले कि मुझे नक्सलवादी मारने को फिर रहे हैं, तब हमें मालूम हुआ कि नक्सलवादियों की "ब्रीडिंग ग्राउंड" तो वही है।

मनचन्दाः आन्ध्र में बहुत नक्सलवादी हैं?

चरण सिंहः आन्ध्र में हैं, तमिलनाडु में भी बहुत हैं।

मनचन्दाः जैसा आपने अभी फर्माया कि "लैण्डलॉर्डिज्म" खत्म कर दिया गया लेकिन जो भूमिहीन लोग थे, उनके बारे में भी क्या कुछ किया गया?

चरण सिंहः उनकी बावत कुछ नहीं हो सकता। ये जो "सीलिंग" की बात हो रही है, इससे उन बेचारों को जमीन नहीं मिलने वाली है।

मनचन्दाः उस वक्त जब आप थे, तब भी क्या "सीलिंग" का प्रस्ताव था?

चरण सिंहः उस वक्त भी "सीलिंग" लगाने का प्रस्ताव था। मैंने एक छोटी सी पुस्तिका लिखी थी, उसमें आखिरी अध्याय यही था कि "सीलिंग" होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए। लेकिन हमारे यहां– राजस्थान ओर असम – को छोड़कर– काश्तकार की संख्या अधिक है, कृषि मजदूर की सबसे कम है। तो बड़ी "होल्डिंग्स" बहुत कम थीं। जब हम "सीलिंग" लगात थे तो बहुत कम जमीन मिलती थी। मेरी उस वक्त यह राय थी कि "सीलिंग" न लगाओ लेकिन "लार्ज लैण्ड होल्डिंग्स" टैक्स लगा दिया। तीस एकड़ से जितनी ज्यादा जमीन किसी के पास होगी, उतना "रेट ऑफ टेक्सेशन" बढ़ता चला जायगा। उसका नतीजा यह हुआ कि यह दो ही साल चला, पचास–साठ एकड़ से ज्यादा जमीन कोई आदमी रख ही नहीं सकता था, उसको जमीन बेचनी ही पड़ती। उधर हमने यह भी कर दिया था कि साढ़े बारह एकड़ से ज्यादा जमीन कोई खरीद नहीं सकता। हमें जमींदार या तो टैक्स देता, टैक्स न देता तो बेच देता, किसी बड़े आदमी को वह बेच नहीं सकता था, सरकार को टैक्स मिलता रहता और सरकार कहीं "पिक्चर" मे न आती और "इन्डायरेक्टली इक्विटिबल डिस्ट्रीब्यूशन" हो जाता।

उन दिनों वी. टी. कृष्णमाचारी, जो प्लानिंग कमीशन के डिप्टी चेयरमैन थे, ने हमसे पूछा कि सब "सीलिंग" लगा रहे हैं, आप क्यों नहीं लगाते? तो मैं गया, मैंने उनको चार–पांच कारण बतलाये। उनको मैने बताया कि सबसे ज्यादा "कल्टिवेटर्स" हमारे यहां हैं, इसके अलावा बड़ी "होल्डिंग्स" की तादाद बहुत कम है। "सरप्लस लैण्ड" जो उपलब्ध होगी, वह बहुत कम होगी, फिर हम क्यों इस झंझट में पड़ें कि "कम्पनसेशन" दें और फिर जो जमीन हमें मिले वह कौन सी ली जाए, कोन सी न ली जाए। हम रद्दी जमीन मिलेगी, तो वह हम किसको तकसीम करें भूमिहीनों को करें या "अनइकोनॉमिक होल्डर" को करें। हमारे यहां तीन चौथाई तो "अनइकोनॉमिक होल्डर" हैं। उस वक्त तो मैंने कहा, इस झंझट में पड़ने से अच्छा हमने टैक्स लगा दिया है। उन्होंने कहा, अब ठीक है, आप "सीलिंग" न लगाइए। लेकिन बाद में फिर "सीलिंग" लग गई, नेहरूजी ने नागपुर में पास कर दिया।

मनचन्दाः यह किस साल में हुआ?

चरण सिंहः यह 1960 में लगी। ईमानदारी से इसे कोई लगाना नहीं चाहता था। यानी जो "रिकमन्डेशंस" थीं कि "सीलिंग" इतने इतने एकड़ पर हो, उसके लिए आगे की तारीख निश्चित कर दी। तब तक सब ने जमीनें तकसीम कर दीं, सबने छिपा दीं। ये तो बेमानी सी बात हुई। अगर ऐसा ही करना था, तो जब वह प्रस्ताव नागपुर कांग्रेस में पास हुआ था, उसी तारीख से लागू कर दते, क्योंकि उससे पहले तो लोगों को ख्याल नहीं था कि "सीलिंग" होने वाली है। लेकिन कोई भी "सीरियस" नहीं था। मैंने सीधा कहा कि इसकी जरूरत नहीं है।

मनचन्दाः जमींदारी उन्मूलन के बाद किसान सभाओं की क्या भूमिका थी?

चरण सिंहः किसान सभा की भूमिका "टेनेन्ट्स विज – आ – विज" जो "लैण्डलॉर्ड्स" भी थे, उनकी मागों को "प्रेस" करना और जो अन्याय करता था या बेदखली का जो कानून था, उसमें जो "लूप – होल्स" थे, जिससे जमींदार किसानों का शोषण करता था, बस उन केसों को वह उठाते थे। लेकिन जब जमींदारी उन्मूलन हो गया, तो कोई जमींदार या "टेनेन्ट" नहीं रहा, सब अपनी जमीन के मालिक हो गये।

मनचन्दाः लेकिन जब आपने "टेनेन्ट" को कुछ जमीन दे दी, तो वह भी तो आगे काम के लिए मजदूर रखेगा, तो राज्य ने मजदूरों के लिए क्या सुरक्षा दी?

चरण सिंहः वह हो नहीं सकती। ये जो इन्होंने (सरकार ने) "एग्रीकल्चरल मिनिमम वेजेज एक्ट" पास किया है, यह सब बेवकूफी की बात है। जहां मजदूर ज्यादा होंगे और किसान कम होंगे तो– ये तो "डिमांड" और "सप्लाई" की बात है– वहां मजदूरी कम मिलेगी। जहां कृषक मजदूर की तादाद कम होगी, वहां मजदूरी ज्यादा मिलेगी, जैसे हरियाणा में कृषक मजदूर बहुम कम हैं, वहां हरिजनों की आबादी भी बहुत कम है, इसलिए मजदूरी ज्यादा हो जाती है। जब ज्यादा मजदूरी पर भी मजदूर नहीं मिलते, तो वहां का किसान और उसकी (परिवार की औरतें कंधे से कंधा मिलाकर खेत में काम करते हैं। हमारे यू.पी. में ऐसा नहीं है। इसमें यह बात नहीं है कि वे अपनी औरतों से इतना सख्त काम लेना चाहते हैं, बल्कि उनकी मजबूरी है। आप हरियाणा पार कर लोजिए और मेरठ, आगरा डिवीजन में आ जाइये। हमारे यहां औरतें गांवों में या खेत में वह काम नहीं करतीं, जोकि हरियाणा में करती हैं। वह अपने पति के लिए, अपने लड़के की मदद के लिए खेत पर खाना पहुंचा देती हैं और काम का

बहुत ज्यादा जोर हुआ तो खेत से चारा काट लाती हैं। जो दूध देने वाले पशुओं को देखने का काम है वह तो उन्हीं की निगरानी में रहता है। यह जो "कॉटन पिंकिंग" — उन दिनों में "कॉटन" होती थी, अब तो खत्म ही हो गई है— के लिए घर की मालकिन, (किसान की पत्नी) मजदूरनियों को ले जाती थी और वह खुद भी कपास तोड़ती थी और निगरानी भी करती थी। इसके अलावा सिल्ला– यह संस्कृत का शब्द है, जैसे आपने गहूँ काटा तो उसकी बाली झड़ जाती हैं, तो उसकी "पिकिंग" का काम — और इस तरह के दूसरे काम तो हमारो औरतें करती हैं। हरियाणा में ईख खोदना या खलिहान में औरतों को काम करना पड़ता था। अब तो उनसे वहा भी नहीं कराते, क्योंकि अब बैलों के खुरों के जरिए "थ्रेशिंग" नहीं करवाते, अब तो "थ्रेशिंग" मशीन वगैरह हो गई हैं, लेकिन पहले तो औरतें ही करती थीं। पर हमारे यहां ऐसा नहीं था। पूरब की तरफ तो औरतें इतना काम भी नहीं करती थीं, क्योंकि वहां मजदूरों की तादाद बढ़ती चली गई। सामंतवाद की ज्यादा हवा थी। हमारी तरफ ता किसान "प्रॉपराइटर" ज्यादा थे, जमींदार बहुत कम थे। सब बराबर का मामला था, बड़े–छोटे का फर्क कम था, लेकिन य फर्क पूरब की तरफ बढ़ता चला गया। इधर बड़े–बड़े जमींदार होते चले गये। सामंतवाद की विशेषता यह है कि "मैन्युअल वर्क" को छोटा (हीन) माना जाता है, तो लिहाजा यहां स्त्रियों के काम का तो सवाल ही नहीं है। पुरुष भी काम नहीं करते थे। वह भी हल नहीं चलाते थे। वहां का ब्राह्मण, ठाकुर अपने हाथ से हल नहीं चलाता और अपने हाथ से कोई काम इसलिए नहीं करता कि समाज में उसे छोटा माना जायेगा और शादी नहीं होगी। यहां यह इतना इसलिए हो गया, क्योंकि यहां मजदूर बहुत ज्यादा हैं।

मनचन्दाः यानी "डिग्निटी ऑफ लेबर" नहीं है?

चरण सिंहः आखिर हल तो यह है कि चाह कृषि मजदूर हों, भूमिहीन हों या बेरोजगार हों, वे हो "इंडस्ट्री" में जाएं। ये जो "सीलिंग" की बात कर रहे हैं, यह कोई समस्या का हल नहीं है। ना ही इतनी जमीन है, चाहे उसका तीस एकड़ से बीस–बीस एकड़ कर दो, चाहे बीस का पन्द्रह कर दो, इतनी जमीन ही नहीं है। मान लो अगर सब के पास जमीन हो जाए, तो मुल्क जितना आज गरीब है, उससे और ज्यादा गरीब हो जायेगा। इतनी बात तो जरूर है कि अगर कुछ लोगों के पास ज्यादा जायदाद हैं, चाहे "अरबन प्रॉपर्टी" है, चाहे "रूरल प्रॉपर्टी" है और कुछ के पास कुछ नहीं या बहुत कम है, तो एक असंतुष्टता होती है। यह मनोवैज्ञानिक बात है। मान लो हम तीनों गरीब हैं, तीनों की झोपड़ी हैं, तो एक–दूसरे को देखेंगे,

तीनों गरीब हैं, कोई असंतुष्टता नहीं होती। लेकिन अगर एक के पास झापड़ी है और दूसरे का महल हो जाए और हमारी झोपड़ी आपके महल की दीवार के नीचे हो, तो असंतुष्टता होना स्वाभाविक है। तो इस दृष्टि से जिनके पास ज्यादा जायदाद है, बेशक ले लेनी चाहिए, लेकिन साथ ही यह याद रखना चाहिए कि "दैट इज नो सॉल्यूशन ऑफ दी प्रॉब्लम। यू आर सिम्पली बाइंग सम टाईम — दैट्स ऑल"।

अब पता नहीं हमारी प्रधानमंत्री इस बात को जानती हैं कि नहीं जानतींय और हमारे यहाँ क और मंत्री समझ रहे हैं या नहीं समझ रहे हैं लेकिन ये काम जितना ढोल बजा के हुआ है, (उससे) सबने अपनी जमीन तकसीम कर ली। अठारह एकड़ से ज्यादा किसी एक के नाम पर हिन्दुस्तान में जमीन नहीं है, बहुत कम पायेंगे। कानूनी तौर पर या संवैधानिक तौर पर आप उस जमीन को ले नही सकते। तो जो कुछ मिल सकती थी, वह भी नहीं मिली।

सबसे बड़ा नुकसान यह हो रहा है कि राजनीतिक दल यह तकसीम करो, वह तकसीम करो, यह करो, वह करो, ठीक है, "डू इट" लेकिन आप लोगों का ध्यान हटा रहे हैं। मान लो "बन्स सीलिंग हैज बीन इम्पोज्ड एण्ड व्हाटएवर लिटिल लैण्ड इज अवेलएबल हैज बीन डिस्ट्रीब्यूटिड एज इफ दी इकोनॉमिक प्रोब्लम ऑफ दी कन्ट्री वुड हैव बीन सोल्व्ड — फुलिश"। असली समस्या है "ग्रोथ ऑफ नॉन–एग्रीकल्चरल ऑकूपेशन", तो जो असली समस्या है उससे आप लोगों का ध्यान हटा रहे हैं। यदि इस पर ध्यान देते कि "नॉन–एग्रीकल्चरल ऑक्यूपेशन" कैसे बढ़ाएं, उसके लिए पूरी कोशिश होती और इसी के साथ एक प्रोग्राम यहां "लैण्ड सीलिंग" का भी रखते; "नाऊ दे पुट ऑल देअर एग्स इन वन बास्केट ऑफ लैण्ड डिस्ट्रीब्यूशन"; अब इन चीजों से कोई हल नहीं होने वाला। मान लो दो महीने बाद नये मुख्यमंत्री आ गये, उनकी सरकार बन गई या कोई दूसरी सरकार बन गई, "दे आर वैडिड टू लैण्ड डिस्ट्रीब्यूशन ... एक्च्वली दैट मेड सो डन्ट इन दी प्रॉब्लम", और वह ठीक ही है, लेकिन इससे समस्या हल होगी? सब लोग डिसइल्यूजन्ड" होंगे। यहां जो मजदूर हैं, उनको क्या मिलेगा, उनकी गरीबी कैसे हटेगी?

यहा आर्थिक नीति गलत है, उसमें बदलाव होना चाहिए और सबसे बड़ा समाधान वही है, जो गांधीजी न बतलाया था। वह कह गये थे कि यह होना ही नहीं चाहिए, मिलों को बन्द कर देना चाहिए। छोड़िये, बन्द न कीजिए, इतना "इनवेस्टमेंट" हो गया है, और सरकार वह कहां से लेगी? तो इनको कहो कि भई, तुम अपना सामान बाहर बेचो। एक साल में सारी समस्या हल हो जाती, पर कोई करना कहा चाहता है और ये सबसे बड़ी

समस्या है। इसमें जितना आप बड़ी "इंडस्ट्री" पर जोर देते जा रहे हैं, उतना ही "डिसपेरिटीज इन इन्कम आर वाईडनिंग, इन स्माल इंडस्ट्रीज डिसपेरिटीज गेट नैरोड"।

मनचन्दाः उनमें तो "ऑनरशिप" अपनी आ जाती है?

चरण सिंहः हॉ, "सेल्फ एम्प्लायमेंट" होता है। एक और बात है कि जनतंत्र में देश में जितने "सेंटर्स ऑफ डिसीजन्स" ज्यादा जायेंगे, समाज में उतना विकेन्द्रीकरण होगा।

मनचन्दाः गांधी जी विकेन्द्रीकरण चाहते थे?

चरण सिंहः हाँ, वह तो बेचारे कहते ही थे। मैं इस अर्थ में कह रहा हूँ कि आप अपनी छोटी सी मशीन के मालिक हैं, आपके पास छोटा सा औजार है, आप काम कर रहे हैं, चाहे हैण्डलूम है, चाहे पावरलूम ह, छोटी मशीन है तो हर बात में फैसला आपको करना है। आपके ऊपर कोई अफसर नहीं है। आप अपना फैसला करने में स्वतंत्र हैं। इससे "डेमोक्रेटिक ट्रेन्ड्स" को बढ़ावा मिलता है। कुछ अर्थशास्त्रियों का यह भी ख्याल ह कि छोटे–छोटे यूनिट्स में "पर यूनिट ऑफ कैपिटल इनवेस्टमेंट" में उत्पादन ज्यादा होता है। हालांकि इस पर कुछ मतभेद हैं, लेकिन अधिकतर अर्थशास्त्रियों का यह ख्याल है कि छोटे "एन्टरप्राइज" में "पर यूनिट ऑफ कैपिटल इन्वेस्टिड" उत्पादन ज्यादा है बनिस्पत बड़े "इन्टरप्राइज" के; तो अगर यह बात है तो धन भी बढ़ेगा, लोगों की आय में "डिस्पेरिटी" भी कम होगी। तीसरी बात है कि बेरोजगारी खत्म हो जायेगी और चौथी बात है कि वास्तविक प्रजातंत्र टिका रहेगा। देश में चाहे आप स्टील बनाइये, चाहे बिजली बनाइये, हवाई जहाज बनाइये, इनको कौन राकता है? लेकिन हम तो लाईन वहां खींचना चाहते हैं कि जो चीज छोटे स्तर पर बन सकती है उसे बड़े स्तर पर न बनाया जाए। लेकिन कोई इस समस्या की तरफ ध्यान देने को तैयार नहीं। "ऑल आर गाइंग बाई स्लोगन्स, देअर इज ए कॉम्पीटिशन ऑफ स्लोगन्स टुडे"।

मनचन्दाः चौधरी साहब, आप काफी सालों तक मंत्री रहे हैं। भ्रष्टाचार के सिलसिले में आजादी से पहले और आज क्या अन्तर हैय यानी भ्रष्टाचार बढ़ा है या कम हुआ है?

चरण सिंहः भ्रष्टाचार तो कई गुना बढ़ा है। इस बात के लिए मैं राजनीतिज्ञों को दोषी ठहराऊंगा, न कि अफसरों को। मेरा अनुभव यह है कि जैसी उनको लीडरशिप मिल जायेगी, वैसा ही वे काम करेंगे। वे बहुत

जल्दी "रिएक्ट" करते हैं। यहां बिल्कुल घोड़े और सवार वाली बात है। घोड़ा बहुत जल्दी पहचान जाता है कि जो सवार मेरी पीठ पर बैठ गया है वह सवारी करना जानता है या नहीं; नहीं जानता तो इसे गिरा दो। अगर वह समझता है कि ये जानता है, तो फौरन समझ जाता है। अगर आप अपने दोस्तों के लिए रियायत करानी चाहें तो वह अपनों के लिए भी रियायत लेगा और आपकी कमजोरी समझ लेगा, फिर आप न भी कहोगे तो भी ढूंढ–ढूंढ कर आपके रिश्तेदारों की दोस्तों की और आपकी पार्टी वालों की मदद कर देगा। आपकी जबान तो बद हो गई। भ्रष्टाचार ऊपर से शुरू होता है न कि नीचे से। अगर एक आदमी समाज में अच्छा हो और उसमे त्याग और बलिदान की भावना हो, तो उसका अच्छा असर पड़ता है।

मनचन्दाः लेकिन भ्रष्टाचार तो अंग्रेजों के समय से ही चला आ रहा है?

चरण सिंहः हॉ, चला आ रहा है, लेकिन कई गुना ज्यादा हो गया है। यह तो दुनिया में हमेशा होता रहा है, लेकिन जितना हमारे देश में रहा है या दक्षिण पूर्वी देशों में, जैसे फिलिपाइन वगैरह में है, उतना यूरोप के देशों में नहीं है। यह तो कोई दावा नहीं कर सकता कि भ्रष्टाचार कभी भी नहीं होगा लेकिन जापान मे बहुत कम भ्रष्टाचार है। फिर दूसरे नम्बर पर इंग्लैंड आता है, तीसरे नम्बर पर जर्मनी आता है। इजराइल के बारे में मैंने कुछ पढ़ा नहीं है, शायद इजराइल में भी हो, अमेरिका में कुछ है, इटली में बहुत है, फ्रांस में भी है, लेकिन जिस मात्रा में हमारे यहां है, और कहीं नहीं है। नेहरूजी खुद तो भ्रष्ट नहीं थे, लेकिन भ्रष्ट आदमियों पर उनको गुस्सा कुछ नहीं आता था। अगर शुरू में दो–चार मंत्रियों को निकाल देते, तो यह नौबत न आती। वह उन्हें जानत – बूझते हुए बरदाश्त करते रहे —तो यह जड़ है। अब यू.पी. की बात मैं कहना नहीं चाहता, क्योंकि मैं यहां का रहन वाला हूँ, यहां की राजनीति में हूँ, लेकिन किसी से मालूम कर लेना कि क्या हो रहा है। दुनिया में ऐसी मिसाल नहीं पायेंगे। क्योंकि बरदाश्त किया जा रहा है। मान लो मैं गृहमंत्री हूँ और रिश्वत लेने लगूं तो क्या आई.जी. ईमानदार रह जायेगा? अगर वह भी रह जाए तो फिर क्या नोचे के लोग रह जायेंगे? मेरा अपना तजुर्बा यह है कि दस–पन्द्रह प्रतिशत तो हमारे अफसर ऐसे हैं कि ऊपर के अफसर और मुख्यमंत्री, गृहमंत्री और राजनीतिक नेता चाहे कितने ही ईमानदार हों, फिर भी वह रिश्वत लेते रहेंगे, लेकिन पचहत्तर प्रतिशत ऐसे हैं, जो जैसा ऊपर से देखेंगे, वैसा ही वे अपने आपको ढाल लेंगे।

मनचन्दाः आप मुख्यमंत्री भी रहे हैं और मंत्री भी रहे हैं, तो "व्यूराक्रेट्स" से

"डील" करने में आपको क्या मुश्किलें आईं, क्योंकि उनकी नौकरी सुरक्षित होती है; और किस तरीके से आप काम लेते थे?

चरण सिंहः मुझको तो कभी कोई मुश्किल नहीं आई, यह ठीक है मंत्री "नान– एक्सपर्ट" होते हैं, लेकिन उन्हें अपने मंत्रालय के काम का ज्ञान होना चाहिए। अगर आप ऐसे आदमी को कृषि मंत्री बना दें, जिसे खरीफ और रबी की फसल में फर्क न मालूम हो तो फिर तो उसको "डायरेक्टर एग्रीकल्चर" उल्लू बना ही लेगा। मंत्री को अपने मंत्रालय से सम्बंधित मोटी–मोटी बातें तो समझनी ही चाहिए। अगर वह नहीं समझता है, तो वह "गाइड" नहीं कर सकता। ये मंत्री की योग्यता पर निर्भर करता है। सेक्रेटरी ने फाइल पर नोट लिखकर भेजा, हमने आँख बंद कर दस्तखत कर दिय, एक नोट पर दस्तखत किये, दो पर किये, अगर पांच नोटा पर बिना किसी बहस के बिना कोई पूछताछ किये दस्तखत कर दिये तो वह समझ जायेगा कि मंत्री को कुछ नहीं आता। इससे सेक्रेटरी की काम करने की क्षमता गिर जायेगी और "ही विल नॉट एग्जर्ट हिमसेल्फ"। वह सोचेगा मैं चाहे कुछ भी मेहनत करूँ, मेरे "बॉस" ने कोई सराहना नहीं करनी। अफसर भी ऐसे लोगों को नहीं चाहत। वे तो चाहते हैं कि उनको कोई "गाइडेंस" देने वाला हो– अगर "गाइडेंस" नहीं देता, तो कम से कम जो व लिख रहे हैं, उसको सराहने वाला हो। सलाम तो उनको करना ही पड़ता है, लेकिन उनके दिल में ऐसे लोगों के लिए आदर नहीं है। "इन्टलेक्च्वल सुपिरिऑरिटी" और "इक्वेलिटी" के साथ "मॉरल अथॉरिटी" भी चाहिए। सरकार बिना "मॉरल अथॉरिटी" के नहीं चलती है। अगर अफसर के दिल में मंत्री और मुख्यमंत्री के चरित्र के लिए आदर नहीं है...। कई मौके ऐसे आते हैं जहां आदमी भाँप जाता है कि मंत्री किस चरित्र का है। फिर कैसे सरकार अच्छी चलेगी? मैंने तो बहुत "ब्यूरोक्रेसी" देखी है, मैंने पुलिस भी देखी है, पुलिस विभाग बेचारा इतना बदनाम है, लेकिन मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं रही। कॉन्स्टेबिल से लेकर आई.जी. तक अपने को ऐसा ढाल लेते हैं कि चौबीस घंटे के अन्दर – अन्दर गृहमंत्री के स्वभाव का असर ऊपर से लेकर थाना स्तर तक दिखाई दे जाता है, इतनी "ऑर्गनाईज्ड फोर्स" है। अब आप उनको दोषी नहीं ठहरा सकते।

इंग्लैण्ड में तो "ब्यूरोक्रेसी" नहीं है। वहां काउण्टी काउंसिल हैं, जा सबसे महत्वपूर्ण आदमी है वह काउंटी काउंसिलर कहलाता है। काउंटी में निर्वाचित सदस्य हैं। वहां यह ढांचा नहीं है, नीचे लेखपाल – कानूनगो आदि नहीं है। लेकिन यहां भी उनको दोष देना मैं ठीक नहीं मानता। हम राजनीतिज्ञ उसके लिए दोषी हैं। यहां अगर कोई अफसर ईमानदारी से नोट लिखता है, सही मशविरा देता है, बेईमानी करने को तैयार नहीं है,

तो उसका तबादला कर दिया जाता है। अब ऐसे लोग बहुत कम हैं, जो "रिस्क" लें। वे अपने आपको ढाल लेते हैं कि भई, आप बेईमानी चाहते हैं तो बेईमानी सही, लेकिन उनमें भी कुछ ऐसे हैं जो अपना नोट ही नहीं लिखते और कुछ ऐसे हैं कि वे अपने विचार लिखित में तो देंगे, उसके बाद मंत्री चाहे कितनी बेईमानी का आर्डर दे, वे कार्यान्वित कर देंगे। लेकिन कई ऐसे मंत्री हैं, जो नाराज होते हैं कि हमने जुबानी कह दिया कि यह कर दो, तो करो। इसमें बड़ी परेशानी होती है। वह अफसर बेचारे मर मिटते हैं। वे समझते ह कि सैद्धांतिक रूप से गलत काम हो रहा है, लेकिन यदि वे अपनी राय देते हैं, तो नाराजगी होती है और फौरन तबादला हो जाता है। अपनी राय लिखने से उसको आत्मिक संतुष्टि होती है, आगे तो वह कर्तव्यबद्ध है, जो कुछ भी मंत्री हुकुम देता है, सही हो या गलत, वह कर देता है। लेकिन राय आपकी कुछ भी हो, आप लिख नहीं सकते, ऐसे प्रशासन कैसे चलेगा?

मनचन्दाः आपका जिन व्यक्तियों से सम्पर्क हुआ क्या आप उनके बारे में बतायेंगे, जैसे आचार्य नरेन्द्र देव?

चरण सिंहः मैं उनके बहुत थोड़ा सम्पर्क में आया। बहुत अच्छी आदमी थे, कभी प्रशासन तो उनके हाथ में नहीं रहा। विद्वान और चरित्रवान आदमी थे। ये दोनों बातें एक आदमी में बहुत कम मिलती हैं, उनमें दोनों बातें थीं। एक समाजवादी नेता के रूप में वह कुछ खास नहीं कर पाये, अपने विचारों का प्रचार करते रहते थे। उनकी मृत्यु के बाद मतभेद इतने बढ़ गये कि अगर वे जिन्दा रहते तो शायद ये मतभेद न होते। वैसे जयप्रकाश नारायण उनके स्तर के आदमी थे लेकिन वे इस दल को "डिसेक्शन" से रोक नहीं पाय। समाजवादी दल का "डिवीजन" और "सब–डिवीजन" हो गया। मुमकिन था कि नरेन्द्र देव होते तो रोक पाते। हम तो दिल्ली पी.सी.सी. में थे, यू०पी० के लोगों से कुछ वास्ता ही नहीं था और मैं शुरू से कोई इस तरह का आदमी नही था कि उन दिनों में पी.सी.सी. और ए.आइ.सी.सी. के ऑल इंडिया स्तर पर पहुंच गया होता। इसलिए उनसे मेरा सम्पर्क ज्यादा नहीं रहा।

मनचन्दाः लेकिन यह यू.पी. असेम्बली में तो थे?

चरण सिंहः यू.पी. असेम्बली में वह रहे ही कितना, मेरे सामने बहुत कम रहे, 1937 से 1939 तक, दो वर्ष ही रहे। फिर 1946 में चुनकर आये, मार्च 1948 में उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। उस वक्त ग्यारह आदमियों ने त्याग पत्र दिया था। जब कभी वह बोलते थे, तो अच्छा बोलते थे, लेकिन कम बोलते थे।

मनचन्दा: रफी अहमद किदवई के बारे में आपके क्या विचार हैं?

चरण सिंह: वह अच्छे प्रशासक थे, अच्छे व्यवस्थापक भी थे, गरीब आदमी की तरफ उनका रुख भी था। वह "रेड–टेपिज्म" को "कट डाउन" करना चाहते थे, लेकिन वह जिस तरह से ऐसा करना चाहते थे, उससे फिर समस्याएं पैदा होती थीं। अगर कुछ खराबी है, तो आप नियम बदल दें, जिससे काम में देर न हो। लेकिन नियम तो जैसे हैं वैसे ही रहे, परन्तु अफसर जो आप कहें वही माने कि हमने कह दिया है फलां जगह बिजली जरूर लगेगी लो अफसर कहता है कि उन लोगों ने पैसा जमा नहीं किया है आर मंत्री कहता है कि पैसा बाद में आता रहेगा, तुम्हें यह सब कल तक करना होगा — तो यह बात प्रशासन के लिए ठीक नहीं है। लेकिन उन्होंने इस तरह के बहुत से काम किये, तो लोगों ने कहा कि बड़े अच्छे हैं। लेकिन मैं समझता हूँ कि उससे एक बड़ी "डिससर्विस" हुई है अनुशासनहीनता के लिए किदवई साहब जिम्मेदार थे। व यू.पी. में पंतजी के खिलाफ अनुशासनहीनता फैलवाते थे। जब यहां से चले गये, तो उन्होंने जन कांग्रेस बनवाई, जिसके त्रिलोकी सिंह अध्यक्ष थे।

उन दिनों मैं वहां जमींदारी उन्मूलन योजना चला रहा था। "टेन टाइम्स दी रेंट" जमा करने की बात थी, वह "भूमि रिफंड" कहलाता था। उसका इन लोगों ने खुलकर विरोध किया। एसी और भी बातें थीं। उन सब के पीछे रफी साहब थे। फिर हमने उनको निकाला। इन लोगों को कांग्रस छोड़कर जाना पड़ा। उनकी पीठ पीछे नेहरू जी थे। वह बिना नेहरू जी के कुछ नही कर पाते लेकिन सब हुआ। ये सब "हार्ड फैक्ट्स" हैं। फिर इन्हीं लोगों ने टण्डन जी से लड़ने के लिए किसान मजदूर प्रजा पार्टी बनाई। उन्होंने और आचार्य कृपलानी ने इस्तीफा दे दिया, आचार्य तो वापस नहीं आये लेकिन रफी साहब वापस चले आये। तो कांग्रेस में धीरे–धीरे इस हालत तक अनुशासनहीनता हो गई, इसके लिए मैं रफी साहब को जिम्मेदार ठहराता हूँ।

सन् 1952 में मेरा ही विरोध करवाया। मैंने नेहरू जी को लिखा कि रफी साहब ने मेरे खिलाफ जो लोग हैं, उनकी मदद की। उन्होंने "एवीडेंस" मांगे। मैंने कछ "एवीडेंस" भी भेज दिये। तब नेहरू जी चुप हो गये, क्या माएने हुए? तो इस तरह से नेहरू जी ने सरदार पटेल, पन्त जी टण्डन जी– इन लोगों से लड़ने के लिए....। अरे भई, आप तो प्रधानमंत्री हो गये आपकी "अथॉरिटी" को कोई "डिसप्यूट" नहीं करता, गांधी जी ही आपको प्रधानमंत्री बना गये, वैसे तो एक–दो को छोड़कर सरदार पटेल को भी सारी वकिग कमेटी चाहती थी। आप लोग बन गये हो तो सबको मिलाकर चलो। सरकार बाद में बनी, शक्ति बाद में आई और काम में

विघ्न हम बड़े लोगों ने खुद डालने शुरू कर दिये। अब इसमें नीचे वालों का क्या कुसूर है।

मनचन्दाः चौधरी जी, पुरुषोत्तम दास टण्डन के बारे में कुछ बताइये?

चरण सिंहः हम सब लोग उनका बहुत आदर करते थे। जो लोग उनसे मतभेद रखते थे, वह भी उनका बहुत आदर करते थे। वह "कम्युनलिस्ट" बिल्कुल नहीं थे। टण्डन जी शायद बहुत अच्छे प्रशासक साबित नहीं होते, क्योंकि कोई भी निर्णय लेने में वह देर करते थे और अच्छा प्रशासक वही होता है जो जल्दी निर्णय ले। इलाहाबाद म्यूनिसिपैलिटी के अध्यक्ष के रूप में वह बहुत सफल रहे, ऐसा मैंने सुना है, मेरा कोई निजी अनुभव नहीं है। लेकिन वैसे मुझे लगता यह है कि अगर वह मुख्यमंत्री होत या और कोई मंत्री होते तो बेईमानी तो होती ही नहीं, इस बात में कोई शक नहीं, लेकिन हर बात में देर बहुत होती। वह एक बहुत अच्छे वक्ता थे, उन जैसा वक्ता तो हमारे यहां हुआ नहीं। शायद स्वराज होने के बाद ही कोई हुआ हो, जी. वी. मावलंकर भी हुए हैं, लेकिन वह बहुत अच्छे वक्ता थे। "हिज लाईफ वाज सरमन ऑफ सेक्रीफाईज"। उनके साथ नेहरू जी ने बहुत अन्याय किया।

मनचन्दाः सरदार पटेल से कभी मिलने का मौका मिला?

चरण सिंहः उनसे एक–दो दफा मेरी मुलाकात हुई।

मनचन्दाः सरदार पटेल के बारे में आप कुछ बताइये?

चरण सिंहः उनके बारे में मैं बहुत अधिक नहीं जानता सिवाए इसके कि जो कुछ मैंने पढ़ा या देखा। उनरो मेरी केवल एक–दो दफा मुलाकात हुई। रफी साहब की प्रेरणा से यहां जन कांग्रेरा बनी थी। मैंने बाइस विधायकों को लेजिस्लेटिव असेम्बली से निकाल दिया। उन दिनों मैं प्रदेश कांग्रेस पार्टी का जनरल सेक्रेटरी था तो वर्किंग कमेटी की और पार्लियामेंट्री बोर्ड की मीटिंग वहां हुई। उस वक्त सरदार थे।

मनचन्दाः यह किस वर्ष की बात है?

चरण सिंहः यह 12 या 13 फरवरी 1950 की बात है। उसमें और भी नेता जैसे मौलाना आजाद आदि आये थे, तब सरदार पटेल से मुलाकात हुई। उन्होंने पूछा कि इन लोगों के खिलाफ क्या आरोप हैं? हमारे पास फाईल थी। हमने बताया कि इन्होंने अनुशासन भंग किया है।

मनचन्दाः उस पर उनकी क्या प्रतिक्रया हुई?

चरण सिंहः जो होनी चाहिए थी, वही हुई। वह हमारी हर बात से सहमत थे। हमारे पास तो "डाक्यूमेन्टरी एवीडेंस" था। तो उससे कोई असहमत होता भी क्या। एक–आध ने उसको शडिफेंडश करने की कोशिश की भी.....।

मनचन्दाः इस सम्बंध में आपने पंडित जी और सरदार पटेल में क्या अन्तर पाया, क्योंकि पहले आपने बताया था कि जब कुछ आरोप लगाये तो जवाहरलाल जी ने नहीं सुना?

चरण सिंहः वे "पर्सनल चार्जेज" नहीं थे, वह तो नीतियां थीं। हाँ, वह निर्णय नहीं ले सके। सरदार के दिमाग में तो सब मामला बड़ा साफ रहता था।

मनचन्दाः एक प्रशासक के रूप में आपने दोनों में फर्क देखा?

चरण सिंहः हाँ।

मनचन्दाः "सरदार वाज श्रूड"?

चरण सिंहः बिल्कुल।

मनचन्दाः लेकिन यह कहा जाता है कि सरदार पटेल ज्यादा बातचीत नहीं करते थे?

चरण सिंहः हाँ, वह ज्यादा बात नहीं करते थे। हमें तो मणिबेन पटेल ने कह दिया था कि उनसे ज्यादा बात मत करना। उन दिनों हमने ध्यान रखा कि कम बातें की जाएं। इससे पहले मेरी उनसे भी मुलाकात हो जाती थी। एक बार 1948 में जब वह देहरादून ठहरे हुए थे, तो एक शख्स ने ऊपर के नेताओं के पास मेरे खिलाफ "चार्ज" लगाकर भेज दिया कि हमने चरण सिंह को पच्चीस हजार या पचास हजार रुपये रिश्वत दी है। उस पर राजाराम किसान का नाम लिख दिया। हमारे यहां वह गांव भी था और उस गांव में उस नाम का आदमी भी था। उन्होंने लिख दिया पच्चीस हजार रुपये हमने दिये हैं। फिर उसके पीछे भी राजनीतिज्ञ थे, अब म नाम नहीं लेना चाहता। मुझे ज्यादा तजुर्बा नही था। मैंने नालिश कर दी, एस. डी. एम. या डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट मेरठ के यहां पेशी हुई। जो दोषी थे उन्होंने अर्जी दे दी कि ये पेशी यहां नहीं होनी चाहिए, दूसरे जिले में होना चाहिए। फिर ये केस सहारनपुर के मजिस्ट्रेट के यहां चला गया। जब वह मामला पेश हुआ तो उस किसान ने कह दिया कि ये मेरे दस्तखत ही नहीं हैं, मैंने नहीं भेजे। फिर तो मुकदमा खारिज ही हो गया, बिल्कुल झूठी बात थी। इसकी एक कापी सरदार पटेल के पास भी भेज

दी थी। मैं गालिबन सरदार से मिलने के लिए सहारनपुर से देहरादून चला गया। अब बातों–बातों में उन्होंने पूछा कि कैसे हो, तो मैंने कहा कि मेरे साथ ऐसा हुआ है। उन्हाने कहा, "हाँ आयी तो थी एक शिकायत।" तब उन्होंने पूछा कि तुमने क्या किया? तो मैंने कहा कि मैन नालिश की और उस किसान ने अपने दस्तखत मानने से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा कि तुमने गलती की, तुम पहले उसको नोटिस देते कि क्या तुमने मेरे खिलाफ "चार्ज" पर दस्तखत किये हैं। जब वह इंकार करता, ता प्रेस में एक स्टेटमेंट निकाल देते। इस तरह परेशानी से बच जाते। उनकी बात बिल्कुल ठीक थी।

लार्ड माउंटबेटन 20 जून को भारत से गया तो माउंटबेटन को विदाई देने के लिए वह दिल्ली नहीं आये। जब वह यहां से चला गया तब 20 या 21 जून को दिल्ली आये। नेहरू साहब उसके मशवरे मानते थे। उससे कश्मीर और हैदराबाद के सब मामले उलझे। सरदार उन सब बातों के खिलाफ थे। अगर सरदार प्रधानमंत्री हो जाते, तो देश की नीति .....।

मनचन्दाः आप डा० सम्पूर्णानन्द के बारे में कुछ बताइए, एक प्रशासक और एक हिन्दू समाजवादी नेता के रूप में उनकी क्या भूमिका थी?

चरण सिंहः जहां तक समाजवादी होने की बात है, तो मैं आपको बता ही चुका हूँ कि "सब – टेनन्ट" को अधिकार देने का उन्होंने विरोध किया। यह तो मेरा निजी अनुभव है। मैं पुराने जमींदारों को या "टेनेंट्स – इन चीफ" को "राइट ऑफ रिजॅम्पशन" नहीं देना चाहता था। पर वह उसके भी हक में थे। दूसरी बात जो उनके मुत्तअल्लिक मेरे दिमाग में आती है वह यह है कि जातिवाद में उनका पूरा विश्वास था। मैं तो यह समझता हूँ कि जातिवाद ने देश को जितनी हानि पहुंचाई है, उतनी किसी चीज ने नहीं पहुंचाई। हमारी राजनीतिक पराधीनता, जो हजारों वर्ष से रही, उसका मुख्य कारण यही है कि हम विदेशियों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा नहीं बना सके और करोड़ों आदमी हमारा धर्म छोड़कर चले गये। कुछ तो दूसरे मजहब की अच्छी फिलॉसफी समझ कर गय होंगे, लेकिन ज्यादातर लोग अन्याय से तंग आकर गये। हमने उन्हें धक्का दिया है। यह तो जातिवाद का ही नतीजा है।

मेरा अपना ख्याल यह है कि जो पाकिस्तान बना है, इसमें भी पचास प्रतिशत जातिवाद का ही हाथ है। मुस्लिम लीग के नेताओं के भाषण में यही होता था कि यह (हिन्दू) अपने भाइयों के साथ बराबरी का बर्ताव नहीं करते, तो जब अंग्रेज चले जायेंगे, तो हमारे साथ कैसा बर्ताव करेंगे? हम तो दूसरा धर्म मानने वाले हैं। जितनी ग्राम पंचायतें हैं, चाहे म्युनिसिपैलिटी

हैं, असेम्बली हैं, उन सब में जातिवाद का असर है। योग्यता का तो सवाल ही नहीं रह गया है। आर्यसमाजी होने के नाते भी और वैसे भी, मैं तो जातिवाद के हमशा खिलाफ रहा हूँ। मैंने बहुत कोशिश की कि जातिवाद को समाप्त करने के लिए हम कदम उठायें। इसका सम्पूर्णानन्द जी ने बड़ा विरोध किया मसलन– मैंने कहा कि उच्च सरकारी पदों के लिए जो उम्मीदवार अर्न्तजातीय विवाह करें उन्हें वरीयता दी जाये हमारे यहां सत्रह हजार "गजेटेड" अफसर हैं, "सर्विसिस" की तादाद साढ़े पांच लाख है। सत्रह हजार में मुश्किल से सौ–दो सौ आदमी हर साल "गजेटेड सर्विसिस" में आते होंगे। यूनिवर्सिटियों में जाकर देखिये, उन लड़कों को अर्न्तजातीय विवाह में कोई एतराज नहीं है। यहां तक कि लड़कियों तक को नहीं है।

मैंने 1954 में नेहरू जी को तीन–चार सफे का खत लिखा कि आदमी में तीन ही चीजें मुख्य हैं– हाथ, दिल और दिमाग। जब हम सरकारी नौकरी के लिए किसी आदमी का चुनाव करत हैं, तो उसके दिमाग का भी इम्तहान हो जाता है, उसकी बुद्धि का भी इम्तहान हो जाता है, पढ़ाई का और शैक्षणिक योग्यता का भी, फिर प्रतियोगिता और उसके बाद मेडिकल परीक्षण भी होता है कि इतना सीना हो, कोई बीमारी न हो, ऊंचाई वगैरह–वगैरह, लेकिन दिल का क्या इम्तहान है? दिल का परीक्षण ज्यादा जरूरी है। उसी से ईमानदार और बेईमान का पता चलता है और दिल से यह सब तय होता है। एक आदमी बड़ा भारी विद्वान है, वह बेईमान भी हो सकता है और दूसरा आदमी अनपढ़ है फिर भी वह ईमानदार और जिम्मेदार हो सकता है। इन लोगों को आप प्रशासन की जिम्मेदारी दे रहे हैं।

हमारे समाज में जो सबसे बड़ा नुकता है, वह जातिवाद का है। अगर एक प्रशासक पक्षपाती हो तो वह इसके लिए योग्य नहीं है। आज हमारे समाज में जातिवाद ही दिलों को तंग करने का सबसे बड़ा कारण है। यह सहानुभूति को एक सीमा में बांध देता है। वह आगे चल कर सबकी एक दृष्टि स सेवा करेगा, इसका क्या सुबूत है? मेरे ख्याल से इसका सुबूत यही है कि वह लड़का अगर कहे कि दो सौ सैतीस बिरादरियों में से वह अपनी बिरादरी छोड़कर किसी में भी शादी करने को तैयार है, तभी उसे नौकरी में आने का मौका दिया जाए। मैंने नेहरू जी से कहा कि यह कर दीजिए। इसी वजह से सब समस्याए यहां पैदा हुई हैं। अगर आप नहीं मानेंगे तो ये देश कभी संगठित नहीं होगा। मैंने कहा आप के पास "पावर" है, आप लोकप्रिय हैं, तो सविधान में एक संशोधन करा दीजिए। मैंने यह भी कहा कि राष्ट्रीय एकता को भंग करने वाली तीन बातें हैं– धर्म, भाषा

और जातिवाद। धर्म के लिए तो कुछ हो नहीं सकता, उसकी वजह से तो हमने कीमत चुका दश तकसीम हो गया। अब रह गई भाषा और जाति, तो मैंने कहा कि "स्टेट सर्विसिस" के लिए तो बिरादरी के बाहर विवाह की बात जरूरी कर दीजिए और आल इंडिया सर्विसिस के लिए "इंटरलिंस्टिक ग्रुप" में विवाह करना लाजमी कर दिया जाए। मान लो अगर लड़का तमिल हो तो वह तमिल बोलने वाली लड़की से शादी नहीं करेगा, तेलगु से कर ले, पंजाबी से कर ले या बंगाली से कर ले। मैंने उनको लिखा कि इससे मुल्क बंध जायेगा और यह एकता लाने में बड़ो भारी बात साबित होगी। ये ही लोग समाज में बड़े लोग माने जाते हैं।

मैंने तो विधायकों के लिए भी लिखा था कि जो व्यक्ति चुनाव में खड़ा हो और इसके बाद शादी करे, वह अपनी बिरादरो में शादी नहीं कर सकेगा। लकिन नेहरू जी ने लिखा कि आप बात ता ठीक कहते हो लेकिन यह बहुत ही निजी मामला है। ठीक है कि शादी बिल्कुल निजी बात है लेकिन आज भी तो उस पर बंधन लगा रखे हैं, बताइये कि अगर चौदह वर्ष की लड़की से कोई शादी करना चाहे तो क्या कर सकता है। क्या हिन्दू "फर्स्ट कजन" से शादी कर सकते हैं।

हमारे यहां तो मॉ की तरफ से सात पीढ़ियां और बाप की तरफ से भी सात पीढ़ियां छोड़ कर शादी होती है। हम लोगों ने अब यह कर लिया कि कहीं पीढ़ियां गिनने में गलती न हो जाए, माँ–बाप का गोत्र छोड़कर शादी करते हैं। अगर हम बिना छोड़े शादी करें, तो शादी गैर–कानूनी है। मतलब यह है कि आज भी तो यह प्रतिबंध है। हम ऐसा हर एक के लिए तो नहीं कर रहे हैं कि भई सभी ऐसी शादी करें, यह तो उनके लिए कर रहे हैं जो जनसेवा के लिए आगे आते हैं। हम हर एक को कहां कहते हैं कि बी. ए. पास होना चाहिए, लेकिन जो पी.सी.एस. में जाना चाहेगा, उसे तो बी.ए. पास होना चाहिए। आप पांच फुट दो इंच रहें, लेकिन अगर आप पुलिस में जायेंगे तो पांच फुट छह इंच होना चाहिए। इसी तरह आप सह अपनी बिरादरी मे शादी कीजिए, यदि आपका "पर्सनल लॉ" इजाजत देता है, हमें कोई मतलब नहीं है; लेकिन अगर आप जनसेवा में आना चाहें, तो उसका .... सुबूत देना पड़ेगा। मेरे पास नोट्स हैं, जो मैंने पन्त जी को और सब को लिखे।

मनचन्दाः सम्पूर्णानन्द जी को?

चरण सिंहः सम्पूर्णानन्द जी को तो नहीं लिखे, वह तो शिक्षा मंत्री थे। मैंने उनसे कहा कि चलिए अगर ये बड़ा मुश्किल है, तो इतना ही कर दीजिए कि कम से कम शिक्षण संस्थाओं में, जहां पर बिरादरियो का नाम

जुड़ा हुआ है, उनके लिए आदेश दे दीजिए कि ऐसी संस्थाओं को सरकार आर्थिक सहायता नहीं दगी।

मनचन्दाः जैसे जाट कालेज या ब्राह्मण कालेज या वैश्य कालेज हुआ?

चरण सिंहः हॉ, क्योंकि इससे बच्चों के दिमाग में वही जातिवाद का जहर आ जाता है, लेकिन इस पर भी सम्पूर्णानन्द सहमत नहीं हुए।

मनचन्दाः एक तरफ तो वे समाजवादी थे और दूसरी तरफ ये सब कर रहे थे, तो आप ये विरोधाभास किस तरह "रिकन्साइल" करेंगे?

चरण सिंहः मेरे पास लिखित सुबूत हैं। अब ये परमात्मा ही जाने कैसे करते थे, उन्हीं से पूछो। बहुत सी बातें हैं। कहां तक आपको सुनाऊँ। वह एक अच्छे प्रशासक नहीं थे।

मनचन्दाः लेकिन पन्त जी के जाने के बाद सम्पूर्णानन्द जी मुख्यमंत्री बने, उस संघर्ष के बारे में आपके क्या ख्याल हैं?

चरण सिंहः उस वक्त अगर टण्डन जी आ जाते तो .....अब क्या कहें टण्डन जी वैसे आदमी नहीं थे। हम चाहते थे कि टण्डन जी आ जाएं, पर वह आये ही नहीं। अगर वह एक दिन पहले भी यहां आ जाते और कह देते कि मैं मुख्यमंत्री बनना मंजूर करता हूँ तो मैं समझता कि ...। वह इतने अच्छे प्रशासक बेशक नहीं होते, लेकिन उनका इरादा अच्छा करने का होता। काम में देर चाहे होती लेकिन असेम्बली में अपना कोई अच्छा सा डिप्टी रख लेते और किसी को काम दे देते।

मनचन्दाः सम्पूर्णानन्द जी के बारे में मैंने सुना है कि वह श्ब्यूरोक्रेट्सश से या अपने जूनियर से काम लेना नहीं जानते थे?

चरण सिंहः हॉ, वह नहीं जानते थे। उन्हें आदमियों की पहचान नहीं थी। मैंने जमींदारी उन्मूलन का काम किया, अब मुझे अपने मुंह से नहीं कहना चाहिए कि वह हिन्दुस्तान में एक नम्बर का काम था। दूसरे राज्यों के मंत्री यहां काम देखने आये। गोपीनाथ, जो बाद में असम के मुख्यमंत्री हो गये, वह भी यह काम देखने आये

मनचन्दाः हॉ, वह अपने नाम के साथ बारदोलाई लगाते थे?

चरण सिंहः हॉ, वह यहां आये। मैंने उनसे कहा कि आप कानपुर डिस्ट्रिक्ट में काम देख आइये, वहां "कन्सॉलिडेशन ऑफ होल्डिंग्स" चल रहा है। जब वह वहां गये तो वहां खबर हो गई कि मैं आ रहा हूँ। वहां

बीस हजार आदमी इकट्ठा हो गये। अब वह यह देखकर भौचक्के रह गये। वहां अफसरों ने बताया कि यहां खबर यह थी कि हमारे "रेवेन्यू मिनिस्टर" आ रहे हैं, आप आये हैं, बड़ी अच्छी बात है। वह जब वापस आये तो उन्होंने बताया कि आपके यहां तो यह हाल था। मैंने कहा मैंने जो कुछ भी किया है वह गांव तक ले गया हूँ, इतनी योग्यताएं बनाई हैं, इतना काम हुआ है और मैंने गांव–गांव में अलख जगा दिया है।

जिस वक्त पंत जी चले गये, तो सम्पूर्णानन्द जी ने मुझसे कहा कि तुम "रेवन्यू डिपार्टमेंट" छोड़ दो। "रेवेन्यू" और "एग्रीकल्चर" दोनों मेरे पास थे। मैंने कहा कि "रेवेन्यू" तो नही छोडूंगा, "एग्रीकल्चर" छुड़वा लीजिए। कोई आदमी जो कैबीनेट में आठ साल मंत्री रह चुका है और उसको यह पता न हो कि किसने क्या किया है? "रेवेन्यू" क्या है और "एग्रीकल्चर" क्या है? इस आदमी ने यहां क्या सामाजिक क्रांति करवा दी? मेरा माथा ठनका कि अब सरकार अच्छी चलने वाली नहीं है। उन्हें प्रशासन का कुछ नहीं मालूम था। अगर उस वक्त मुखालिफ से भी पूछते कि "रेवेन्यू मिनिस्टर" कौन होना चाहिए ता वे भी कहते कि चरण सिंह। कभी–कभी क्या होता था कि मेरा समय "डिवेट" में खत्म हो गया और अभी बोल रहा हूँ, तो मेरे मुखालिफों ने भी कहा कि दो घंटे समय बढ़ना चाहिए, हम चरण सिंह को सुनना चाहते हैं। लेकिन सम्पूर्णानन्द जी ने मुझे कहा कि "रेवेन्यू" छोड़ दो। मैं सभाओं में पांच–पांच घंटे बोला हूँ।

मनचन्दाः अपने विषय पर तो आपका "होल्ड" था न।

चरण सिंहः अब रेवेन्यू जो इतना "ड्राई" विषय है, उसको मैंने इतना रुचिकर बना दिया था कि लोग उठकर नहीं जाना चाहते थे। ठीक है सम्पूर्णानन्द विद्वान थे, इसमें कोई शक नहीं, भले आदमी थे, लेकिन प्रशासन में तो.....।

मनचन्दाः चौधरी साहब, एक जात्ती सवाल है– आम तौर पर यह कहा जाता है कि आप जाट इलाके से आते हैं और आप जाटों के ही नेता हैं, तो जाटों के लिए आपके दिल में कुछ ज्यादा प्यार ओर मोहब्बत है, बनिस्पत दूसरी जातियों के, इसके बारे में आप कुछ बतायेंगे?

चरण सिंहः मुझ पर यह बहुत गलत चार्ज है और इसके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण है। मेर ऊपर जो लोग यह चार्ज लगाते हैं, वे मुझे यह तो कह नहीं सकते कि मैं बेईमान हूँ, नाकाबिल हूँ या मैंने कुछ काम नही किया। लेकिन मेरा उनसे मतभेद है, तो उनको लगता है कि उनका "इन्ट्रेस्ट" मैं "सर्व" नहीं करता। अब अपना कसर तो कोई बताता नहीं है, "प्राइवेट

लाइफ" में ही नहीं बताता तो "पब्लिक लाइफ" में तो बिल्कुल नहीं बताता। लिहाजा उन्हें मेरा कोई कसूर तो निकालना ही है और हिन्दू समाज में ये जातिवाद का चार्ज ऐसा है, जिस पर बिना तहकीकात के दूसरा फौरन यकीन कर लेगा। इसके पीछे चाल है। अब मैं आपको कुछ "फिगर्स" बताता हूँ। मसलन यह कहा जाता है कि बी.के.डी. (भारतीय क्रांति दल) जाटों का दल है। हमारी साठ संस्थाए हैं शहरों और जिलों में चौव्वन जिले हैं, सोलह शहर हैं– लेकिन हमने पहाड़ के जो जिले हैं, वहां संस्थाएं नहीं बनाईं, वहां मेरा जाना नहीं हुआ। कांग्रेस के सत्तर शहर और जिला संगठन हैं। साठ में तीन के अध्यक्ष जाट हैं। उनके यहां सत्तर में उन्तीस ब्राह्मण हैं और मेरे यहां तो सबसे ज्यादा यानी सोलह ब्राह्मण हैं, तेरह ठाकुर हैं, आठ अहीर हैं और बिरादरियों को छोड़ देते हैंय अगर साठ में तीन जाट हैं, तो संगठन जाट और सत्तर ब्राह्मण में उन्तीस ब्राहण हैं तो वह ब्राह्मण संगठन नहीं है।

अब दूसरी बात लीजिए हमारा जो कांग्रेस के साथ गठबंधन था, उसमें चादह कैबिनेट और स्टेट मंत्री थे, मुझे मिलाकर दो जाट थे। बाद में त्रिलोकी सिंह की सरकार बनी तो ग्यारह मिनिस्टर हुए, उसमें कैबिनेट मिनिस्टर और स्टेट मंत्री थे, उनमें एक जाट था, यानी ग्यारह में एक जाट था। कांग्रेस की मिनिस्ट्री में तीन स्टेट मंत्री और कैबिनेट मंत्री थे तो तीस में तेरह ब्राह्मण हैं, वह ब्राह्मणों का पक्ष नहीं करते और चौदह में दो या ग्यारह में एक जाट हो जाए तो मैं जाटों का पक्ष लेता हूँ। मेरठ डिवीजन में तीन जिले हैं जहां जाटों की आबादी है– मेरठ, मुजफ्फरनगर और बुलंदशहर। मेरठ में बारह प्रतिशत जाट, सात प्रतिशत ब्राह्मण, पांच प्रतिशत राजपूत, पांच प्रतिशत गूजर और तीन प्रतिशत त्यागी हैं। त्यागियों की सबसे कम संख्या है। बारह प्रतिशत जाटों में मुझे मिलाकर दो टिकट दिये, सात प्रतिशत ब्राह्मण को दो दिये, पांच प्रतिशत गूजरों का दो दिये, तीन प्रतिशत त्यागियों को एक दिया।

मनचन्दाः यह कांग्रेस के वक्त की बात थी?

चरण सिंहः नहीं, उस वक्त तो मेरे हाथ में देना ही नहीं था। ये तो अब की बात है। मजफ्फरनगर की बात लीजिए। ग्यारह प्रतिशत जाट और साढ़े चार प्रतिशत ब्राह्मण, पौने चार प्रतिशत गूजर, पौने चार प्रतिशत ठाकुर और पौने दो प्रतिशत त्यागी। सन् 1931 की "सेंसस" में बिरादरियों का प्रतिनिधित्व इस प्रकार है रू मुजफ्फरनगर में कोई नौ लाख की या नौ लाख से कम आबादी थी। उसमें उस वक्त छियानबे हजार जाट, इकतालिस हजार ब्राह्मण, सैंतीस हजार गूजर, सैंतीस हजार

राजपूत, पन्द्रह हजार त्यागी और छियानब हजार जाट थे। इकतालिस हजार ब्राह्मणों को एक टिकट, तैंतीस हजार गूजरों को एक टिकट, तैंतीस हजार राजपतों को एक टिकट और पन्द्रह हजार त्यागियों को एक टिकट। कांग्रेस में हमेशा जाट को दो टिकट मिलते रहे। ब्राह्मण को कभी टिकट नहीं मिला। लेकिन मैंने एक जाट को, एक ब्राह्मण को टिकट दिया। मैं दो जिलों की आपको बताता हूँ। सारा प्रशासन ब्राह्मण के हाथ में है। मुझे किसी बिरादरी के अफसर से शिकायत भी नहीं है, कुछ को छोड़कर। ये राजनीतिज्ञ ही सब ऐसी बातें अपने मन में लाते हैं और गढ़ते हैं। और यहां शिक्षित लोग हैं, वे जानते हैं कि जाति से "मोटीवेट" नहीं होना चाहिए।

अब मुझे बहुत तकलीफ हो रही है, जब मैं बिरादरी का नाम आपसे ले रहा हूँ लेकिन जो तथ्य हैं वह लोगों के सामने आने चाहिए। यहां सैंतालिस प्रतिशत आई.पी.एस. ब्राह्मण हैं, और चालीस प्रतिशत डी.आई.एस.पी. और एक तिहाई पी.सी.एस. और एक तिहाई आई.ए.एस. ब्राह्मण आये हैं। व अपनी योग्यता से आयें हैं, इसमें मुझे कोई शिकायत नहीं है। लेकिन अगर दो प्रतिशत जाट हैं और वे भी पहल के आये हुए हैं, तो उनमें से अगर कोई कमिश्नर हो गया, कलेक्टर हो गया या अगर किसी जाट अफसर का "प्रमोशन" हुआ, तो शोर मच गया। चौव्वन जिलों में एक अफसर "प्रमोट" होकर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट हुआ और मैंने उसकी एटा में "पोस्टिंग" कर दी। मैंने उसकी शक्ल भी नहीं देखी थी, तो वहां के कांग्रेस वाला ने कहा कि सब जाट भर्ती कर दिये। इधर पूर्व में कहते हैं कि अहीरों की पार्टी है। अहीर ब्राह्मण के करीब–करीब बराबर हैं। हरिजनों के बाद हमारे यहां सबसे बड़ी बिरादरी ब्राह्मणों की है। फिर अहीर हैं, लेकिन ये बेचारे बड़े दबे हुए हैं। उनको जमींदारी उन्मूलन से बहुत फायदा हुआ है। शिक्षा बेशक उनके पास कम है। अब 1937 से 1967 तक किसी अहीर को मंत्री नहीं बनाया था। मैंने 1967 में सबसे पहले एक अहीर को मंत्री बनाया। अहीरों के बाद ठाकुर हैं, ठाकुरों को कोई शिकायत नहीं, वे हर जगह नौकरी में राजनीतिक जीवन में ठीक हैं। उनके बाद कुर्मी आते हैं। उनकी भी बहुत बड़ी बिरादरी है, कभी कुर्मी मंत्री नहीं बना था, तो मैंने एक कुर्मी को मंत्री बनाया। एक अंसारी को बनाया। जो मुस्लिम जुलाहा हैं, वह कभी नहीं बना था, उसे उपमंत्री बनाया। पासी हरिजना में एक बड़ी भारी बिरादरी है– चमार के बाद पासी हैं जो ये बड़े बहादुर होते हैं। लेकिन गरीब हैं, मैंने पासी को मिनिस्टर बनाया। मैंने कानपुर के मनोहर लाल को, जो एक केवट यानी मल्लाह था, "स्टेट मिनिस्टर" बनाया। वह एम.ए. था। एक अहीर को "मेम्बर, पब्लिक सर्विस कमीशन" बनाया। अब यह कहा जाता

है कि मैं जातिवाद को बढ़ा रहा हूँ। अब दो या तीन बिरादरियों की अगर हर जगह "मोनोपली" हो, तो बताइये क्या वह जनतंत्र है? क्या उनके साथ न्याय हो रहा है? अगर योग्य लोग हैं. तो उनको भी मौका मिलना चाहिए। इसलिए मेरे ऊपर यही चार्ज लग रहा है। मैं आपको पहले बता चुका हूँ कि मैंने जवहरलाल जी को पत्र लिखा था कि जातिवाद मिटाने का यही रास्ता है और वह तैयार नहीं हुए। एक भी मुख्यमंत्री तैयार नहीं हुआ। पंतजी, सम्पूर्णानन्द जो, सी. बी. गुप्ता जी भी तैयार नहीं हुए, कोई तैयार नहीं हुआ। जब मैं 3 अप्रैल 1967 को मुख्यमत्री बना तो मैंने पहला काम यह किया कि 6 अप्रैल को कैबिनेट की मीटिंग की। मैंने पहले से चीफ सेक्रेटरी को कह दिया था कि इस सिलसिले में एक नोट ले आना कि हम शैक्षणिक संस्थाओं के नाम से बिरादरी का नाम हटाना चाहते है। वह ले आये, उसमें सबसे पहले हमने यह किया कि 30 जून 1967 तक जो संस्थाएं बिरादरी का नाम नहीं हटायेंगी, सरकार उन्हें आर्थिक सहायता नहीं देगी। लिहाजा सबने नाम बदल दिये। जिस आदमी का यह दृष्टिकोण रहा है वह तो जातिवाद का समर्थक और जो लोग जातिवाद को प्रोत्साहन देते हों, वे यह चार्ज लगाएं तो यह मेरी समझ में नहीं आता, मैं क्या करूँ? जब ये लोग बिरादरी के नाम पर लोगों को सजा दे रहे हैं, "रिवर्टश कर देते हैं, "ट्रांसफर" कर देते हैं, "प्रमोशन" नहीं देते। अब यह भी हो गया है कि अगर कोई जाट चाहे छोटे से छोटा अफसर हो पर जो बी.के. डी. से जुड़ा है, तो उसका फट से तबादला या इन्क्वायरी हो जाती है। अब मैं इस बात को दावे से कहता हूँ कि मुझे बतला दिया जाए कि मैंने बिरादरी के नाम पर किसी अफसर का ट्रांसफर तक किया हो। मेरठ सबसे बड़ा जिला है। मेरी तहसील में दो सब–इन्सपेक्टर जाट हैं, तीन सब–इंसपेक्टर ब्राह्मण हैं, कुल पांच थाने हैं, इन तीनों के बारे में मुझसे एक आदमी ने कहा कि तीनों ब्राह्मण हैं, एक खेकड़ा का है, एक बागपत का है, एक बड़ोतरी का है। मैंने कहा काम कैसा कर रहे हैं, उन्होंने कहा अच्छा कर रहे हैं। मैंने कहा उन्हें वहीं रहने दो। अब जाटों में जा पढ़े–लिखे लोग हैं, उनमें यह भावना आ गई कि चौधरी साहब की वजह से हम मारे जा रहे हैं। उन्हें खराब दृष्टि से देखा जाता है, उनका "प्रमोशन" नही होता, उनको सजा दी जाती है।

एक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की बात सुनाता हूँ, मुझे यह बात एक कांग्रेसी ने सुनाई थी, वह जाट था और एम.पी. का टिकट कांग्रेस से चाह रहा था, वह उसको मिला नहीं। उसने बताया कि एक तहसील के नायब तहसीलदार का तबादला हो गया। तहसीलदार उस नायब तहसीलदार से खुश था और वहां की जनता भी बहुत खुश थी, लेकिन कुछ कांग्रेसियों

ने उसका तबादला करा दिया। अब किसने कराया, यह तो मुझे याद नहीं लेकिन उस कांग्रेसी ने मुझे बतलाया कि मैंने यह कोशिश की कि उसका तबादला रुक जाए। "आर्डर" हो गया था। नायब तहसीलदारों का तबादला एक जिले से दूसरे जिले में कमिश्नर करता है, तो वह कमिश्नर के पास गये, कमिश्नर ने आर्डर रोक दिया, उसने कहा कि उस नायब तहसीलदार को फिर वहीं भेज दिया जायेगा। लेकिन डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट नहीं माना। वह डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पास गये और उसने अध्यक्ष कांग्रेस मंडल कमेटी के नाम लिख दिया। वह वहां गये, उनसे कहा कि कमिश्नर साहब ने तबादला "कैंसिल" कर दिया है, आपने उसकी "पोस्टिंग" क्यों नहीं की? वह बोले वह तो जाटों का इलाका है और वह जाट है। उन्होंने कहा जाट है तो क्या बात है। अगर यह कानून हो तब तो ठीक है, सब जगह लगाइये। जब उस नायब तहसीलदार का काम अच्छा है, ईमानदारी का है, किसी के साथ पक्षपात नहीं करता, अभी थोड़े दिन हुए आया है, लेकिन वह नहीं माने। उसने कांग्रेस नेता ने कहा, साहब मैं तो ऐसे ही बहस कर रहा था, वह यादव अहीर है, अपने नाम के साथ यादव नहीं लिखता है। उस बात पर भी वह नहीं माने, उन्होंने कहा वह तो एक ही बात हुई। इनके बहुत कहने पर उन्होंने कहा कि मैं आपका ही तो काम कर रहा हूँ। हम कांग्रेस वाले चाहते हैं कि जाट, अहीर को सजा दी जाए या उनके साथ बराबरी का बर्ताव या इंसाफ न किया जाए। अन्त में उस आदमी का तबादला शहर में कर दिया। यह हाल है। ऐसी हजारों मिसालें हैं। अगर आप दो दिन "स्पेयर" कर सको तो मेरे साथ आजमगढ़ चलो, वहां एक भी जाट नहीं है लेकिन आप देखेंगे कि लोगों की क्या प्रतिक्रिया है। किस तरह से वे हजारों की तादाद में आयेंगे, पचास–पचास हजार की तादाद में। मैं तो अब सत्ता में नहीं हूँ और मेरे पास उन्हें देने के लिए कुछ नहीं है। वहां उनके साथ अन्याय हो रहा है। मैं मदद नहीं कर सकता और वहां जाट एक भी नहीं है। तो किन वजहों से जनता मेरे साथ है, अब मैं बतलाना नहीं चाहता हूँ।

चरण सिंह उत्तर प्रदेश में कैबिनेट मंत्री, १९५०
Charan Singh as Cabinet Minister in Uttar Pradesh, 1950

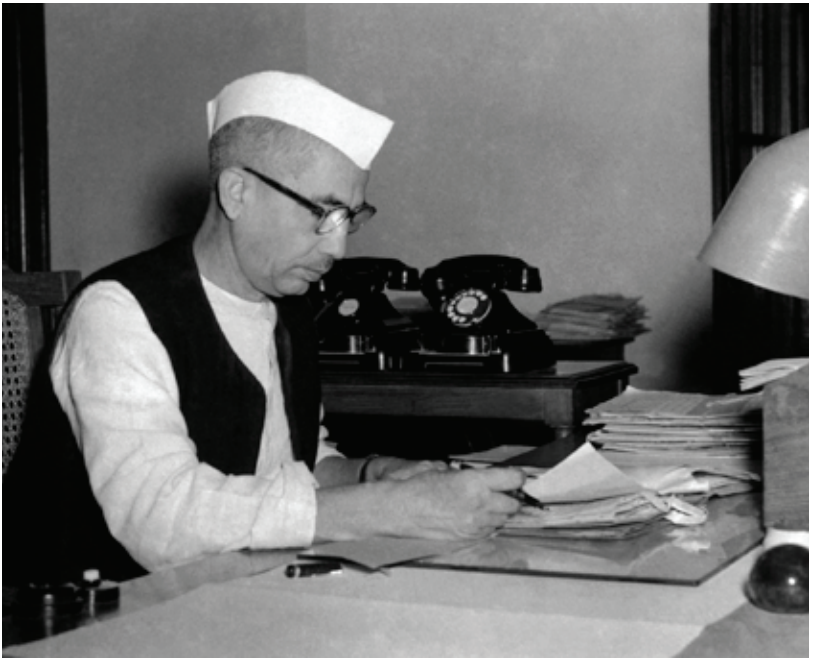

चरण सिंह गृह और कृषि मंत्री उत्तर प्रदेश, १९६०
Charan Singh as Home Agriculture Minister Uttar Pradesh, 1960

चरण सिंह, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, १९६७
Charan Singh as Chief Minister Uttar Pradesh, 1967

उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल, चौधरी चरण सिंह पांचवें से दायें, ३ अप्रैल १९६७
Uttar Pradesh Cabinet, Chaudhary Charan Singh 5th from right, 3 April 1967

अहिरौली गांव में चरण सिंह, २३ दिसंबर १९६७
Charan Singh at Ahirauli village, 23 December 1967

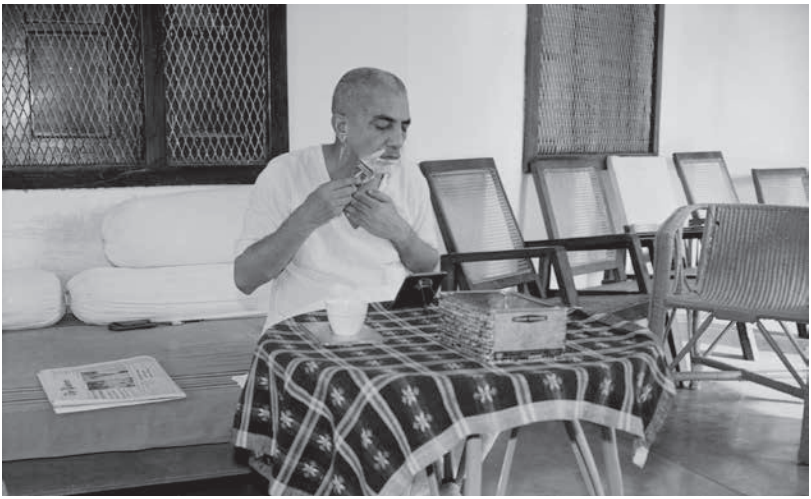

मॉल रोड के घर पर हजामत बनाते हुए चौधरी चरण सिंह, १९६७

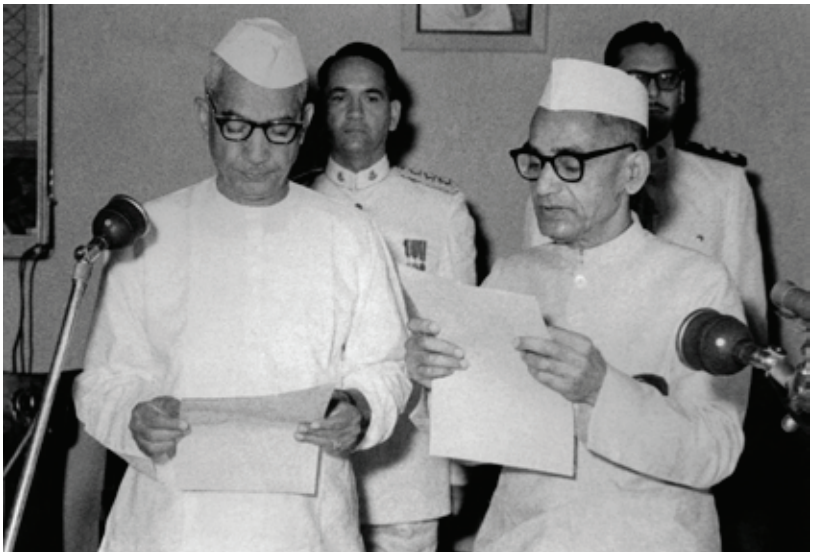

चरण सिंह को राज्यपाल विश्वनाथ दास द्वारा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री
के रूप में शपथ दिलाते हुए, ३ अप्रैल १९६७
Charan Singh being sworn in as Chief Minister of Uttar Pradesh
by Governor Biswanath Das, 3 April 1967

चरण सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में राजभवन से विधान सभा
तक पदयात्रा करते हुए, ३ अप्रैल १९६७
Charan Singh as Chief Minister Uttar Pradesh walking from
Raj Bhawan to Vidhan Sabha, 6 April 1967

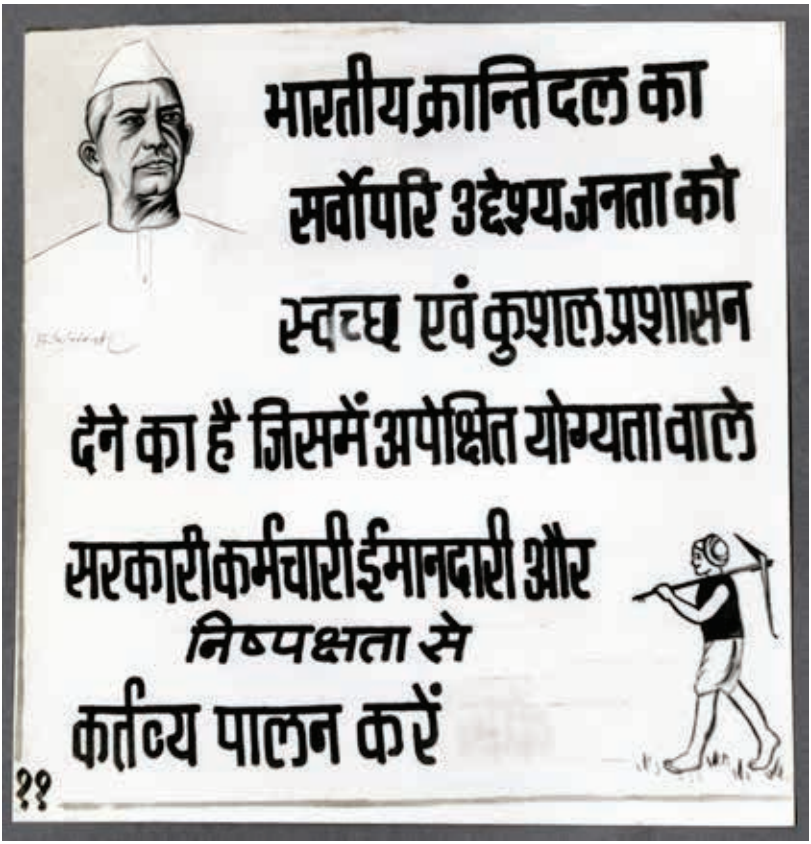

भारतीय क्रांति दल का सचित्र राजनीतिक घोषणापत्र, १९६८, पृष्ठ 11
1968 Pictorial Political Manifesto of Bharatiya Kranti Dal pg 11

भारतीय क्रांति दल का सचित्र राजनीतिक घोषणापत्र, १९६८, पृष्ठ १२
1968 Pictorial Political Manifesto of Bharatiya Kranti Dal pg 12

भारतीय क्रांति दल का सचित्र राजनीतिक घोषणापत्र, १९६८, पृष्ठ ३५
1968 Pictorial Political Manifesto of Bharatiya Kranti Dal pg 35

भारतीय क्रांति दल का सचित्र राजनीतिक घोषणापत्र, १९६८, पृष्ठ ४४
1968 Pictorial Political Manifesto of Bharatiya Kranti Dal pg 44

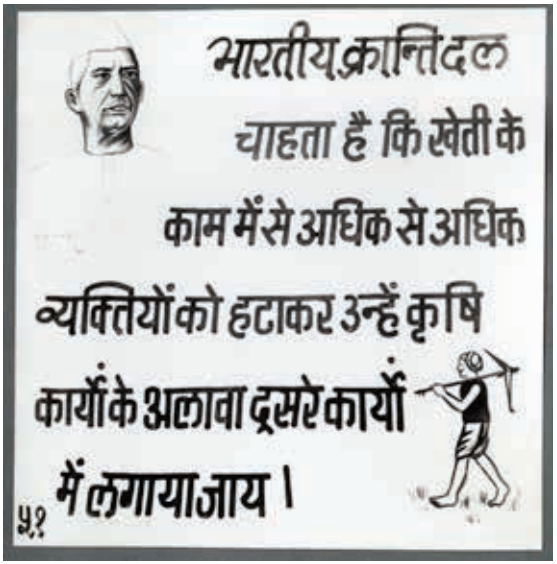

भारतीय क्रांति दल का सचित्र राजनीतिक घोषणापत्र, १९६८, पृष्ठ ५१
1968 Pictorial Political Manifesto of Bharatiya Kranti Dal pg 51

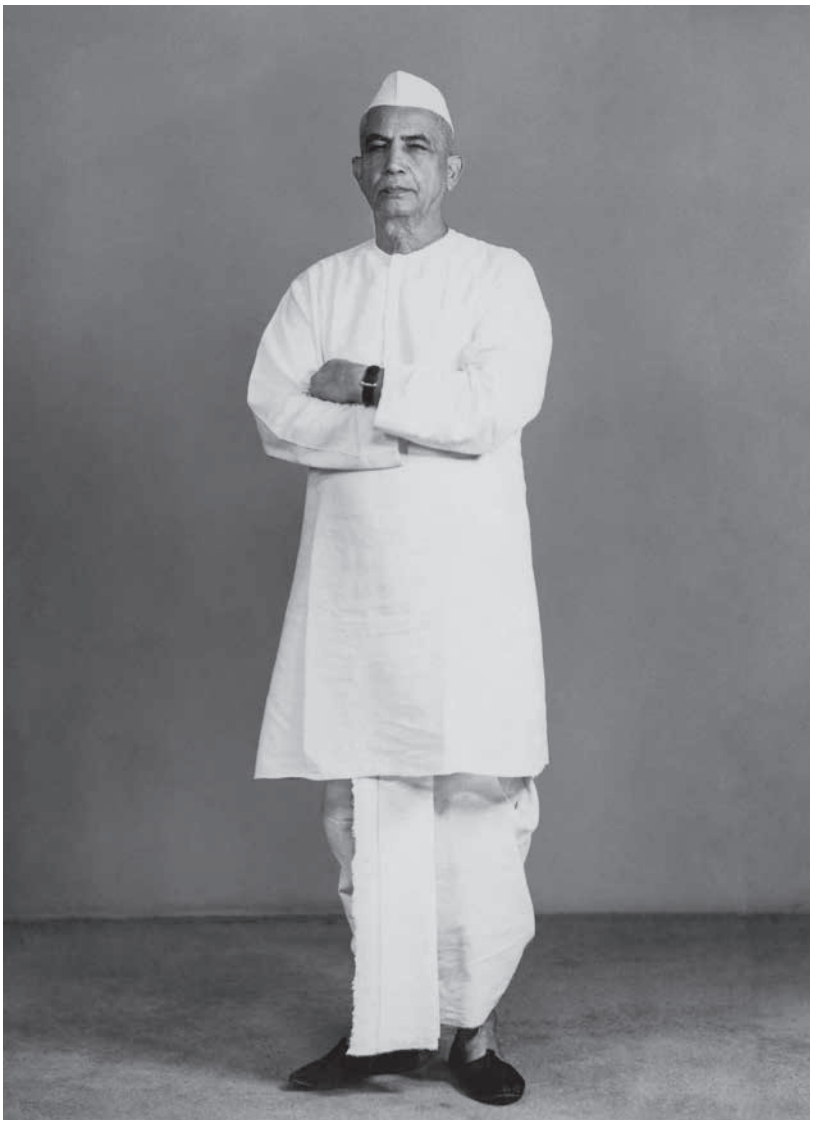

चौधरी चरण सिंह, एक चित्र १९७०
Charan Singh a Portrait, 1970

चरण सिंह, १६ फरवरी १९७० को राज्यपाल बी. जी. रेड्डी द्वारा
उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की शपथ ग्रहण करते हुए
Swearing in as Chief Minister of Uttar Pradesh by Governor BG Reddy, 16 Feb 1970

चरण सिंह पत्नी गायत्री देवी के साथ, २ अप्रैल १९७०
Charan Singh with wife Gayatri Devi, 2 April 1970

चरण सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, २६ जनवरी १९७१
Charan Singh as Chief Minister of Uttar Pradesh, 26 January 1971

चरण सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, १९७१
Charan Singh as Chief Minister of Uttar Pradesh, 1971

चरण सिंह, उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री, गुरुदेव टैगोर और गांधीजी के चित्रों के साथ. १९७१
Charan Singh as Chief Minister Uttar Pradesh with portraits of
Gurudev Tagore and Gandhiji, 1971

चरण सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, १९७१
Charan Singh as Chief Minister Uttar Pradesh, 1971

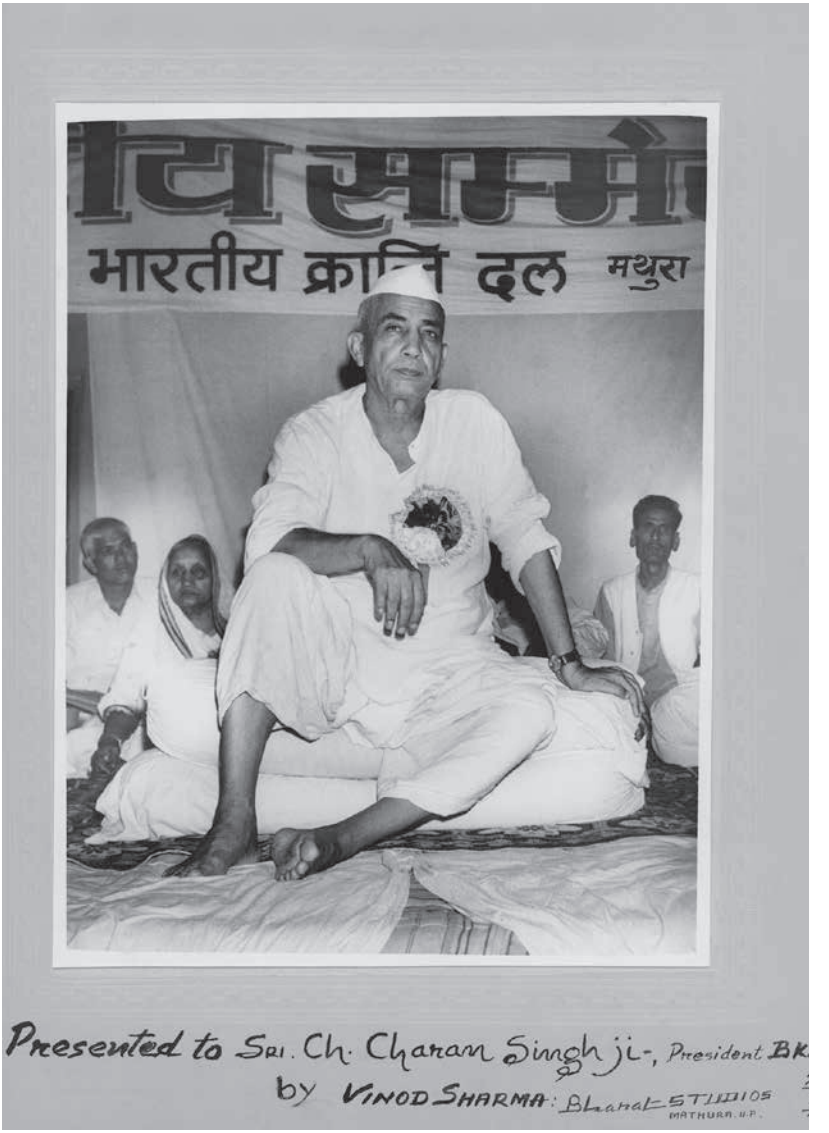

भारतीय क्रांति दल सम्मेलन में चरण सिंह। मथुरा, उत्तर प्रदेश, १९७१
Charan Singh at Bhartiya Kranti Dal conference Mathura, Uttar Pradesh, 1971

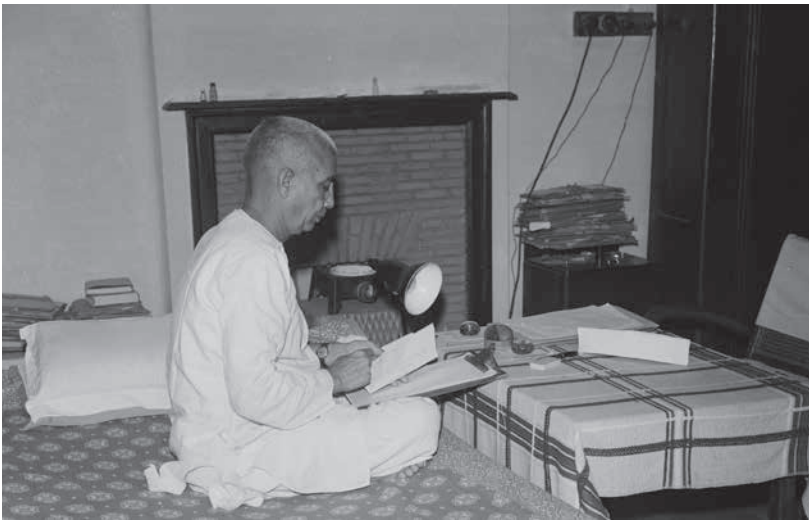

चरण सिंह, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, लखनऊ घर पर। १९७१
Charan Singh at home in Lucknow, Chief Minister Uttar Pradesh. 1971

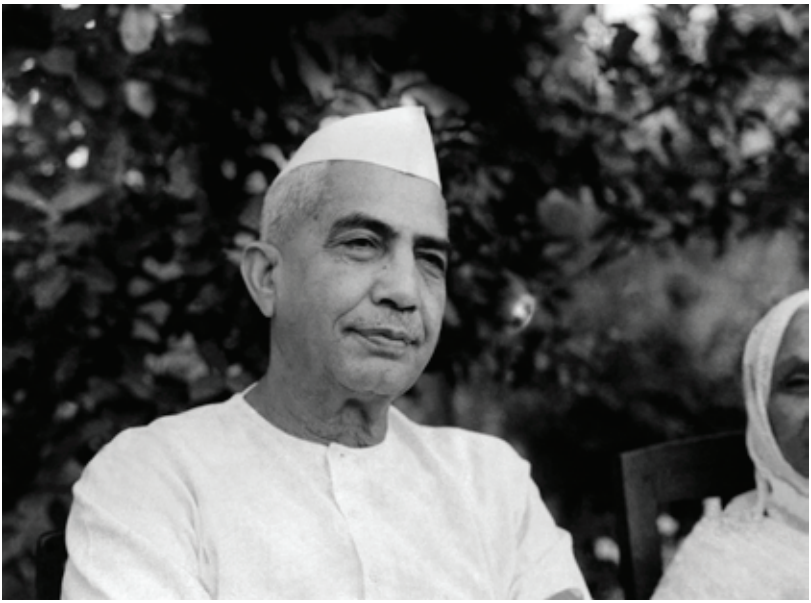

चरण सिंह, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश। माल रोड स्थित घर, लखनऊ। १९७१
Charan Singh, Chief Minister, Uttar Pradesh. At his Mall Road home, Lucknow. 1971

चरण सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, १९७१
Charan Singh Chief Minister of Uttar Pradesh, 1971

उत्तर प्रदेश विधान सभा कक्ष में चरण सिंह और साथी, १९७१
Charan Singh in Uttar Pradesh Legislative Assembly, 1971

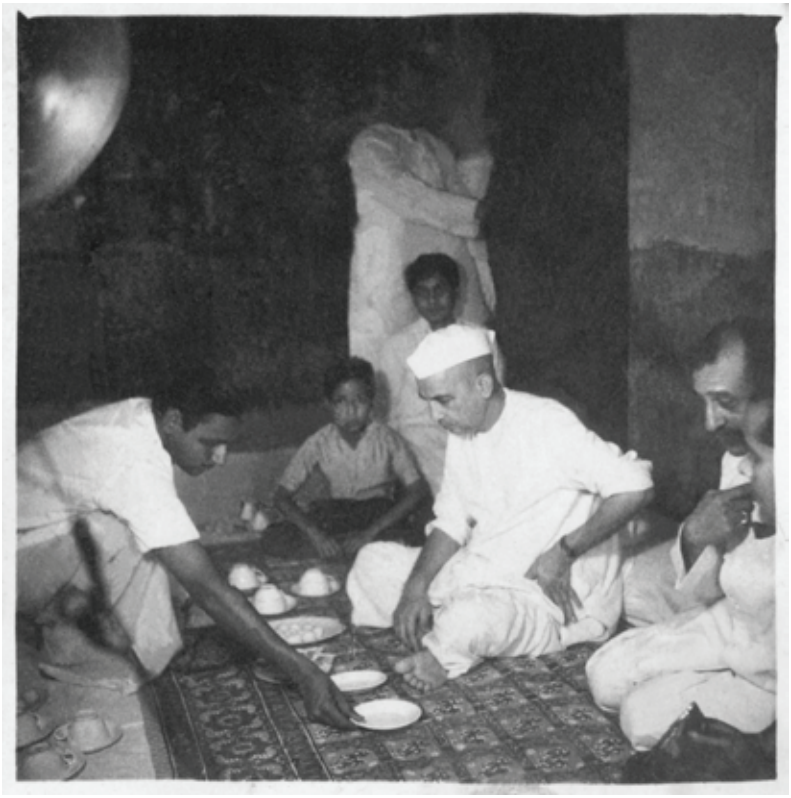

भोजन करते हुए चरण सिंह, १९७२
Charan Singh at lunch, 1972

1

Life introduction

Chaudhary Charan Singh

Born: Village Nurpur, District Ghaziabad, 23rd December 1902, **Education** – Meerut and Agra

Relations/Association with Congress 1929-67; Vice Chairman Meerut District Board 1930-1935; Member Uttar Pradesh Legislative Assembly 1937-1939 and 1946-77; Founder-leader Bharatiya Kranti Dal 1967, Bharatiya Lok Dal 1974, Janata Party 1977, and Lok Dal September 1979; Minister, Government of Uttar Pradesh 1951-67, excluding a period of seventeen months; Chief Minister of Uttar Pradesh April 1967 to February 1968 and February 1970 to October 1970; Union Home Minister from March 1977 to June 1978; Deputy Prime Minister and Union Finance Minister from January 1979 to July 1979; Prime Minister from July 1979 to January 1980. **Publications**: *Abolition of Zamindari, Cooperative Farming X-Rayed* (published in revised form as *India's Poverty and its Solution*), *Agrarian Revolution in Uttar Pradesh*, *India's Economic Policy: The Gandhian Blueprint, Economic Nightmare of India: Its Causes and Cure* etc; **Died** – 29th May 1987.

Main Subjects of the Script

Early life and influence of Arya Samaj; Activities during his stay in Ghaziabad; Influence of Tyagi caste in politics; the elections of 1937 and 1946; Quit India Movement; The position of the Congress after Independence; comment on the policy of the Congress Government of 1937; 'Land Ceiling' U.P. Governance and Minister; memories related to Acharya Narendra Dev, Rafi Ahmed Kidwai, Sardar Patel, Govind Vallabh Pant and other leaders.

Nehru Memorial Museum and Library
Oral History Interview

Chaudhary Charan Singh

Lucknow 10th February 1972

by Shri Shyamlal Manchanda

Shri Shyamlal Manchanda: *Choudhary Sahab, will you share with us the political, social, religious and other influences in your early life?*

Chaudhary Charan Singh: As far as the social and religious spheres are concerned, the social life of that time and the teachings of Arya Samaj had a great influence on me. As far as politics is concerned, my attention in the very beginning was drawn towards the plight or slavery of the country. During that time, in 1918-1919, I read '*Bharat Bharati*' written by Shri Maithilisharan ji Gupt. This gave rise to patriotic feeling in many of my generation. Mahatmaji's movement started when I was studying in the tenth grade. On 30th March 1919, there was a shooting in Delhi. Jallianwala Bagh happened on 13th April. These events are the ones that influenced my political life.

SM: *Wearing Swadeshi clothes was being promoted from the time of Swami Dayanand, Gandhiji came later and he preached Swadeshi. Was the effect of this before, or because of the arrival of Gandhiji?*

CCS: I had a general impression that we must use the products manufactured in our country, this was certainly a result of the teachings of Swamiji, but Gandhiji started this as a practical program, a mass program, a well thought out program. Swamiji did not get his opportunity. As far as this specific matter is concerned, both of them had a simultaneous effect on me. At that time, I was fifteen or sixteen years old in 1919.[1]

SM: *As you know Arya Samaj had significant influence in Western U.P., Punjab and Haryana, so its natural your area too would have Araya Samaj institutions and your family would be connected with the Arya Samaj. From the beginning, in childhood, there is an effect of religious things and because Arya Samaj was then looked upon as a militant organisation the political is merged with it in a sense. From that perspective, what political influence did it have on you?*

CCS: Aryasamajis were always nationalists, because the Arya Samaj

[1] Charan Singh was born 23 December 1902.

teaches us to take pride in the achievements of our past. Arya Samaj gave us the basis of nationalism, there is no doubt about it. Although my parents were uneducated farmers and were not even Arya Samaji, but the influence of Arya Samaj was present in the entire environment. For example, I remember there was a small book of bhajans[2] at that time which had propaganda against alcohol and meat, that also had an effect on me. One of my uncles had retired from the army, I saw *Satyarth Prakash*[3] with him during my childhood. I did not understand this book much at that time, but the Arya Samaj continued affecting me visibly and invisibly in these ways.

SM: *The Arya Samaj had an influence in your childhood and young age, that was the contribution of these influences in your adult life?*

CCS: When I used to practice law in Ghaziabad, I was also a worker of Arya Samaj along with that of the Congress. I was the office bearer of Arya Samaj from 1930 to 1939. This was its contribution, nothing special.

SM: *When you were a worker of the Arya Samaj, what was the program in front of you? For example, the Arya Samaj is in favour of widow re-marriage, modern education within that there are collegiate and non-collegiate classes. What was the influence on you, or was it limited to just being connected to the Arya Samaj?*

CCS: The thoughts of Arya Samaj and Swamiji became my thoughts. I used to organise public meetings. I practiced law in Ghaziabad. I was continually General Secretary and President in the Arya Samaj of Ghaziabad, and unanimously. I used to organise public meetings. I was not an active missionary of Arya Samaj as I practiced law and simultaneously also worked for the Congress. Arya Samaj remained a private, religious aspect of my life and to some extent public also. When Gandhiji went on a fast in 1932 against the Communal Award, which was separating Harijans from Hindus, we offered a common meal for all Harijans and helped them take water from the wells along

---

[2] Religious songs in the name of god.

[3] *The Light of Truth*. Swami Dayanand's magnum opus, written in 1875.

with others. You could call these the work of the Arya Samaj or that of the Congress. So, there was no difference in the social programs of these two.

SM: *Chaudhary Sahab, at that time two programs were going on, it was the Shuddhi*[4] *program from Arya Samaj, which was started by Swami Shraddhanand ji in Delhi and a program of the Muslims, which is called Tabligh, so did these too have any effect?*

CCS: This was from a long time before; I wasn't in Ghaziabad then. In those days I used to study in college, in Agra College. All this happened from 1919 to 1925. Swami Shraddhanand ji was assassinated in 1927 or 1929. The movement that he started was started in 1922 from Agra where there were Malkana Rajputs, Swamiji did *Shuddhi* there for the first time. I used to study in college and had nothing to do with these things.

SM: *You mentioned that on March 30, 1919, there was gun shots fired in Delhi. When Gandhiji was about to reach Delhi, so on 9th April they arrested him in Palwal and sent him to Bombay. You were a student at that time, because you were very young what effect did it have on you and in what colour did you see this?*

CCS: We used to think that Mahatma ji is doing the right things and that we should also become a member of the Congress, things like this, what else….but we could not do any active work as a member, I was a boy of 16 years.

SM: *In 1924 the Non-Cooperation movement ended …*

CCS: 1922

SM: *Correct, it ended in 1922, after that many communal riots took place for example in Kohat and this affected Uttar Pradesh too and you were perhaps in Meerut then ..*

CCS: No, I wasn't in Meerut I was in Agra College. In 1924 a communal riot took place in Meerut city so I don't remember much …

[4] 'Purification' or reconversion to the Hindu faith

SM: *From which year did you start working actively in Congress?*

CCS: In 1929, in Ghaziabad. I practiced Law in Ghaziabad from 1928 to 1939, on the civil side. A year after that in 1929 we established the Congress Committee in Ghaziabad and started active work then. I was giving my 10th class exam at that time when bullets were fired in Jallianwala Bagh. After that I went to study in Agra College. The movement went on. I did not drop out from Agra College.

SM: *The incident of Jallianwala Bagh took place on April 13, 1919, but it is said that the news was prevented from reaching other parts of India. At what time did you get this news?*

CCS: I don't remember this much now; I must have got the news after two to four days.

SM: *But it is said that it took four to five months, people did not get this news?*

CCS: No no, it was not like that. This is wrong, could such news have been hidden? Immediately! There was no question.

SM: *In 1929 when you entered Congress, you participated first in the Civil Disobedience movement. Will you share some recollections? In 1930, from the Dandi March. Would you tell me something about it?*

CCS: When Mahatma ji went on the Dandi March, prominent Congressmen of Meerut came to Ghaziabad to make salt. There is a locality near Ghaziabad called Loni. It is said that earlier salt (*Lavan*) was made there, due to which its name became Loni. The land there is such. In those days, I was a practicing lawyer in Ghaziabad, as well as an office bearer of the Town Congress Committee. At that time, we also went there, so we were arrested and were incarcerated in Meerut Jail.

SM: *So you went to jail for the first time in 1930. The first time you stood for election was in 1937, will you tell which were the political forces that had already entered the politics of U.P. and what was their impact. Specifically, can you tell us about your election?*

CCS: The National Agriculturalist Party was a party of the Zamindars[5], that was the only one that competed with the Congress, there was no other party. And I can't correctly recollect any more. The candidates who stood against me belonged to that party. They had organized themselves hastily, and I don't know whether they had an organization in Meerut or not. They were not really able to oppose much. Whatever may have been of the Muslim League, must have been in the eastern districts. I think Muslim League was not prominent in this election, it became after.

SM: *It is said there was an understanding between the Congress and the Muslim league in 1937, could you tell us something about this?*

CCS: I know nothing about this

SM: *So the 1936 Lucknow Congress? You fought the elections in 1946 …*

CCS: I fought elections in 1937.

SM: *Yes, you have shared with us that there was no real opposition to you in 1937. Do you remember anything else of that year and would like to share it with us, something important from the perspective of history we appreciate it if you could tell us something*

CCS: Congress candidates had a very, almost easy walkover at least in our area. There was no serious opposition. I don't recollect anything special.

SM: *Chaudhary Sahab, I'll take you back a bit. Caste and religion play a major role in district politics. You are a resident of Meerut; it is said that there is a caste called Tyagi. What are your views on their leader, Raghuveer Singh Tyagi, before you?*

CCS: Looks like you have read Paul Brass' book (*laughs*). We have

[5] Unlike some parts of India (example Punjab and Haryana) where 'Zamindar' means a peasant cultivator, it is commonly understood in Uttar Pradesh to be a big landlord with large land holdings; one who does not till the land himself, but through tenant peasants.

a Tyagi caste here, it is a very small community. This community is perhaps the smallest in the agricultural communities. Paul Brass has written this incorrectly, that the earlier leadership belonged to the Tyagis and then moved to the Jats because of me, there was no such thing. Raghuveer Singh Tyagi was an elder and he was the biggest landlord of our area. Rather, here his Zamindari was less, he owned many villages in Bijnor. He was in the Congress, and incidentally was a Tyagi, it was said that the leadership belonged to the Tyagis, but there was no such thing. Whatever he was, was due to his own right, and not because of being a Tyagi. Hindus generally are narrow-minded, he too had not risen above this, but in the social, economic, or political life here there has not ever been any such thing as the predominance of any one Tyagi or Tyagis in general. Nothing of the kind, and to say I had ousted anyone, nothing like that. I was born in the house of an ordinary peasant. I then practiced law, by this a man gains sufficient experience, also a training of the mind takes place. Because I was working for the Congress, I went to jail too. So, when mass politics started, the leadership had to go to the mass worker only. Chaudhary Sahab was not a mass worker, he was a Zamindar. Being a Zamindar, he was respected in aristocratic circles. We don't have too much aristocracy; we have peasant proprietors.

SM: *Does this mean that when Gandhiji came to the National movement and the National movement reached the people, then the leadership of Tyagiji ended automatically?*

CCS: That's exactly what happened.

SM: *Because earlier the system was that that the leader should be wealthy, a Zamindar, and the masses should be behind him, that structure came to an end?*

CCS: Yes, there was no community involved in this. Mahatma ji's appeal of nationalism was to every section of the people. It was also in the Princes, the Zamindars. But as politics slowly converted to a mass movement, these leaders too gradually went away on their own. Let me tell you a truth that there is always this accusation against me after everything is said – Charan Singh is a good man, hard working,

he is also popular with the people, whatever nice things some may say – but he favours the Jats. This is absurd. I will share the figures with you. It is the misfortune of Hindu society that if you cannot find something to say against someone, then accuse him of being a casteist and everyone will believe it.

SM: *Chaudhary sahab we now come to 1946, you contested the elections, at that time you were a long-standing Congressman, can you share some incidents of that time?*

CCS: What incidents can I share of that time. I had not even visited my electoral constituency, this was the situation. *Khudai Khidmatgars* had come there at that time. We had fielded a Muslim, Chaudhary Lutf Ali Khan, from the Congress. He was a good Congressman and the fight was the Muslim League. It was the first election, a *Jatha* (group) of *Khudai Khidmatgars* had come to explain to the people in Muslim majority constituencies. I took them around the Muslim majority areas. As far as the Hindu candidates were concerned, there was no need to go anywhere. As you said, I was already experienced, and in 1942 I took a lot of risks. In any case, whoever stood on behalf of the Congress, there was no question of him losing. In addition, I had done some active work, and used to practice law, a lot of people knew me. People's opinion about me, those who knew me well as also the common people, was good in every way. The reins of the Congress in Meerut were solely in my hands, and whoever I fielded in the elections returned a winner.

SM: *Choudhary Sahab, is it correct to say that there was some understanding between the Congress and the League in 1937, do you have some knowledge about that?*

[17:19] CCS: I have a vague impression that Jinnah sahab and Jawaharlal sahab held talks at a personal level, hence the Muslim League kept growing. There could have been an agreement with Jinnah sahab at that time, but it broke down and things slowly progressed from bad to worse. Now see the irony of history … Jinnah was a prominent Congressman in 1921, but when Mahatmaji adopted Khilafat as a political program of Congress, he protested. He said

that this will lead to an increase in communalism on the part of the Muslim community, and it was on this count that he resigned from Congress.[6] And as fate would have it, later on it was Jinnah became the progenitor or the father of Pakistan. So, a proud man … Nehru ji did not know how to handle men like Sardar Patel and Mahatmaji did. So then, slowly the breach continued widening. This was my general impression only, I have no knowledge about inner things.

SM: *Tell me something about the Quit India Movement, did you take part in it?*

CCS: Yes, I did participate in it. The movement started on 9th August. Probably on 2nd August we had invited Nehru ji to our area. I was then the President of the District Congress Committee.

SM: *In Meerut?*

CCS: Yes, in Meerut. There was a meeting for him in city, and one or two meetings were held in the countryside. I asked him to share the program, what is going to happen, is a break going to happen, how will this movement progress. He could tell us nothing, he could no advice. A meeting was held in Bombay on 9 August 1942. We had a feeling that the movement was going to continue, so had told our comrades to go to such and such places and it will be the responsibility of such and such. I too went to Ghaziabad, at that time I had moved to Meerut. I addressed a meeting … we came to know that our leaders had been arrested. Then I openly addressed public meeting for seven-eight days, the police was behind us. It happened at least two-three times that the police were present but they dare not arrest me because of the reaction of the people. What did happen is the people who I met, whose homes I ate at, were arrested. If a meeting was held in the compound, a speech was delivered, then whether he was a headman or a prominent villager, his license would be confiscated. I heard that later, I'm not very sure, a 'shoot-at-sight' order was given. Then many people advised me that you should offer yourself for arrest. After about

[6] Jinnah was in Nagpur Congress 1920. After that he left the Congress, but not on the issue of Khilafat.

two and a half months I reached my house, and the police arrested me. At that time, I had commenced a program among the people. No directions had come from the senior leadership of the Congress, but all my colleagues in the district felt that this is an AICC[7] program because, by coincidence, there was a enormous similarity between both, there was nothing else special. Quite some work was done in the district.

SM: *You said Nehruji came there on 2nd August and did not give you a line of action….*

CCS: … yes … nothing …

SM: *…. it is also true that when all the members of the Congress Working Committee and Mahatma Gandhiji were arrested they did not leave any line of action for the masses, like they had left in the movements of 1930 and 1920. It was left to the workers of Congress, those fighting for freedom, what kind of action they wanted …*

CCS: … later it went from the Working Committee members, from the Pradesh Congress Committee, from the AICC ….

SM: *As you had said, you had presented a program; what was that program, can you tell in some detail about it?*

CCS: I can't remember now.

SM: *No, specifically about violence or non-violence...?*

CCS: There was no violence in our program, we had no plans for violence from our end but circumstances led towards violence that was different. Violence from the part of government. But we also did not want to provoke violence. I don't remember the items now. It was quite a very good program, people liked it … my co-workers liked it, and when they and we landed in jail there was talk about it that at last AICC has sent a very good program. Then I told them that it was my work (*chuckles*), not AICC. But I don't remember the details at all now.

---

[7] All India Congress Committee

Machanda: *It is said that when the Chauri-Chaura incident happened in 1922, whenb policemen were shut inside a police station and burnt alive, Mahatma ji suspended the Non-cooperation movement immediately due to this, but in the 1942 movement, there were many such incidents in which violent methods were adopted. What do you think about these?*

CCS: What is my opinion, you mean? Whether Mahatmaji wanted it or not? I think if Gandhiji had been asked he would have said that what happened was not right, but at the same time my view is that Mahatma ji wanted that no one should ask him anything, do whatever you want. In a way, this seemed to me a change in his attitude. Everything was fine till Individual Civil Disobedience in 1940, but later, in a manner, he had differences of opinion with many of his colleagues … the Congress Socialist people and others …. Mahatmaji must have wanted an absolutely non-violent movement even at that time, he must have liked that only, but when he was arrested in Ahmedabad jail, there was no question left of any guidance from him. Had Gandhiji been free, perhaps he would have condemned this. He was in jail, information must have reached him, he shut one eye. He must have thought I have no moral obligation, I am not a free man.

This is what I think, but that is a mere reading, a feeling …

SM: *Choudhary sahab, it is said that the Quit India movement was successful to a large extent in Ballia district. There, in a way, the Congress had established its rule, tell us something about it.*

CCS: In that Jagdish Nigam, ICS, was the district magistrate there. He was a very patriotic man. There was only a slight difference of degree in those days. We had N.B. Banerjee, who later became the Chief Secretary, who was the District Magistrate in 1942. He was the son or grandson of Umesh Chandra Banerjee, who had once been Congress President.

SM: *First President of Congress?*

CCS: Yes, his grandson …. people thought of him as a very diehard kind of man, but he was also a patriot man. He came into contact with

me. I was representative of the Congress and he was representative of the British Raj. But he was a very good man, essentially a patriotic man. J Nigam was also a very patriotic officer But it can't be said that Congress Raj had been established – simply, the forces of law and order happened to be overwhelmed for some time. But it could not be said that Congress had established positively a domination or rule of their own. That's all.

SM: *In the movement of 1942 a section of society emerged which we remember as "Augusters", many leaders worked in it, have you ever had any relation with them?*

CCS: No, I had no contact with anyone at that time, I was on my own, independently doing on my own whatever I was doing in my district.

SM: *Did some 'underground' person come to take shelter?*

CCS: yes, if you ask that then … there was once case. A Congress worker from Jaunpur named Jagannath Singh reached our place. My friend Virbhadra Singh, President of District Congress Committee Bulandshahr, now he is dead, someone sent him [Jagannath] to him and he [Virbhadra] sent him to me. He stayed at my house, under an assumed name. He changed his name to Pratap Singh, or I only told him that his name would be Pratap Singh. He stayed at my home like a family member. Policemen used to come to my place. Thakur Lakhan Singh was a DySP in the CID, he was very patriotic and noble man. He used to come to meet me, despite being a officer, and I was a Congress worker. But still I gave shelter to that person, and then got him a job. He was charged with murder and robbery, and had a warrant, he was an absconder. That's all. I didn't give any other man ….

SM: *Choudhary sahab, when you were in jail, how were you treated there?*

CCS: I had no complaints, I was treated well. I used to get A or B class treatment. There was no question of misbehaviour if it was A or B class, but the treatment of our third-class or C class prisoners

depended a lot on the attitude of the Jailer. For example, the jailer we had here in Meerut in 1942 was totally of a Muslim League attitude. He used to treat C class prisoners contemptuously. I used to speak in their favour, of all the thousands of Congress prisoners … but I was in one barrack and they were in another barrack. Sometimes our C class inmates used to smuggle some things from outside against the rules, so the jailer used to take a strict attitude. On the whole, I feel that no real injustice happened in jail. Later I was in Bareilly Central Jail, there too I didn't have any particular complaint.

SM: *Now, you have given examples twice that the Indians who worked with the British rule like District Magistrate, CID Inspector, these people were also secretly patriotic, but on the outside they had to pretend because of their jobs. What is your general impression – were many people like this, or only a select few?*

CCS: I believe the majority was that of people who were sympathetic.

SM: *Was this sympathy there in 1942 or also in 1931, because as time passed, they perhaps started to understand that maybe freedom would be achieved … or something like that …*

CCS: No, it was from the beginning. The thing is that many officers used to open-up to us in such matters, however they did not open-up to the common man. For example, I was arrested from Ghaziabad in 1930 and the case was filed in Meerut. I remember that Janaki Prasad was a Tehsildar in Ghaziabad. He was my well-wisher. Shyam Singh Pathak, who sentenced me, was the SDM in Meerut, a PCS officer. Though my father was an illiterate farmer, but a prominent man of his area. He went for my case, so Shyam Singh ji called him aside and told him to make his son understand. He did his duty, maybe he believed all I was doing was not right, he thought I was spoiling my career, he is an LLB, he should practice law. But behind his advice there was a sense of patriotism

SM: *Tell us something about UP politics, in 1946 you were also Parliamentary Secretary, if you have memories of that time …*

CCS: That is a very wide question, please ask something specific ….

I was a Parliamentary Secretary in 1946, a minister in June …

SM: *When India got independence in 1947, the Muslim League naturally folded-up in UP. In 1948, Acharya Narendra Dev took his Socialist Party and separated from the Congress, so what were the challenges left that the UP Congress had to face in the state?*

CCS: There were no organized challenges left except for the weaknesses of our own organization. Whatever was the opposition, challenge, these were because of our mistakes. We didn't come up to the expectations of our people, so some people opposed us in the elections. But there was no organised challenge.

SM: *What I mean by challenges is that the resolutions the Congress had passed before Independence were based around the Congress working towards establishing a welfare state, so did all of you unite to implement that or did internal opposition start in the Congress?*

CCS: You are correct when you say internal opposition had commenced. It was a matter of regret that no one studied our problems then, and no one does now. When the nationalist movement was underway during British rule, it was concerned with sentiments, with the heart, not very much with the mind – nationalism makes an appeal to the heart. At that time there was a feeling that we should spread disaffection against the British. Explain to the people that they need to confront the British, make them ready for sacrifice, yourself go to jail – but, what are the actual problems, what is their diagnosis, what are their prescription, only very few Congressmen paid attention to this. At that time, doing Congress work, going to jail etc., running the household – all these works were undertaken simultaneously. Whatever our economic or social programs, we were lucky that we used to keep getting mental food through Gandhiji's *Navjivan* and *Young India*. There was one more reason – people did not see the need to do any kind of independent study. Those who had even a modicum of intelligence became the leaders of the district, people who had a bit of influence in the village or city and who had fewer responsibilities of their households, in this manner such people got ahead. But when Swaraj came, then it became our own responsibility to solve all the

problems and only then came the realisation that we are not well equipped.

SM: *At that time probably there was no administrative experience*?

CCS: Yes, there was certainly no administrative experience, but more than that no one had studied the problems and what the solutions should be. Administrative experience, Manchanda, is not required that much. Suppose you become the chairman of a district board and if you prove to be a good, successful chairman, then it is understood you can make a successful prime minister also, because this is an approach … this does not require enormous experience. Many people have been ministers for ten years at a time and they yet do not know how to administer a department. Make someone a minister suddenly, and he becomes a successful administrator. I don't consider lack of experience to be a big disability or handicap. One personal rivalries, then … our people have many deficiencies … selfish, lack of integrity, casteism, making concessions to some, suppressing others … our friends just fell in with these ways. The Congress Committee was so strong here, Congress organisation in the state, the Congressmen themselves destroyed it, the cause was not from outside.

SM: *Can you please tell me openly?*

CCS: Let it be now, what all can I tell.

SM: *Can you tell us only till 1947?*

CCS: Well, in 1947, I didn't have a prominent role in politics here. There was another reason – Meerut [District Congress] was a part of the Delhi Provincial Congress Committee, it wasn't even a part of Lucknow. Congressmen from our area did not have any relations with Lucknow. I did not have relations with too many people in Delhi. I used to practice law and work for the Congress, that's all. In those times, Swami Shraddhanand's son Pandit Indra Vidyavachaspati and Lala Deshbandhu Gupta were the two prominent men in Delhi. Asaf Ali and some others were also there. I didn't come in contact with them much either. I was in some contact with Pandit Indra and Deshbandhu Gupta, and not at all with Asaf Ali. In those days, the

Delhi Provincial Congress Committee was separate, and the Uttar Pradesh Congress Committee was separate, hence I did not know the politics here. In 1937, the Delhi Provincial Congress Committee gave me a ticket for the election. At that time these three districts of Meerut, Muzaffarnagar, Mathura were a part of Delhi, they later became a part of UP.

SM: *But by 1946 you had been here for 9 years, so you must have started understanding the politics of UP?*

CCS: Yes, I did understand a bit here and there. But I had nothing to do with the fights that continued in the Congress in 1936 between Mohanlal Saxena and C.B. Gupta. I had become an MLA in 1937, lived here [in Lucknow] and then understood many things.

SM: *Would you like to tell me something about that*?

CCS: No, there is no need now, it is a wide subject, what can I share? I had seen at that time that Nehru is not going to prove a leader. In 1937, after 2 months, people here began to feel that their expectations from the Congress administration were not being fulfilled. The same old behaviour of the police and other officers continued. On the other hand, there was a Unionist government in Punjab at that time had a good record. Here these people did not do anything. Then we raised the questions in the Party. It will become a long story if I tell it all, the majority of the Party was with me. Pant ji felt there was a revolt in the party, he called Nehru ji. Nehru ji stayed with his sister Vijay Lakshmi Pandit, who was the local self-government minister at that time, he held talks with us for three days. He said …. Yes, this was in 1938 or 1939. For a year, year and a half no real work took place here,[8] I got signatures of twelve MLAs and sent them to the leader of the Party Pantji, requisitioning a meeting of the Party for 'discussing the work done and policy hitherto followed by you, the government'. 12 members were required to requisition a meeting of the Party, they were not calling a meeting on their own … in this then I took the leading part. Pantji felt a bit rattled, he said to me that I had spoken

[8] During the life of the 1937 Provincial Assembly

a lot, but people said let him speak as he is voicing the feelings of all of us. Ranjit Sitaram Pandit was also a member at that time, he in fact said that let Charan Singh say his entire piece, this is the opinion of all of us. At this time this only a discussion, it was not a matter to be put to vote. Pantji panicked, he called Nehruji. We were three or four friends … we had some notes. We said that this is not happening in the police, that is not happening there, no work has got done. It was then that an impression struck me that Nehruji did not have a clear mind. He should have told us what you are protesting against or what you want the government to do and hasn't done, they don't have constitutional powers, or he could have said they have the powers, but your points are not correct and what Pantji's government has done is okay … or he could also have said they have the powers but the government has done wrong, I will tell them … Nothing….

I have a friend Vishnu Sharan Dublish .. he had returned then from the Andamans after twelve and a half years of incarceration. This was when I met him for the first time. As people say, it was a case of love at first sight and I realized a kindred spirit. He had just returned from the Andaman jail, maybe 6 months or a year before this, at most it would be 1939 … I have the date written in my papers. It was then I went and told him that Nehru may be a good drum beater, but not a good leader.

So, I was saying …. the public then only had a reaction that what they expected had not come true. This was an incident from 1939, nothing special … in October 1939 the Legislature was suspended in any case … the War hadn't started …

SM: *... the War in ....*

CCS: Ah yes, the War had started in 1939, in August ….

SM: *... September 2 the War started...*

CCS: Yes, September … I don't recollect exactly why there was a break, the War or something else … the Legislature had anyways been suspended …

SM: *... it was because of the War ...*

CCS: Yes it was because of the War … in between, Sardar Patel tried to make it happen … it didn't come about, the government wouldn't have continued …

CCS: An incident happened during that period, see how things were going on. Roorkee Engineering College was the only college of its kind in India then. The Principal was always an Englishman, it was established in 1850. In 1938, the British principal was to retire. Rajaram, whom I had not seen, was the Vice-Principal there, an able man and a strong nationalist. Instead of making him the Principal, an officer was called from the Government of India. Babu Sampurnanand ji held the education ministry at that time. When the British Principal came, he spoiled the careers of nationalist-minded students. In those days, 100 points were for allocated good conduct, and the boys who till then were those who stood first in the written examination were now given zero or 10 marks out of 100. At those times, the first 8 boys were sent to the All India Service – there were thirty boys all told in the class, the remaining twenty-two boys went to the PCS [Provincial Civil Service]. The boy who always stood first in his class, and who should have come first this time too, was allotted the PCS. The British Principal also objected to displaying a photograph of Gandhiji on the wall. Congress rule, even then a Britisher was called from the Government of India …

SM: *But the grant was given to him by the UP government*?

CCS: Yes, everything ! See how the government was being run. Some boy, a Mussalman, put Jinnah's photo or maybe he (Principal) got it done himself. He was objecting to Gandhiji's photo, but when Jinnah's photo was also put-up, he said it is okay now, photos of two leaders is fine ...

The boys could not even wear a dhoti[9] in the hostel during their private life. When they went to the college it was okay to wear trousers etc.,

[9] Indian cotton wraparound bottoms

but he objected to wearing dhoti-kurta in the hostel. The students complained to us. We raised the matter in the Party, this is what happened, the entire Party was with us. Pantji said I have no objection to wearing the dhoti. In those days, it so happened that Sampurnanand ji, who always wore a dhoti and never wore a pyjama in fact he used to wear a dhoti even in winter, went to the College during April 1938 or 1939, wearing a pyjama. The Principal was objecting to the dhoti, when he saw him in the meeting, he said 'look here boys, this is the proper dress which the Honorable Minister is putting on". The unfortunate students felt let down, so I raised this matter in the Party.

SM: *Did it happen accidental or was it done intentionally ...*?

CCS: No! Now what should I say, I cannot say anything … When we raised this matter, Pantji[10] said, holding his dhoti 'comrades, I go to the police parade also wearing a dhoti!'. I said, Panditji, it is not about you, it is a matter about the Government or about Babu Sampurnanand ji. He could not defend him, none of his deeds, or the injustice being done to the boys. They spoke about Indianisation, and they invited an Englishman … Indianisation gave an opportunity to make an Indian officer, and they called an Englishman. When one couldn't be found here, he was called from elsewhere! He couldn't defend all these matters … I have it filed somewhere, I had written a letter on this in Hindustan Times. Pantji resigned on this, but everyone in the party supported me. Now the rest were not ready that Pantji should resign, neither did we have the audacity. We consulted our supporters who we used to consult about a plan of action. So we decided that we would say in the meeting .... after this there was a meeting of the Party … that the entire matter should be sent to Sardar Patel …

SM: *In which year did this meeting take place*?

CCS: It was 1939.

SM: *The ministry was in office*?

CCS: Yes, it was during the Ministry, we raised this question at that

[10] Govind Ballabh Pant, Premier of United Provinces

time. If they say yes Rajaram was disregarded, or the Englishman's behaviour …. knowing there was a fight going over wearing the dhoti even in their hostel rooms, why despite this Sampurnanandji went wearing a pyjama, whereas we used to see that he came every day to the Assembly in the month of January wearing a dhoti. Send this to Sardar Patel, we will follow what he says …. But Mahavir Tyagi, who was a member of the Assembly, turned everything upside down. He stood up and spoke in favour of Pant ji, and Pantji withdrew his resignation (*chuckles*). What I mean is the expectations we held from our government were not fulfilled, and I consider this the inefficiency of our own people, not a constitutional handicap.

SM: *What could be the reason, why could these people could not take work from junior staff or the administrative? How were they not able to translate this? Did they possess a lack of will, or what will you attribute to this?*

CCS: I would call it a lack of will. It takes a lot of courage to do the right thing. This is what my entire later experience also tells me. Lack of will and nothing else.

SM: *Maybe the junior staff overpowers or give such arguments that the minister has to believe it is okay*?

CCS: There are certainly some instances in which the point of view of the staff and officers is worth accepting. But if corruption is ongoing, the wind changed for only two months and then it reverts to the same old situation, then it means the man at the helm .. they lack will, they are not clear-headed, they are scared to take actions that they could take. This was one reason. The other, their contact with the masses was lost, or in another way one can say they did not have an appreciation of what was happening, what difference their coming to power made, and why it reverted to the previous situation. I would just call it lack of will.

SM: *Chaudhary sahab, please talk to us about the policies of the UP government at that time, the Congress government, AICC etc used to approve these policies, directions used to be sent, there was a Central*

Committee, they were not able to translate these policies. Like you said, what were the fields in which they were not able to do so? Like you gave us an example about education.

CCS: … administration …

SM: *We specially would like to ask you about farmers or other backward classes.*

CCS: Backward classes were not much of a problem at that time; and the Congress got only a total of two years – from April 1937 to October 1939 – but in the matter of the kisans … their appreciation of farmers' problems was not correct. If I tell you about that, it will take time …. At that time, I was the one who raised the questions of debt redemption and agricultural marketing etc. Like I have told you the Unionist Ministry in this regard was acquitting itself far better than our ministry here.

SM: *You just mentioned one reason that it was 'lack of will', was there any another reason*?

CCS: I said lack of will in relation to the administration, now I say lack of the appreciation of the problems…..

SM: *It can also be said that there may be some internal quarrel, these had some effect*?

CCS: No, Pantji was the undisputed leader, hence there was no question of such quarrels.

SM: *Did Rafi Ahmed Kidwai and Pant ji have any quarrels?*

CCS: No, there was nothing at this time. Rafi Ahmed Kidwai and Pantji's differences increased somewhat after 1946, but if was it so at this time I do not know. And in this case the person who set the pace was Pantji, because Rafi Ahmed Sahab was in general not in favour of big men, he favoured of poor farmers and the downtrodden. He was very much against corruption. Although he used to play many political tricks, but still his approach was in favour of the common man … so was Pantji's and I don't mean to say anything different, so whatever

may have been the differences, from this perspective, the differences were not a hindrance to anything.

SM: *Rafi Ahmed Kidwai in a way was one of the supporters of Nehruji. Although Pantji's relations with Nehru ji were also very good. Rafi Ahmed ji in a way was an organizer …*

CCS: This came to a head in 1946 …

SM: *If you think sharing something about this is appropriate, then please do tell me.*

CCS: Now what more can I tell you about that, you know what you do …. This happened from 1946, there wasn't much in 1937-39. Nehruji made Pantji the Chief Minister. Actually, had Nehruji not provided his support, Tandon ji would have been the Chief Minister. Tandon ji was more popular among the masses, was loved more by the people and the workers than Pantji. Pantji was a lawyer; and he had also been a member of the Assembly or what was called the Council then, or a member of the Central Assembly. So that was that. He had done a good study of the questions of finance, he used to speak well, he was a good Parliamentarian. He had a little mass appeal, Tandonji had a mass appeal.

SM: *Tandonji and Nehruji from the beginning had some minor differences ….*

CCS: That's because of what happened in the Allahabad Municipal Board …

[53:47] Manchanda: **11 February 1972.**

SM: *Chaudhary Sahab, yesterday you were mentioning about Congress in 1946. Could you tell us more about this?*

CCS: Had there been no influence or pressure from outside, the party would have chosen Tandonji. That's what I can say.

SM: *Tandonji was senior in age*

CCS: in 1946? No, he was not that senior then, he was at the most 5-odd years older than Pantji.

SM: *When Tandonji stood for the election of Congress President, and had differences with Nehru ji, it is said that in this Presidential election, to quite an extent a lot of things were also somewhat concerned with politics in UP. Do you remember something about this?*

CCS: Now what can anyone say, Nehru ji held differences with Tandonji, with his approach. He considered Tandonji communal, while Tandonji was not communal at all. Tandonji was of course in favour of Hindi, but it does not mean that he was communal.

SM: *But Rafi Ahmed Kidwai ji at that time must have worked against Tandonji in the Presidential election, when Sardar Patel was supporting Tandon ji, then Rafi Ahmed was supporting Acharya Kripalani, the third candidate was Shankar Devji*?

CCS: Yes, after all, Rafi Ahmed Kidwai was definitely with Nehruji, there is no doubt about that at all. We, who were in government, were all with Tandon, Pant ji etc. all of us. Actually, Sardar Patel was the leader of this camp, in other states Sardar Patel was the one who got all the votes. In those days, the chief ministers of the states were mostly supporters of Sardar Patel. AICC majority was for Sardar Patel. In fact, Tandon ji had a majority even a year after the death of Sardar Patel. When he was no more in this world, the AICC was held in Ahmednagar on 30-31st January 1951, even there Nehru ji could not impose his will. Rafi Sahab and all of them lost. Then in July 1951 a meeting was held in Bangalore. There also they lost, then in October Nehru said I shall resign…. these were absolutely pressure tactics. When Tandon ji saw this, the unfortunate man himself resigned. Because Mahatmaji had told Sardar to remain second-in-command, he restrained himself, otherwise he would have become the Prime Minister whenever he wanted.

SM: *Did you attend the 1939 Congress session in which Subhashji's resignation was ….? Do you have any memory of Tripuri Congress*?

CCS: It was in 1940? I went to Tripura in 1940. Don't remember anything special.

SM: *Chaudhary Sahab, do you have memories about some personalities, like Mahatma Gandhi, personal reminiscences, if you had met him? Some incidents …*

CCS: No, no … there is no such memory.

SM: *About Jawaharlal ji*?

CCS: About Jawaharlal ji …. I have already shared with you that discussions took place between us for 2-3 days, he could not give a clear opinion. In reality till a man doesn't go into details, he can never be a successful administrator. His talk was up-in-the-air. Most of his ideas derived from foreign sources, textbooks, literature from foreign countries. Of this country …. masses came to his meetings, but he didn't understand the problems of the masses. Sardar understood the problems of the people because he was born in the house of a modest farmer, Pantji also understood. If the matter of the Indian states had remained in the hands of Nehru, everything would have gone awry. Twice he was the President of the Indian States Conference. He tried, but Sardar solved it. Only two states were with him, one Kashmir and Hyderabad. You know what problems he created in both.

SM: [*inaudible] recently correspondence … Sardar Patel and Nehru …. [inaudible] In the matter of the States Sardar Patel had to regret … [inaudible] Nehruji said we don't need your resignation …. This was published recently*

CCS: The Hyderabad situation came to Sardar Patel on 20 June 1948, when Lord Mountbatten left. Right away, 3-4 days later, he inaugurated PEPSU on 15 July in Patiala. In his speech there, he said that some people have great faith in the noble policies of English, but I do not. The Hyderabad situation was stuck till now, only now has it come to me. Hyderabad will be a part of Hindustan within three months from today; and in even less than three months on 17 September he had it done.

SM: *Please tell us in some detail about Govind Ballabh Pant, because you have had many opportunities to engage with him? Administrator … party affairs …*

CCS: There is no doubt at all that he was a very capable administrator, a good party manager too, also a very good Parliamentarian, but was not a very good public speaker. He had a grasp on all departments and on all the problems, there are no two opinions about it that's he used to consider the issues from the point of view of the masses the general public. But at the same time some things happened during his period in power which went on increasing and then administration greatly deteriorated.

SM: *What were these things*?

CCS: I don't want to share them. Pantji is dead, he was my leader. There are many things I do not want to speak about.

SM: *There was a lot of poverty in our country from the beginning, yet why could Marxism not establish itself here? Especially in the villages.*

CCS: Marxism believes in large economic units. Marx was a very learned man, but he studied only the relations between industries and workers, he never studied the problems of the peasant and agriculture. He concluded from his studies that bigger the units in industry, production would increase. Now there are two opinions whether even this is true even in industries or not. However, assume his opinion was right, yet how did he apply his principle also to agriculture, that is absolutely wrong.

SM: *Jawaharwalji …*

CCS: No, I am speaking about Marx … this became the Communist philosophy. The machine will keep getting better and better, so it is indeed correct that it can increase production, because it is a mechanical process. But agriculture is a biological process. Now plant one grain of wheat in a farm of one bigha and the other grain in farm of 1,000 acres, both grains will cover the same space while growing and take a similar time to ripen. So economy of scale doesn't take place in agriculture, it doesn't matter. Theoretically farm size shouldn't make any difference to agricultural production, but in actual practice larger the farm production per acre goes on declining because the operator or owner of the farm

is not able to exercise supervision beyond a certain area. Therefore, in practice if resource facilities which means seed, water, manure etc. are available in equal quantity to both small and large farmers, then the yield of small farm will be more per unit of land than the large farm. But Communists believed only in what Marx had said. That is why in any country they did not understand the problem of agriculture and the peasant, and were never popular in the villages. There were in the towns, in the industrial towns. Well, gradually the industries grew in Western nations, hence they increased their power there, but in those countries which are predominantly agricultural, they can never come to power in a democratic way. They will say the same ugly thing in agriculture – call them cooperative farms or collective farms … large economic units ...

SM: *What is your opinion about Jawaharlal ji in this regard*?

CCS: This is what Jawaharlal ji also wanted. Cooperative farming was his idea. Ultimately he was thinking of walking on that path. Politically he was against Communism, but his economic program was the same as that of the Communists.

SM: *How can you say this, because the program that Jawaharlal ji gave after Independence was of a mixed economy. There was a public sector and there was also a private sector. He included heavy industry in the public sector, but the private sector also there was both heavy industry and small industry. So, you cannot at all say that he was inclined towards Scientific Socialism or Communism*.

[1:06:54] CCS: I don't recollect the reference now, but I will tell you that he said he that the public sector "it must gradually, ultimately embrace all economic activity",

SM: *that is true*

CCS: then that's it ! because the political method of communists is to revolutionize and socialize or nationalize or overthrow through violence. Politically, he was a democrat but his aim in the economic sphere was that.

SM: *He took inspiration from for the five-year plan from Soviet Union*?

CCS: Wherever he took it from, I do not know. See, here economists or professors of economics mostly teach students the Marxian theory. Whether they are professors, administrators, or political leaders, they are all taking their ideas from foreign countries, and largely from Russia or communist literature. His state was the same. Hence more emphasis was given to those ideas, and he neglected agriculture. The resources, financial resources, he should have invested in agriculture ….

SM: … *like in the first Five-Year plan...*?

CCS: .. it was okay there. But after that he changed it completely. In the Second even more emphasis was on industry, and between small industry and heavy industry, mostly to heavy industry. The same in the Third Plan. The condition of the Fourth is as you know it to be. So, what was the result of that? From 1947 till now food grain worth 47 billion rupees has been imported from overseas. Cotton worth 16 billion rupees has been imported. Humans have only two major necessities – food and raiment; and for both these such a big country has become dependent on others? ….There was a German advisor, German economic advisor …

SM: *Gunnar Myrdal ...*

CCS: no, no, not Gunnar Myrdal, he was Swedish and is yet alive… ah yes! Dr. Schacht. This was when the First Five-Year Plan was being prepared here, the draft was already prepared, he visited on a tour. He was famous, of world fame. Nehru ji showed him his plan. He said this only, why have you emphasised industry so much. You need to emphasise agriculture, create sources of irrigation. If you annually go on investing one lakh, two lakhs, ten lakhs, twenty lakhs and increase the means of irrigation, then development will happen by itself. Now it has been one or two years since he died, he has written a book, in which he wrote that, in my experience, there was only one Prime Minister who took advice from me but did not accept it; and that was Nehru.

So, Nehru was very stubborn. Everyone here was saying, from the beginning, give more emphasis on agriculture. Industry, industry, industry … but industry will come after agricultural production has been stepped up, it has increased, and the cultivator is able to produce surplus to his own needs. Then alone industry will come up, not otherwise. All the economic destruction that has taken place is all because of this.

What I am saying about him is his economic thinking was that – industry to be preferred over agriculture, and between industries, heavy industry should be preferred over small-scale industry and cottage industry. This program was also followed in the early days by Mao-Tse Tung in China under Communist orthodoxy, but he had a lot of different experiences. In the April of 1962 their People's Congress meeting was held, it lasted three weeks. On 16 April 1962, they passed a resolution. They said, no … the priority henceforth forward will be: agriculture first, light industry second, heavy industry last. Only then did they develop. Before 1962, their 'Leap Forward' etc. had already ruined their economy. Communist countries have also accepted the process of economic development that has taken place all over the world. Now, Russia was a different matter. Russia has fifteen times more per capita land than us. They could afford to commit mistakes. There, collective farming was imposed on peasants, the result was their agricultural production fell. In 1930-1932 there was a great famine there too. Wheat was imported from Canada and America, that is how they managed to get by. USSR has the lowest production per acre in agriculture. He wanted to copy the same here. All happened due to this mistake of his. His one approach was right – if non-agricultural occupations were increased, then the country becomes richer. But he forgot only one thing – that non-agricultural occupation increases only when – either before or alongside – agricultural production increases. The masses are agriculturists. If they do not have purchasing power, then who will buy your goods? Your factories will be at a stand-still. You can find out that even half of the factories – small or big – whatever their utilization capacity is, not more than half this is utilised.

SM: *There is no demand in the market*?

CCS: There are two things, there is no raw material for some and for those who have raw material, there is no demand for them.

SM: *Raw material will also come from the land*?

CCS: From the land. Most will come from land, it also comes from mines, it also comes from cattle. Anyhow, cattle are a part of agriculture. Forestry is all agriculture. Now a 2.5-billion-rupee heavy engineering factory has been set up in Ranchi… I forget its name. 2.5 billion! A machine that will make machines! It's lying idle. Similarly, there was too much emphasis on the Public Sector. Now the British Labour Party has abandoned its program of nationalization after its experience, the Socialist Party of Germany has also done so, as has the Socialist Party of Japan. Nationalization is not a better substitute of private ownership. The evils of capitalism in the 19th century, in the 1850s, are slowly disappearing. Now workers get protection from the government, laws have been made for them, they have the right to strike, they have the right to vote. This was not the case in those days, in the beginning there was a lot of exploitation of the workers, in that environment voices were raised against capitalism. Now you see that there is any bad treatment with the labour in Tata Steel factory? See how well they are managing. Durgapur, Rourkela and in Bhilai, just a few days ago, it was reported in the newspaper that there is 78 percent capacity utilisation. The best of these is perhaps Bhilai and close to 55 percent is Rourkela. I know that Durgapur has 38 percent. 11 billion rupees have been invested in it and 2 billion rupees has been invested in Bokaro; that is 13 billion. And steel worth 2 billion is being imported! If you had given these 11 billion rupees to the Birlas or the Tatas, then this situation wouldn't have been there. They have experience, you could have controlled them. You are nowhere in the production of steel. See where Japan has reached.

SM: *This means that there is a lot of incentive in private industry, which is not there in the nationalized industry or public industry*.

CCS: See, infrastructure would of course remain under the control

of the state – like electricity, transport. The current definition of infrastructure does not include steel. Steel should have been given to private ownership, subject to control and regulation by the Government. This is what Mahatmaji has written, but people kept taking Mahatmaji's name, but poking fun at him internally, in all matters … Mahatmaji had said do everything on a small scale, at a cottage scale, there are so many people and ….

See he had established a very good principle – what can be produced on a small scale do not make in big factories. How nice is that! He used to ask where am I against that, where am I against making locomotives, ships, aeroplanes, electricity, steel etc.? He was very much in favour of the Singer machine, which he was greatly in favour of, such a useful thing … if it cannot be made on a small scale, then you should build big factories. But retain the principle that for the things that can be made on a small scale, do not establish big factories for them. It's an unexceptionable idea.

I was recently writing … however, you may not have the time to read such things …. In 1953, 20 times the employment was found in handlooms as compared to mills. Now, it's about 12 times. Why? because the mill worker's efficiency or performance has deteriorated a lot, whatever the reasons for this. Okay, assume 11-12 times. Now 7 lakh 60 thousand are textile mill workers. Ten percent of the cloth produced by the mills is sold outside the country and ninety percent is sold here. If ninety percent of this cloth could be produced on handlooms, instead of 7 lakh 60 thousand, 80 or 85 lakh people would have got employment. This would have solved the problem of unemployment in no time. You need to do nothing. I don't want them to be shut down, or the government acquires them ….

SM: *Is vested interest going on here too*?

CCS: Now that is the real situation, why do you want me say it, Manchanda. Vested interests! The crores of rupees that go into elections, where will they come from? I told this to Indira ji, I have her answer with me I was maintaining those papers now .. there is really no answer. Difficulties face us whenever we do anything. We

say sell your produce overseas, we won't shut you down. Export it if you can, we will help you. But if you can't compete in the foreign market, you may well close down, but the internal market shall remain the exclusive preserve of small industry. Now consider all such industries that can manufacture on a small scale; there will be many like this. This is the biggest industry. There are so many headaches now, threats to the social and political stability that the country faces, all these matters will be resolved by themselves. One does not have to do anything! They will install handlooms on their own, you don't have to do anything. Keep another condition … that handlooms cannot be installed in big cities. This will lead to the growth of smaller towns, rather than Kanpur, Delhi, Madras or Calcutta. Only this condition! Power-loom too provides five times more employment than a cloth mill. But does anyone want to solve these problems?

There is a piece of news on page 6 of today's Pioneer[11]. I have the newspaper cutting, and I had already written on that matter, now I would like to provide a quotation. Now see the condition of the workers – there was a labourer interviewed by a correspondent. That poor man told the reporter that our family, children do not get food, there has been no improvement. Land holdings are reducing with increasing population and the old crafts and handicrafts are dying out because of the competition, they simply cannot compete with the mill. Our ancient livelihoods are slowly dying. Land is in short supply, it is fragmenting in the hands of even those who own it, so what rights over land with others get? Some have become landless, unemployed. Most are running towards the cities – Lucknow, Kanpur, Delhi – and are being pushed around there. You have amended the Constitution we will remove poverty, but what does the government have to do with poverty? It is a slogan. Will this remove poverty? As I have told you, they have given 157 licenses to monopolists. They have no concern. I don't recollect if I have told you this or not, there are thirty million people in India who earn less than thirty paisa a day. They don't come to attend our meetings, neither do we visit the huts of these unfortunates.

[11] Pioneer, 10th February 1972.

SM: *Chaudhary Sahab, there was a lot of propaganda about Socialism before Independence, especially in Uttar Pradesh. What is your opinion about Acharya Narendra Dev, Purshottam Das Tandon and others?*

CCS: Actually Jawaharlal ji too used to speak about Socialism. Once, in 1934, Gandhi ji wrote to Jawaharlal ji that he spoke about too many things …. I don't recollect the exact words he used … but Gandhi ji wrote asking him to resign from the Congress because the Working Committee's resolution had a clear conflict on these issues. It was something about Socialism. This was 1934 …

SM: *in 1936 Rajaji and Acharya Kripalani and others had resigned from the Congress Working Committee?*

CCS: I don't know much about that. In 1936, Gandhi ji had written a letter to Rajkumari Amrit Kaur in which he said what do I do – Nehru ji believes in large units, big factories, heavy industries and all that. In my opinion, it will all prove a waste. He wrote this. But what can I do Nehru ji believes in these. And that is exactly what happened, all of it got wasted. We have the lowest rate of growth in the world today, no matter the false narratives.

SM: *You were also in the (Uttar Pradesh) Zamindari Abolition Committee*?

CCS: All of this was done by me only, I was indeed in the committee. But many of the Committee's recommendations were impractical, wrong. Since I was Parliamentary Secretary, I couldn't write a dissenting note. Then I wrote a 17-page note to Pant ji pointing out the specific recommendations of the Committee that were wrong, they won't serve the national interest. He then told me to draft the report drafted in the manner that I wanted to. So, I became Chairman of the Drafting Committee that was formed, with the Revenue Secretary, Chief Secretary and legal luminary. And then the draft was made according to my ideas …. every single paragraph, every section, every single term. Actually, I had studied this matter from before, in 1938-39. In 1948, I had also written a

book *Zamindari Abolition*. When Pant ji asked me in 1948, I drafted it. The Revenue Minister, Hukum Singh ji, had no interest in the matter. A meeting of the Cabinet was held in Nainital which went on for 11 days. The Revenue Minister sahib did not even attend this meeting. I was a Parliamentary Secretary, and I was the one who went. This would be the first instance of a Parliamentary Secretary attending a Cabinet meeting. The [Zamindari Abolition] Bill draft came from here.

SM: *Choudhary Sahib, was the purpose of abolition of zamindari to bring equality or ....*

CCS: …. not equality …

SM: *.... To displace the big zamindars and distribute the land among the ....*

CCS: Nothing …. Zamindari means Landlordism. In Punjab if you use the term zamindar, the tenant is called a zamindar, so it's a completely technical word. Zamindar implies someone who owns land or the holder of land, and even a sub-tenant there is called a zamindar. But what is believed here and in the rest of the world is landlordism, not land ownership … landlordism. So, this means that those who were tenants were made owners. The landlord between the tenant and the government, who we call an intermediary, was abolished and the tenant was brought into direct relationship with the State. This man who was called the intermediary, was removed, was eliminated. In this way the very large tenants, those who had let their land out to sub-tenants; there also I removed this tenant-in-chief and got them also some compensation in lieu. … no question of the ceiling now ….the sub-tenant was now directly in relation with the State. Not only this, those who were registered as trespassers – millions – were also considered tenants and were given the right of ownership which happened in no state. People said trespassers are trespassers, but our thought was they were genuine tenants, and both the Patwari – the village record keeper – and the Zamindar both conspired to record this unfortunate person a trespasser. He was left to the mercy of the owner of the land, who could evict him whenever he wanted. He used to pay the rent but they

did not even give him a receipt. It is quite possible there were 2-4 percent real trespassers, but then we gave rights to all of them also by considering them sub-tenants. Another special thing in UP is we have not given the right of resumption to the landlord. The argument of the Zamindars was that as long as we had rights over the land we gave the land on rent, when we wanted to farm ourselves we could take the land back … now that finally you are going to abolish Zamindari, then those of us who want to farm the land ourselves for self-cultivation he should have the right to resume. This was accepted by the Planning Commission. I didn't accept that recommendation. The only State in the country. Other states gave the right of resumption, there was great misuse of this, great misuse. Many were genuine tenants since the British era who had hereditary rights, who had security of tenure, even they were ejected. However, we didn't let anyone be ejected, not even one. There was never a chance of the legal cases working against us …. our Zamindari Abolition legislation was never invalidated by the High Court. Ours was drafted very well. In other places it was challenged, but ours wasn't.

SM: *Your purpose was to abolish Zamindari and, in a way, to give land to the tenants, to what extent did you succeed*?

CCS: We were completely successful in this. Listen … first, the purpose should be clear in our minds. We wanted to make that person the owner, the man who actually tilled the soil. We made him the owner. Now no third party could intervene and eject him, so he became the proprietor. Being the owner, he could make improvements … sink a well in it, he could make bunds, level the land ... he can do what he wants, the land was now his. When he was a tenant, he did not manure the land well, did not dig wells, nor did he irrigate because he was afraid – he did not know when the land would be lost to him. Worldwide, the peasant proprietor – under given circumstances – produces more per-acre than a tenant. A famous saying goes something like 'ownership turns sand into gold'. This was the first purpose, and this was fully met in our State.

Now, the second was that the poor tenant had no status earlier. Now

he acquired this status. He became the proprietor of his patch of land, howsoever small the patch was.

Third. …. I had a lot of controversies with Socialist leaders in this matter. Everyone knew that Babu Sampurnanand, he opposed conferment of rights on these poor millions of people – sub-tenants and trespassers. He also wanted the right of resumption to be given. Much opposition took place, to the point of my resignation. I wrote a note of 26-pages, it was only then Pant ji agreed with me, and only after that tenant got their rights. My belief was, third, that one of the advantages will be Communism will never be able to raise its head in UP, and it did not. Wherever there is Communism, land related reforms have not been implemented well. Actually, these leaders of the Congress then spoke about something to show the world but they in truth did not have any sympathy for the underdog. One, legislation wasn't drafted well, and those that were made were not implemented well on the spot. Wolf Ladijinsky has written except for U.P. abolition of Zamindari.... he is a consultant to the World Bank. He wrote that in Bihar Zamindari is almost intact. Another thing, except for one or two Provinces, the percent of labourers is higher than cultivators everywhere as compared to U.P. These five states have a very high percentage of laborers.

SM: *Labour means Industrial workers' or ... ?....*

CCS: …. I am talking about agricultural labourers, as compared with the cultivator. There are many more in Kerala, Bihar, Andhra Pradesh, in Bengal too it will be 70 percent, it will be around the same in Tamil Nadu. Tamil Nadu now a bit of communism... I knew of this before, but I only came to know on M. Karunanidhi's statement that the Naxalites were planning to kill him, then only did I realise that the breeding ground of the Naxalites is there!

SM: *Are there many Naxalites in Andhra*?

CCS: There are many in Andhra, there are many in Tamil Nadu too.

SM: *You stated Landlordism was abolished but there a step below this – the landless. Was something done for those who were landless?*

CCS: Nothing can be done for them, this ceiling that is being talked of, not one of these unfortunate people are going to get any land.

SM: *When you were there, was there a proposal for a ceiling*?

CCS: At that time also, there was a proposal to implement a ceiling. I wrote a small booklet, the last chapter was on whether there should be a ceiling or not. But here – barring Rajasthan and Assam – we have the highest percent of cultivators, and agricultural laborers the lowest. So, with so many peasant proprietors, large holdings were few. If we implemented a ceiling, then very little land would become available. I held a view at that time that we shouldn't impose a ceiling, instead we implemented a large land holdings tax. The rate of taxation would keep increasing for land holdings beyond thirty acres. The result was going to be, this law was in force for only two years, no man could keep more than fifty-sixty acres of land, he would have to sell the land. For future acquisition, we had also ensured that no one could buy more than 12 and a half acres. The zamindar would have paid us tax, if not he would have sold it, but he could not sell it to a big holder. The government would keep getting tax without it coming anywhere in the picture and there would have been equitable distribution … in an indirect way.

In those days T.T. Krishnamachari, who was the Vice Chairman of the Planning Commission, asked us that everyone is applying a ceiling, why don't you do so? So, I went and shared with him four or five reasons. I told him that we have the most cultivators, apart from the very few large holdings, the surplus land that would become available would be very less, then why should we get into the trouble of giving compensation, and then the land which we acquire, which one should we take, and which one should we not. If we get waste land, then who should we distribute it to – to the landless or the uneconomic holders. Three-fourths people are uneconomic holders here. At that time, I said, in order to avoid getting into this mess we have imposed a tax. He said, that's fine, don't impose a ceiling. But later the ceiling was imposed again, Nehruji passed it in Nagpur.

SM: *In what year did this happen*?

CCS: 1960. No one wanted to implement this honestly. That is, whatever recommendations were there – that the ceiling should be this or that many acres – a date in the future was fixed for it. Till then everyone had distributed the land, everyone hid it. This was completely dishonest! If this was actually to be implemented, then it should have been from 9th January when the resolution was passed in the Nagpur Congress, they should have implemented it from that date, because before that people did not imagine that there was going to be a ceiling. But nobody was serious.

SM: *What was the role of Kisan Sabhas after the abolition of Zamindari?*

CCS: The role of the Kisan Sabha was to raise the tenants demands vis-à-vis Landlords, was to press for their demands against injustice being done or against the loopholes in the eviction law through which the Zamindar exploited peasants. They used to raise such cases. But when Zamindari was abolished, there was no landlord and no tenant, everybody became a land-owner, proprietor of his land.

SM: *But when you had given some land to the tenant, he will also hire labourers for further work, so what protections did the state give to the workers?*

CCS: For labour? That cannot be done. What these people have passed the Agricultural Minimum Wages Act, this is idiotic stuff. Where labour is more and farmers less, then it is a matter of demand and supply – there will be lesser wages. Where the number of agricultural labourers will be less there will be higher wages, like Haryana where agricultural laborers are very few, where the population of Harijans is less, hence the wages are high. When labourers are not available on higher wages, that's when the farmer and his wife work shoulder-to-shoulder in the field. It is not like that in U.P. It is not that they want to take this hard work from their unfortunate women, it is their compulsion. Now, you cross Haryana and come to Meerut Division, Agra Division, in our place women in the villages do not do the work in the fields as they do in Haryana. To help the husbandor her son she delivers food to the farm, and when the workload is heavy then she

would also cut fodder from the fields. The work of looking after the milch animals remains under her direct supervision, this is a tradition in our parts. Then, cotton picking – there used to be cotton grown in those days which is now almost disappeared – the mistress of the house, peasant's wife, used to take women labourers with her to the fields where she herself would help pluck the cotton and supervise them. Like this, *Silla* – this is a Sanskrit word, like when you harvest wheat, its ears fall off, to pick these. In our area, works like these are done by the women. Other work, like digging sugarcane, they have to do this in Haryana. Or in the barn …now they do not do threshing by the hooves of bullocks, now there are all machines – earlier, women only used to do it. But this was not the case with us. In UP, as you go from West to East, women did not work as much because the number of labourers kept increasing there. Feudalism was dominant. On our side there were more peasant proprietors and very few Zamindars. Things were equal, the difference between the big and small farms was less, this difference increased as we went towards the east. The number of large landlords went on increasing here. The special characteristic of feudalism is that manual work is considered inferior and looked down upon, so there was no question of women working there. Men too did not work. They wouldn't plough the land. The Brahmin and Thakur there did not plough the land with his own hands and because he then would be considered inferior in society and the girl couldn't get married. This has happened here much because there were too many labourers here.

SM: *That is, there is no dignity of labou*r?

CCS: No conception. For labour, the ultimate solution for agricultural labourers, or landless or unemployed is they should go to industry. What is not a solution is this talk of a ceiling. Neither is there enough land available, even if you reduce it from 30 acres to 20 acres, whether you make it 15 from 20, there is not enough land. Suppose if cent-percent people are given land, then the country will become poorer than it is today. What is however clear that if some people have more wealth, whether urban property, whether rural property and the vast masses have nothing or have very little, then there is a discontent, this

is a psychological thing. Suppose all three of us are poor, all three live in huts, then when we will look at each other and all three are poor, there is no discontent. But if one lives in a hut and the other has a palace and my hut is under the wall of your palace, then discontent is natural. So, from this point of view, those who have more wealth, of course it should be taken from them, but at the same time it should be remembered that that is no solution of the problem. You're simply buying some time. That's all. The problem is not going to be solved with this.

Not only this, the problem has in fact been reversed … now, I do not know whether our Prime Minister knows this or doesn't, and whether the ministers there understand this or not …. but the way this work has been done by a loud beating of the drums, everyone has distributed their land! No one individual in India has more than 18 acres of land in his own name, you will find very few. You cannot take that land from that owner either legally or constitutionally. So, even whatever little could have been obtained, that too wasn't.

The biggest loss is that – while political parties say distribute this, distribute that, okay, do it. But you are diverting people's attention from let's say once ceiling has been imposed and whatever little land is available has been distributed as if the economic problem of the country would have been solved? Foolish! The real problem is the growth of non-agricultural occupations. So you are diverting people's attention from the real solution. If we paid attention on how to increase non-agricultural occupations, had full efforts been made towards this, and had retained this also as one program … now they put all their eggs in one basket of land distribution, this is wrong. This is not going to lead to any solution. For this government it's a political view …. Let's say six months later assume a new Chief Minister comes, assume their government is formed, or any government is formed and they are wedded to land distribution and that is correct, actually that will make no dent in the problem, people will be disillusioned. What will happen to the laborers, the one you read about on Page 6 of the Pioneer today, what will they get? Is this how their poverty will be removed?

The economic policies are wrong, they should be changed. And the biggest solution is what Gandhiji gave us. He said that these should not be there, mills should be closed down. Okay fine, don't close them, so much investment has taken place, from where will the government make up for it? So, tell them sell your produce outside. Within one year or two years the problem would have been solved. But who wants to do it? And this is the biggest problem. In one more … the more you emphasise large industries, the more disparities in incomes are widening. In small industries the disparities get narrowed.

SM: *In that you get ownership in them …*

CCS: Yes, there is self-employment. Another thing – in a democracy, the more the number of centres of decisions in the country or in society, there would be more decentralization in society.

SM: *Gandhiji wanted decentralisation …*

CCS: Yes, the unfortunate man used to say so. I am talking about 'centres of decision' in the context of, say, you are the owner of your small machine, you have small tools, you are working, whether handloom, whether power loom, some small machines, then you have to take the decision. There is no boss over your head. You are not subject to anybody in the matter of earning or bread. You are free to take your own decisions. Which means encouragement to democratic trends. The three problems are – poverty …. some economists are also of the opinion that in smaller units per unit of capital investment output is higher. There are some differences of opinion on this, however most think smaller enterprises have higher production per unit of capital invested compared to larger enterprises. If this is the case, then wealth will increase, second there will be reduced disparity in people's income, third unemployment will end, and the fourth that democracy will be strengthened. And about 'the country needs steel', no one stops that … whether you make steel, whether you make electricity, make airplanes in the country, who is stopping these? But we want to draw the line where something can be built on a small scale why make it on a large scale. But no one is prepared to give thought to this problem. They all are going by slogans, there is a competition in slogans today.

SM: *Chaudhary sahab, you have been a minister for many years. You have had extensive opportunity to work with the bureaucracy ...*

CCS: …. yes, I have had lots of opportunity *(chuckles)*

SM: *... what are your thoughts about bureaucracy specially what is the difference between before Independence and today; has corruption increased or decreased?*

CCS: Corruption has increased manifold, not two-fold or three-fold. And for this I will put the blame squarely on the politicians, not on the public servants. My experience is the leadership they get defines their work. They react very quickly. It's exactly like a horse and rider. The horse recognises – not too many horses or horse riders around anymore! … but the horse recognises whether the rider who has sat on my back knows or doesn't know how to ride. If he doesn't know, then drop him! If he thinks he knows riding, he understands it immediately. He understands this, the officer. If you make concessions for your friends, then he will also extract concessions for his friends. He will then understand your weakness, and even if you say no, he will seek out and help your relatives, friends and your Party people. Your lips are then sealed. Corruption starts from the top, not from the bottom. If one man is good and has the spirit of selflessness and sacrifice, then he has a good effect in society.

SM: *However, the institution of corruption has been going on since the time of British ….*

CCS: Yes, it has indeed been going on since, but now it has multiplied. This always happens in the world, that I concede … but the levels we see in in our country or in the South-Eastern nations such as in the Philippines etc., are not seen in European nations. No one can claim that corruption will never take place, but we can say in Japan there is virtually no corruption. England comes at number two, Germany at number three. I have not read anything about Israel, maybe Israel has some, there is some in America, there is a lot in Italy, there is in France too, but the magnitude we have here is not found anywhere else.

Nehru ji himself was not corrupt, but he was never angry at corrupt

men. Had he fired 2 or 4 ministers in the beginning, this situation would not have come to pass. He knew about them and kept on tolerating them. This is the root. Now I do not want to say this about U.P. because I belong here, I am involved in politics here, but find out from someone what is happening. You will not find such a situation in the world. Why is it being tolerated? Suppose I am the Home Minister and I start taking bribes, will the I.G. remain honest? Even if he remains, then will the people below him remain honest? My own reading is that 10-15 percent of our officers are such that even if their superior officers, minister, Chief Minister take a bribe they will not. 10-15 percent are such that no matter how honest the top officers and chief ministers, home ministers and political leaders are they will continue to take bribes. 75 percent are such that they will mould themselves to whatever they see from above.

SM: *You have been a Chief Minister and also a minister. This relationship between the bureaucracy and the politician; between the expert and the non-expert; politician is considered as non-expert; so what were the difficulties you faced in dealing with the bureaucracy, because their services are secure and how did you get work done as an institution, a system?*

CCS: I have never faced any difficulties. It is correct that ministers are non-experts, but he should know his job. If you make such a person the agriculture minister who does not know the difference between Kharif and Rabi, then the Director Agriculture will certainly make him a fool of him. The minister must understand the bigger picture. If he does not understand this, he cannot guide. It depends on the capability of the minister. The secretary writes a note on the file and sends it, I sign it blindly. You sign one note, two, if five notes are signed without a discussion, without queries then he will understand that the minister knows nothing. This will reduce the secretary's efficiency. He will think that no matter how hard I work, my boss is not going to appreciate it. Officers do not like such people. They want someone to give them guidance – if does not give guidance, at the very least he should appreciate what they are doing. They have to salute, but they do not have respect for such people in their hearts. For this

intellectual superiority and equality are not enough, moral authority is also needed. A government does not run without moral authority. If he does not have respect for the character of Minister and Chief Minister…. there are a thousand occasions when a man can sense the character of the minister. Then how will the government run well?

I have seen so much bureaucracy, I have also seen the police, the unfortunate police department is bad mouthed, but I have no complaints with them. From constable to I.G. they mould themselves … it is an organised force … within twenty-four hours the temper of the Home Minister is reflected down to the police station.

SM: (*laughing) we are very competent people! ... we can work according to ... so you are right, the man above, the man at the top, people will move as he moves ....*

CCS: … I don't blame them … In England there is no bureaucracy. There are county councils, the most important person is called the county councillor clerk. The County has elected members. There is no complex structure of *lekhpal-kanungo* etc. etc. below. But here also I do not consider it right to blame them. We politicians are to be blamed. Here, if an officer writes an honest note, gives the correct advice, is not ready to be corrupt – transfer! Now, there are very few people who will take risks. They mould themselves accordingly – if you want dishonesty, then dishonesty is what you will get. But there are also some among them who do not even write their own note, and some are such that while they will give their views in writing but later no matter how much dishonest an order the minister gives, they will carry it out. Now, there are many who are annoyed – we have verbally told you to do this, then do it! There is a big problem in this. Those poor officers die a thousand deaths. They understand that the morally wrong thing is being done, but if I provide my opinion there will be immediate transfer, immediate anger. When his conscience has at least the satisfaction I have written my views, it is on the record, he is duty bound whatever the minister orders, whether right or wrong, he does it. But whatever opinion one holds, you cannot write it. How can such an administration run?

SM: *Would you tell us about the people you came in contact with, such as Acharya Narendra Dev*?

CCS: I came in limited contact with him. He was a very good man, though he was never in charge of state administration. He was a scholar and a man of character. These two things are rarely found in one man, he had both. He could not do much as a socialist leader, he actively propagated his ideas. After his death, differences increased so much that if he had lived these differences might not have come about. However, Jayaprakash Narayan was a man of his level, Jayaprakash Narayan could not stop the Socialist movement from disruption and division and sub-division. It is possible that had Narendra Dev been alive he could have stopped this, one cannot say. Please understand I was in Delhi PCC, and had nothing to do with the people of U.P. In the beginning, I was not a person at an age that I could have reached the All India level of PCC and AICC. That's why I didn't have much contact with him.

SM: *But he was in the U.P. assembly*?

CCS: How much did he remain in the U.P. Assembly in front of me, very little, from 1937 to 1939, only for two years. He was elected in 1946, in March 1948 he submitted his resignation. At that time eleven men had resigned. Whenever he spoke, he spoke well, but he spoke less.

SM: *What are your thoughts about Rafi Ahmed Kidwai*?

[1:55:54] CCS: He was a good administrator, also a good organiser, he was also inclined towards the poor man. He wanted to cut down on red-tapism, but the manner he wanted to cut-it down again gave birth to problems. If there's something wrong, you should change the rules so there isn't any delay in work. However, the rules remained exactly as they were, but the officer obeys whatever you say, that I have said there will be electricity provided at such-and-such a place. Suppose the officer says – just taking an example – that those people have not deposited the money and the minister says that the money will come later, you will have to do all this by tomorrow, he will agree – this is

not good for the administration. But he did many things like this, so people said he is a very good man. But I think he did a big disservice – Kidwai Sahib was responsible for indiscipline. In U.P. he used to spread indiscipline against Pant ji. When he left from here, he formed the Jan Congress, of which Triloki Singh was the president. In those days I was running the Zamindari Abolition Scheme there. There was talk of depositing ten times the rent, it was called Bhoomidar Refund. These people openly opposed it. There were other similar matters too. Then, we expelled them. Rafi Sahab was behind all of them. These people had to leave the Congress. Nehru was supporting him from behind the scenes. He could not have done anything without Nehru ji but everything happened. These are all hard facts. Then these same people formed the Kisan Mazdoor Praja Party … to fight Sardar Patel … no to fight Tandon ji as Sardar Patel was no more. First he and then Acharya Kriplani resigned [from the Congress], Acharya did not come back but Rafi Sahab did come. So, gradually indiscipline that grew in the Congress, and I hold Rafi Sahab responsible for this.

In 1952, he had me opposed. I wrote to Nehru ji that Rafi Sahab helped those who are against me. He asked for evidence. I sent some evidence too. Then he kept quiet. What did this mean? So, in this way Nehru ji … Sardar Patel, Pant ji, Tandon ji …. in order to fight with these people....look here, you have become the Prime Minister, no one disputes your authority, Mahatmaji made you, even though Sardar Patel was wanted by the whole working committee except one or two. If you have now become, then take along everyone else. The government was formed later, power came later, and important people started disruptions themselves. Now, what is the fault of the people below.

SM: *Chaudhary ji, tell me something about Purshottam Das Tandon*.

CCS: All of us had great respect for him. Those who had differences with him too respected him enormously. He was not a communalist at all. Tandon ji might not have proven to be a good administrator. Because he used to delay in taking all decisions and a good executive is one who takes decisions quickly. This could have been his

one weakness. He was very successful as Chairman of Allahabad Municipality, this I have heard, I have no personal experience. But I think if he was the Chief Minister or some other minister, there would be no dishonesty at all, there is no doubt about it, but there would have been huge delays in everything. As a speaker, he was class one. A1. We have not had a speaker like him. There maybe someone only after Swaraj, G.V. Mavlankar, maybe, but he was truly a very good orator. His life was sermon of sacrifice. Nehru ji did a lot of injustice with him.

SM: *Ever got a chance to meet Sardar Patel*?

CCS: I met him once or twice.

SM: *Do tell something about Sardar Patel*.

CCS: I don't know much about him except what I had read or saw. I met him only once or twice. Jan Congress was formed here with the inspiration of Rafi Sahab. We expelled twenty-two MLAs from the Legislative Assembly. In those days, I was the General Secretary of the State Congress Party, then the meeting of the Working Committee and the Parliamentary Board was held there. At that time Sardar was there.

SM: *What year was this*?

CCS: This instance is of the 12th or 13th February 1950. There were other leaders like Maulana Azad and others who came, it was then I met Sardar Patel. He asked what are the charges against these people? I had the file. I informed him they had violated this discipline.

SM: *What was his reaction to that*?

CCS: It was as it should have been. He was in agreement with me on everything. I had documentary evidence. So how could anyone disagree with it. One or two tried to defend it …..

SM: *What difference did you find between Pandit ji and Sardar Patel in this regard, because earlier you had told that when some allegations were levelled, Jawaharlal ji did not listen...*?

CCS: Those were not personal charges, they were about policies. Yes, he could not decide. Sardar's mind had extreme clarity about all matters.

SM: *As an administrator, did you see the difference between the two*?

CCS: Yes.

SM: *Sardar was shrewd*?

CCS: Absolutely.

SM: *But it is said that Sardar Patel did not talk much*?

CCS: Yes, he didn't talk much. I was told by Maniben Patel to not talk too much (*chuckles*) I took care to talk less. Prior to this I used to meet him too. Once in 1948 when he was staying in Dehradun. A certain individual had sent a charge against me to the top leadership that he had given a bribe to Charan Singh of 25,000 or 50,000 rupees. The name of a farmer Rajaram was written on it. This village existed in our area, and there was a man too of that name in that village. He wrote that he had given 25,000 rupees. There were politicians behind him too, I don't want to name them now. I didn't have much experience then. I filed a '*nalish*'[12] and was called before either the SDM or the District Magistrate of Meerut. Those who were accused put in an application that this hearing should not be held here, it should be held in another district. Then the case went to the [Magistrate of Saharanpur. When the matter was presented, that farmer said that these are not my signatures, I did not send them. The case would have been dismissed, it was an absolutely false matter.

A copy was also sent to Sardar Patel. I went from Saharanpur to Dehradun to meet Sardar. While in conversation, he asked how I was, so I let him what had happened with me. He said, "Yes indeed a complaint was received." He then asked me – what did you do? So, I said that I filed a legal complaint and that farmer refused to accept it was his signature. I'm talking about his mind …. (*laughing*) … he

[12] Legal complaint

told me you made a mistake; you should have first given him a notice if he had signed the charge against me. He would have refused; you could have put out a statement in the press and would have avoided all this trouble. He was absolutely right. So one comes to know … he was clear headed.

Mountbatten left on June 20, he did not come to Delhi to see-off Mountbatten. When he had left, then he reached Delhi only on 21st or 22nd June. Our Nehru Sahab used to follow his advice, all the matters of Kashmir and Hyderabad were complicated by him. Sardar was against all these things. If Sardar had become the Prime Minister, then the policy of the country…

SM: *Please tell us something about Dr Sampurnanand, what was his role as an administrator and a Hindu Socialist leader*?

CCS: As far as his being a Socialist is concerned, I have already told you he opposed giving rights to the sub-tenants. This was my own, personal experience. I didn't want to give the right of resumption to the old landlords or to the tenants-in-chief, but he was in favour of this also. Whether this has any relation of Socialism or not, the second thing that comes to my mind immediately regarding him is that he had full faith in caste based on birth. I believe that nothing has caused as much damage to the country as the caste system has caused. If our political slavery remained for thousands of years, its main reason was this. We could never put-up a united front against the invader, never throughout history. And crores of people left our religion. Some may have understood the better philosophy and teachings of other religions, but the vast majority were fed up with the injustice. In a way, we pushed them out. This exactly was the result of casteism.

My own view is that 50 percent of casteism is involved in the creation of Pakistan. It used to be in the speech of the leaders of the Muslim League that they do not treat their brethren equally, so when the British leave, how will they treat us, the followers of another religion> All the village panchayats, the municipalities, assemblies, there too caste has become a factor. There is no question of merit. Being an Arya Samaji and even otherwise I have always been against casteism. I tried very

hard that we should take steps to abolish the caste system. This was strongly opposed by Sampurnanand ji. For example, I said inter-caste marriages should be mandatory for candidates for gazetted government posts. Those boys who are not ready for this, they cannot appear as candidates. We should select only from those who agree. Later if he does not carry out his undertaking, he should be automatically deemed to be dismissed. These are small numbers. We have 17,000 gazetted officers, the number of Services is five and a half lakhs. In the 17,000 hardly 100-200 people would annually enter gazetted services, maybe 200-250. Go to the universities and take a look, those educated boys have no objection in inter-caste marriage. Not even the girls. I have written this is the true solution.

In 1954, I wrote three-four letters to Nehru ji … you can read the letter yourself, as this will take time …. I wrote to him that there are three things in a human – hand, heart and head. His physique, heart and brain. When we select a person for a government job, his head is tested, his intellect is also tested, degree minimum, educational qualifications, then there is competition and then a medical certificate that says the chest should be so much, he should not have any disease, the height etc., etc. But what is the test of the heart? Equally important, perhaps more important if possible. That is what reveals his impartiality or partiality, honesty and dishonesty – all this is from the heart. One man is an acknowledged intellectual, he may be dishonest, another man is illiterate, he may be honest. You are giving the responsibility of administration to these people. The biggest flaw in our society from this caste system is that people from different castes will come and if an administrator is not able to treat everyone impartially, he is not fit for the job.

Whatever the situation in other nations, in our country if there is one circumstance that narrows and troubles the heart in our society then it is the caste system. It limits the sympathies of the mind. What is the proof that, on entering the service, he will serve everyone with an equal vision later on? I think the proof of this in our circumstances is the boy says that he is ready marry anyone out of the other 2,377 castes. … there are 2,378 castes in the 1891 census. Maybe 2,500 now.

So …. I said please do this; this is the biggest weakness in our society; this is why the problems of our society have arisen, the nation will never consolidate without this. I said you have power, you are popular with the people, so have an amendment done in the Constitution. I also said that there are three disintegrating forces – religion, language, and caste. Nothing can be done for religion, because of that we have paid the price, the nation was divided. Now language and caste remain. I said that for the State Services make marriage outside the fraternity necessary and for the All-India Services it should be made mandatory to marry in the inter-linguistic group. Suppose the boy is Tamil speaking, he will not marry a Tamil speaking girl; marry a Telugu, Punjabi, or Bengali girl. His is an All-India service, he could get transferred anywhere in the country. I wrote to him that this would bind the country and it would prove to be a huge boon in bringing about integration the country. These are the people who are considered important people in society.

I even wrote to the MLAs that a person who stands for election and marries after that will not be able to marry in his community. But Nehru ji wrote what you say is right, but this is too personal a question. Why is this so personal? Yes, indeed marriage is a private matter, but even today there are restrictions on it. Tell me, can someone marry a 14-year-old girl? We are Hindus sitting here, can we marry a first cousin? Here we get married leaving seven generations from the mother's side and seven generations from the father's side. We have now done this so that there is no mistake in counting the generations, all marry outside the gotra of the mother and the father. If we marry without leaving, then marriage is illegal. What this means is that even today there are restrictions. For 2,500 years this caste system in the biggest bane in our country, why can we not do this? We are not doing this for everyone such that they should marry like this, we are only doing this for those who come forward in order to serve the people. Where do we tell everyone to be a B.A. pass to be a voter or a citizen, but one who wants to enter the PCS he must be a B.A. You may very well be five feet two inches, but if you want to enter the police you must be five feet six inches. Similarly, you may indeed

marry within your home, it doesn't matter to us, if your personal law permits; but if you want to enter public service, then you have to give proof of that. I have notes of what I wrote to Pant ji and everyone else.

SM: *To Sampurnanand ji*?

CCS: I did not write to Sampurnanand ji, he was the education minister. I told him this is very difficult, at the very least do this – where educational institutions have the name of a caste associated with their name, issue orders for them that the government will not provide grant-in-aid to such institutions.

SM: *Like Jat College…*

CCS: …. or Brahmin college or Vaish college. Yes, because this brings the poison of casteism in the minds of children. Even to this Sampurnanand did not agree.

SM: *On the one hand he was a Socialist and on the other side he was doing all this, so how would you reconcile these contradictions*?

CCS: I have written evidence. Only the Almighty know how he did this, ask him only! (*laughs*) There are many such things, how far can I tell you. He was not a good administrator. Pant ji left …

SM: *But after Pant ji's departure, Sampurnanand ji became the Chief Minister, what do you think about that struggle*?

CCS: If Tandon ji had come at that time Tandon ji would have become … what do I say now, Tandon ji was not such a man. We wanted Tandon ji to come, but he never did. If he had come here even a day earlier and said that I agree to become …. the difficulty in front of him would have been that he would not have been a good administrator, but he would have had the intention of doing good. If there were delays, he would have kept a good deputy ….

SM: *I have heard about Sampurnanand ji that he did not know how to take work from bureaucrats or from his juniors*?

CCS: Yes, he didn't know. He did not have a recognition of people. I

worked for the abolition of Zamindari, now I should not be saying this from my own mouth, it was number one in India. Revenue Ministers of other states came here to see the work. Bardoloi .. or what was his name … he was the Revenue Minister then who later became the Chief Minister of Madhya Pradesh, had come to see this work.

SM: *Yes, he used to add Bardoloi with his name*?

CCS: Yes, he came here. I told him that please go and see the work in Sultanpur district where consolidation of land holdings work is underway. He went. The reality was a minister from Madhya Pradesh was come, when he went there news spread that I was coming. Twenty thousand people gathered. Now he was amazed to see this. There the officers told him that news was that our Revenue Minister is coming but you have come it's a very good thing. When he came back, he told me that this was the condition there. I said that whatever I have done, I have carried it to the village, I have created so many schemes, so much work got done, I have ignited the light in every village. I don't want to go into the details of all this … when Pant ji left, Sampurnanand ji asked me to leave the Revenue department. Revenue and Agriculture both. I said I would not leave Revenue, please take Agriculture from me. Someone who had been in the Cabinet for 8 years and he has no idea who had done what? What is Revenue and what is Agriculture? What social revolution did this man bring here? My mind told me that now the government is not going to work well. He didn't know anything about administration. If at that time also asked those who opposed me who should be the Revenue Minister they too would have said that Charan Singh. What used to happen sometimes is that my time ended in the debate, it was 5 pm and I was yet speaking, my adversaries also said that the time should be increased by two hours, we want to listen to Charan Singh. But Sampurnanand ji told me to leave the Revenue. I have spoken for five-five hours in public meetings.

SM: *You had a hold on your subject, right*?

CCS: Now Revenue, which is such a dry subject, I made it such that people didn't want to get up and go from the meetings. Well,

Sampurnanand was okay, a learned man, no doubt about it, he was a good man, but in administration.....

SM: *Chaudhary sahab, here is a personal question – it is generally said that you come from the Jat area and you are only a Jat leader, therefore you have more love and affection for Jats than for other castes. Can you say something about this*?

CCS: This is a very wrong charge on me and there are psychological reasons behind it. The people who bring this charge cannot tell me that I am dishonest, incompetent or I have not done any work. But I have differences, they feel that I do not serve their interest. Now, no one shares his own inadequacies, he does not share these in private life and certainly not in public life. They have to find fault with me, and this charge of casteism in Hindu society is such that others immediately believe without investigation. There is a game behind this. Now let me share some figures with you. For example, it is said that BKD (Bharatiya Kranti Dal) is a Jat party. We have 60 organizations in the cities and in the districts. There are 54 districts, 16 cities – but we did not form institutions in the 10 mountain districts, I was not able to go there. Congress has 70 city and district organizations. 3 from 60 are headed by Jats. They have 29 Brahmins out of 70. I have the most that is 16 Brahmins, 13 Thakurs, 8 Ahirs leave aside the other communities. If there are 3 Jats in 60, then the organization is Jat; and out of 70 there are 29 Brahmins that is not a Brahmin organization.

Now let's take up the second issue – the alliance we had with the Congress had 14 cabinet and state ministers, including me there were 2 Jats. Later when T.N Singh's government was formed, there were 11 ministers in which there were cabinet ministers and state ministers, 1 of them was a Jat, that is, 1 in 11 was a Jat. There were 3 state ministers and cabinet ministers in the Congress ministry, 13 out of 30 were Brahmins but even then they do not favour Brahmins and if 2 out of 14 or 1 in 11 is a Jat then I take the side of Jats. There are three districts in Meerut Division where there is a population of Jats – Meerut, Muzaffarnagar, Bulandshahr. In Meerut 12 percent are Jat, 7 percent Brahmin, 5 percent Rajput, 5 percent Gujjar and 3

percent Tyagi. I was sharing with you yesterday that Tyagi have the least population percentage? 12 percent of Jats were given 2 tickets, including myself, 7 percent Brahmin were given 2, 5 percent Gujar were given 2, 3 percent Tyagi were given 1.

SM: *Was this during the time of the Congress*?

CCS: No, this is all BKD. At that time I didn't even have the power to allocate tickets, even then they were few. Take the case of Muzaffarnagar … 11 percent Jat, 4.5 percent Brahmin, 3.75 percent Gujjar, 3.75 percent Thakur and 1.75 percent Tyagi. The population of the castes in the census of 1931 is as follows: Muzaffarnagar had a population of some 9 lakhs, less than 9 lakhs, and had 96,000 Jat, 41,000 Brahmin, 33,000 Gujjar, 33,000 Rajput and 15,000 Tyagi. 96,000 Jat got 1, 41,000 Brahmins got 1, 33,000 Gujjars got 1, 33,000 Rajput we made 1 MLC, and 15,000 Tyagis got 1. In the Congress, Jats always got 2 tickets. The Brahmins never got a ticket. But I gave 1 ticket to a Jat, 1 to a Brahmin. Let me tell you about two districts. The whole administration is in the hands of Brahmins. I don't have a complaint against Brahmin officers or indeed officers from any caste. It is politicians who bring and fabricate such things in their mind. They are educated people, they know they should not be motivated by caste. Leaving aside a few, I have no complaints against any officers.

I am greatly pained now taking the name of a caste with you, but facts should come before people. 47 percent IPS are Brahmins, from one caste, and 40 percent DySPs and 1/3rd PCS and 1/3rd IAS. They have come, and through selection, I don't grudge it, there can be no complaints about this. But if 2 per cent are Jats and they also are there from before, if any of them becomes a commissioner, collector or if any Jat officer is promoted, then there is a great deal of noise. In 54 districts, an officer was promoted to District Magistrate and I posted him in Etah. I had not even seen his face, he was recommended from below, the Congressman there said only Jats have been recruited. What do they say in the East? The propaganda is we are a party of the Ahirs. Ahir [population] is more or less equal to that of the Brahmins. After the Harijans, the largest community is that of the Brahmins.

Then there are Ahirs, but these poor people are very exploited. They have benefited greatly from the abolition of Zamindari. They have the vote too, though they are yet lacking in education. Now from 1937 to 1967, no Ahir was made a minister. I did. I first made an Ahir a minister in 1967. Ahirs are followed by Thakurs, Thakurs have no complaints, they are doing well everywhere in jobs, in political life. After them come the Kurmis. They also have a very large community, a Kurmi was never made a minister, so I made a Kurmi a minister. An Ansari was made a minister, a Muslim weaver had never become, I made him a deputy minister. Passi are a large community within the Harijans – after Chamar, there are the Passi, a very large community. They are very brave, and poor, I made a Passi a minister. I made a Kewat, a Mallah, a state minister, MA pass Manohar Lal of Kanpur. One Ahir was made Member, Public Service Commission. They had never been made. Now, it is said that I am increasing casteism! Now, if there is a monopoly of two or three castes everywhere, in public life and administration, tell me is this a democracy? Simply justice is being done to them. If there are deserving people, they shouldn't get a chance? That's why I am facing this charge.

I have shared with you earlier that I had written a letter to Jawaharlal ji that this is the only way to eradicate caste and he did not agree. A lighter action not to give a grant to educational institutions who have the name of a caste in their name, no Congress leader was ready. Not one Chief Minister agreed. Pant ji didn't agree, Sampurnanand Ji didn't agree, CB Gupta ji didn't agree, none agreed. When I became the Chief Minister on 3rd April 1967 of the SVD government, the first thing I did was to hold a cabinet meeting on 6th April. I had already told the Chief Secretary to bring a note on the subject that we want to remove the name of the caste from the names of educational institutions. He presented the note, and the first thing we did is declare that the government would not give financial assistance to the institutions which do not remove the name of the caste by June 30, 1967. The outcome was everyone changed their name. The person who has held this attitude, and who people have opposed all along, a man with this attitude is caste-activated and is caste-

inspired and those who indulge in all kinds of casteism in politics and administration that I have already shared with you, they put this charge … I do not understand it, what should I do? These people are punishing people in the name of caste … revert, transfer, being upset, not giving promotions. Now it has also come to pass that even if a Jat is the smallest of officials is associated with the BKD, hence he gets transferred soon or an enquiry is ordered. Now I can claim this that I should be told if I have even so much as transferred any officer in the name of caste. Meerut is the largest district. There are 2 sub-inspector Jats in my tehsil, 3 sub-inspectors are Brahmin, there are 5 police stations in total, about these 3 a man told me that all 3 are Brahmins, 1 is in Khekhra, 1 is in Baghpat, 1 is in Baraut. I asked how they are doing; I was told they are doing well. I said let them stay there. Now amongst the educated in the Jats, a feeling has come about them that we are being destroyed because of Chaudhary Sahab. They are looked down upon, they do not get promoted, they are being punished. Officers say this openly.

Let me share with you an instance about a District Magistrate, this was told to me by a Congressman, a Jat and was seeking a ticket for a MP from the Congress which he did not get. He is yet a Congressman of integrity. He told me about a Naib Tehsildar of a Tehsil who was transferred. The Tehsildar was happy with that Naib Tehsildar and the people there were also very happy, but some Congressmen got him transferred. I don't remember now who got him transferred, but that Congressman told me that he tried to stop the transfer. Order had been issued. The commissioner transfers the Naib Tehsildars from one district to another, then he went to the commissioner, the commissioner stopped the order, he said that the Naib Tehsildar would be re-posted at the same place. But the District Magistrate did not agree. He went to the District Magistrate and he wrote the name of so-and-so the President of the Congress Mandal Committee. He went there, told them that the commissioner sahib has cancelled the transfer, why haven't you posted him? He said that it is the area of Jats and he is a Jat. He told me this in front of many other, about a month back. He said if he is Jat what is the problem. If this is the

law then it's fine, apply it everywhere. When the work of that Naib Tehsildar is good, he does it with honesty, he does not discriminate against anyone, it has been only a little time since he has been posted here, but he did not listen. He said, I was arguing for the sake of it he is a Yadav Ahir, he does not add Yadav with his name. He said that's the same thing. After much insistence, he said that I am doing your work only. You are a Congressmen, Congress people want that Jats, Ahirs should be punished, or they should not be treated equally or with justice. He came away. He didn't post that man there, finally he was transferred to the city. This is the situation. There are a thousand such examples. They are doing this for me because I have only served them … If you can spare two days then come to Azamgarh with me, there is not a single Jat there, but you will see how masses react. How they will come in the thousands, fifty-fifty thousand numbers. I am not in power, and I have nothing to offer to them. There is injustice being done to them. I can't help and there isn't even a single Jat. So, for what reasons is the public with me from either here or there, it is with me for many reasons I do not want to speculate any further.

चौधरी चरण सिंह का साक्षात्कार

लखनऊ १० फरवरी १९७२

यह ऐतिहासिक साक्षात्कार नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी (NMML), दिल्ली के दूरदर्शी मौखिक इतिहास कार्यक्रम की बदौलत उपलब्ध है। चौधरी चरण सिंह अपने प्रारंभिक जीवन और स्वामी दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी के चरित्र और कार्यक्रमों के स्थायी प्रभावों की यादें साझा करते हैं; 1930 से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ उनका लंबा और गहरा जुड़ाव रहा जब उन्होंने पहली बार मेरठ जिला कांग्रेस कमेटी का नेतृत्व किया; औपनिवेशिक ब्रिटेन से आजादी के लिए लंबे अहिंसक संघर्ष में उनकी भागीदारी, जिसमें उनकी कई अवधियों की कैद भी शामिल हैं; 1930 के दशक में गाजियाबाद में एक युवा वकील के रूप में उनका कार्यकाल; 1947 में आजादी के तुरंत बाद कांग्रेसियों के चरित्र और नैतिकता के पतन पर उनके विचार; उत्तर प्रदेश में प्रशासन की खराब स्थिति; सरकार में उनका अनुभव और जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल और गोविंद बल्लभ पंत सहित राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक नेताओं के बारे में उनकी यादें।

This historical interview is available to us thanks to the far-sighted Oral History program of the Nehru Memorial Museum and Library (NMML), Delhi. Chaudhary Charan Singh shares memories of his early life and the abiding influences of the character and programs of Swami Dayanand Saraswati and Mahatma Gandhi; his long and deep association with the Indian National Congress since 1930 when he first headed the Meerut District Congress Committee; his participation in the long non-violent struggle for freedom from colonial Britain including his multiple periods of incarceration; his career as a young lawyer in Ghaziabad in the 1930s; his views on the downfall of the character and morality of Congressmen soon after Independence in 1947; the poor state of the administration in Uttar Pradesh; his experience in government and his recollections of national and regional political leaders including Jawaharlal Nehru, Vallabhbhai Patel and Govind Ballabh Pant.

Charan Singh Archives
www.charansingh.org

ISBN 978-81-962625-2-5
9 788196 262525
Price ₹299